04 - जम्मू-कश्मीर : विपक्ष को मत, सरकार को मात

05 - ऑफिस में काम या जिम्मेदारी के नाम पर प्रेशर

A Daily News Magazine

भोपाल

शुक्रवार, 11 अक्टूबर, 2024

06 - बढ़ रहे एनीमिया के मरीज, खानपान-पौष्टिक आहार पर ध्यान न देना...

07- इंदौर में तेज बारिश, रावण के पुतले भीगे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-44 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

प्रसंगवश

हरियाणा में जीतती हुई बाजी भी कैसे हार गई कांग्रेस?

अरविंद मोहन

दो राज्यों के चुनाव को कांग्रेस के भविष्य के साथ नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी के राजनैतिक भविष्य के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा था। लोकसभा चुनाव ने देश की राजनीति में बदलाव की शुरुआत की थी और उसके परिणामों ने मोदी-शाह के हावभाव और शैली को बदल दिया था-संसद और सरकार का स्वरूप तो बदल ही गया था। कहना न होगा कि हरियाणा और जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के नतीजों ने बदलाव की यह प्रक्रिया थामी ही नहीं, उलटी है और संभव है कि कांग्रेस और विपक्ष की परेशानियां बढ़ती जाएं। जल्दी ही महराष्ट्र और झारखंड विधानसभा के चुनाव होने हैं और एक राष्ट्र एक चुनाव जैसे कई बड़े फैसले होने हैं। इस बीच काफी मामलों में सरकार ने अपने बढ़े हुए कदम रोके थे या उसके सहयोगी दलों ने उसे क़दम वापस खींचने पर मजबूर किया था। अगर आगे के कुछ और चुनाव में भाजपा इसी तरह का प्रदर्शन करती है तो मोदी जी को अपने पुराने रंग-ढंग में लौटने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा। अपने फ़ैसलों और कार्यकाल, दोनों से वे रिकॉर्ड बनाने की तरफ़ बढ़ेंगे।

और मात्र तीन- साढ़े तीन महीने की साढ़े साती काटकर उनका यह रूपांतरण महत्वपूर्ण होगा। लोकसभा के नतीजों का असर पूरी राजनीति पर हुआ और भाजपा या मोदी-शाह तो इसके केंद्र में ही थे। और इसका प्रभाव विधानसभा चुनाव पर भी हुआ। सबसे पहले तो महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव हरियाणा के साथ न कराके आगे के लिए टाले गए। जम्मू कश्मीर चुनाव अदालती आदेश के अनुसार हुए लेकिन भाजपा ने एक तरह से मैदान छोड़ दिया था-खासकर घाटी के इलाकों में। उसने बातों से कुछ हवाई किले बनाए, कुछ डमी उम्मीदवारों पर दांव लगाती लगी लेकिन उसने जम्मू में जोर लगाया जहां परिसीमन के बाद सीटें बढ़ गई थीं। एक दांव पाँच सदस्यों के मनोनयन का भी रखा गया।

हरियाणा में भी पहले चुनाव आगे बढ़वाए गए, फिर टिकट को लेकर सिर फुटव्वल हुआ। मुख्यमंत्री पद का दावा करने वाले निकल आए। मुख्यमंत्री पद से हटाए गए मनोहरलाल खट्टर का प्रभाव बना रहा और वे मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का चुनाव क्षेत्र बदलवाने के लिए जिम्मेवार माने गए। भाजपाई चुनाव प्रचार और नेताओं के हावभाव बुझे-बुझे थे। दूसरी ओर किसान, जवान और पहलवान का नाम ले लेकर कांग्रेस एकदम आक्रामक रही और आखिरी दिन भी उसने अशोक तंवर का दल बदल कराके भाजपा को झटका दिया। भाजपाई सन्नाटा एग्ज़िट पोल के नतीजे आने तक ही नहीं मतगणना के पहले दो घंटों तक पसरा रहा।

पर एक बार भाजपा ने लीड लेनी शुरू की तो सारे राजनैतिक पंडित भौंचक्का रह गए और जलेबी या जलेबा बांटना शुरू कर चुके कांग्रेसियों को सांप सूंघ गया। फिर उसके प्रवक्ताओं ने चुनाव आयोग की तरफ़ ऊँगली उठानी शुरू की। लेकिन जल्दी ही राहुल गांधी, भूपिंदर सिंह हुड्डा, कुमारी शैलजा और रणजीत सुरजेवाला जैसे प्रमुख लोगों की कार्यशैली पर सवाल उठने लगा और सबको यह लगा कि भाजपाई सोशल इंजीनियरिंग ज्यादा कारगर रही। भाजपा ने गैर-जाट ओबीसी की जिस राजनीति को चुनाव के पहले शुरू किया वह जाट प्रधानता वाली कांग्रेसी नीति से बेहतर साबित हुई। कांग्रेस को मुसलमान वोट मिला लेकिन दलित वोट बिखरा। इसका एक कारण कुमारी शैलजा का मुंह फुलाना था तो दूसरा कारण डेरा सच्चा सौदा के विवादास्पद बाबा राम रहीम की सेवाएं थीं।

शैलजा और सुरजेवाला जैसे सीनियर नेताओं का व्यवहार अनुचित था तो पूरे प्रदेश के सारे फ़ैसले का अधिकार एकदम से हुड्डा को सौंपना भी दोषपूर्ण था। हाई कमान ने इन दोनों बातों का ध्यान न रखा। कहा जाता है कि नब्बे में से बहत्तर उम्मीदवार हुड्डा खेमे के थे। हुड्डा जी का अतिआत्मविश्वास देर तक झलकता भी रहा, पर उससे खास नफा होने की जगह नुक़सान हो गया।

हरियाणा में तो कांग्रेस किसी हुड्डा, किसी शैलजा, किसी सुरजेवाला को दोषी मान भी सकती है लेकिन जम्मू-कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस का साथ होने के बावजूद उसका प्रदर्शन दयनीय रहा।

राहुल गांधी और प्रियंका ने चुनाव प्रचार में इतना कम समय क्यों दिया और जीत के प्रति इतना आश्वस्त कैसे हो गए, यह सफाई तो वही देंगे लेकिन उनके इस रवैये से नुकसान हुआ। कश्मीर घाटी में भाजपा का खाता न खुलना या धारा 370 की समाप्ति पर वहां के मतदाताओं का अंतिम फैसला भाजपा के खिलाफ जाना निश्चित रूप से मोदी जी की कार्यशैली पर सवाल खड़े करता है, लेकिन भाजपा ने अब तक का अपना सबसे सफल चुनावी प्रदर्शन किया है। उसका वोट प्रतिशत भी बढ़ा है। सबसे ज्यादा नुकसान महबूबा मुफ्ती की पार्टी पीडीपी को हुआ है। दूसरी ओर इंजीनियर राशिद और लोन जैसे लोग कागजी शेर ही साबित हुए। गुलाम नबी आजाद की राजनीति भी चुनाव के पहले ही दम तोड़ती दिखी, पर उनके बाहर जाने से कांग्रेस भी घाटे में रही।

अब हरियाणा सरकार चलाने का सवाल तो कोई विशेष नहीं है लेकिन जम्मू-कश्मीर का मसला काफी सावधानी की मांग करेगा। उमर अब्दुल्ला और उनके पिता फारूक अब्दुल्ला अभी तक तो काफी गंभीरता बनाए हुए हैं लेकिन केंद्रशासित प्रदेश की जगह पूर्ण राज्य का दर्जा पाना एक बड़ा सवाल बनेगा। और बाप-बेटे की जोड़ी तो अनुच्छेद 370 की बहाली की बात भी करती रही है। दूसरी ओर भाजपा का पुराना डिस्कोर्स अनुच्छेद 370 की समाप्ति से एक मुकाम तक पहुंचा है लेकिन बिना राजनैतिक नतीजों के। अब इस सवाल पर कश्मीरी समाज की राय जगजाहिर होने के बाद भाजपा की केंद्र सरकार क्या करेगी उस पर सबकी नजर होगी। पर वह चीज थोड़ा समय लेकर सामने आएगी। अभी तुरंत तो नरेंद्र मोदी और अमित शाह के चेहरों पर चमक और रौनक वापस आती दिख रही है। इन परिणामों से उनका कद भाजपा और एनडीए के अंदर (जबकि चुनाव में पहले की तरह उनके चेहरे की प्रधानता न थी) ही नहीं, देश की राजनीति में बढ़ गया है। उन्होंने सचमुच हारती दिख रही बाजी जीती है और उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी राहुल और कांग्रेस ने जीती हुई बाजी गंवाई है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

अलविदा टाटा! आखिरी सफर पर भारत का 'रतन'

श्रद्धांजलि देने वालों का लगा रहा तांता, शाह, अंबानी, बिड़ला सभी पहुंचे

बुधवार रात 86 साल की उम्र में हुआ निधन, राजकीय सम्मान से विदाई

मुंबई (एजेंसी)। टाटा संस के मानद चेयरमैन रतन नवल टाटा का 86 साल की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने बुधवार देर रात करीब 11 बजे अंतिम सांस ली। वे मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल की इंटेंसिव केयर यूनिट में एडमिट थे और उम्र संबंधी बीमारियों से जूझ रहे थे। टाटा का पार्थिव शरीर नरीमन पॉइंट स्थित नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया था। यहां से उनकी अंतिम यात्रा वर्ली श्मशान घाट के लिए रवाना हुई। यहां राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल, मुकेश अंबानी और कुमार मंगलम बिड़ला समेत राजनीति, खेल और बिजनेस से जुड़ी कई हस्तियों ने टाटा को श्रद्धांजलि दी। अमिताभ बच्चन ने लिखा कि एक युग का अंत हो गया।

बचपन में माता-पिता अलग हुए, दादी ने की परवरिश

पद्म भूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित रतन टाटा की अगुआई में ही टाटा ग्रुप ने देश की सबसे सस्ती कार लॉन्च की। बिजनेस में बेहद कामयाब रतन टाटा निजी जिंदगी में बेहद सादगी पसंद थे और मुंबई में अपने छोटे से फ्लैट में रहते थे। 28 दिसंबर 1937 को नवल और सूनू टाटा के घर जन्मे रतन टाटा ग्रुप के फाउंडर जमशेदजी टाटा के परपोते थे। उनका परिवार पारसी धर्म से है। उनके माता पिता बचपन में ही अलग हो गए थे और दादी ने उनकी परवरिश की थी।

शोक जताया

- **टाटा चेयरमैन एन चंद्रशेखरन:** हम अत्यंत दुख के साथ रतन टाटा को विदाई दे रहे हैं। समूह के लिए टाटा एक चेयरपर्सन से कहीं ज्यादा थे।
- **राष्ट्रपति मुर्मू:** भारत ने एक ऐसे आइकॉन को खो दिया है, जिन्होंने कॉर्पोरेट ग्रोथ, राष्ट्र निर्माण और नैतिकता के साथ उत्कृष्टता का मिश्रण किया। पद्म विभूषण और पद्म भूषण से सम्मानित रतन टाटा ने टाटा ग्रुप की विरासत को आगे बढ़ाया है।
- **पीएम नरेंद्र मोदी:** टाटा एक दूरदर्शी बिजनेस लीडर, दयालु आत्मा और एक असाधारण इंसान थे। उन्होंने भारत के सबसे पुराने और सबसे प्रतिष्ठित व्यापारिक घरानों में से एक टाटा ग्रुप को स्थिर नेतृत्व प्रदान किया।
- **राहुल गांधी:** रतन टाटा दूरदृष्टि वाले व्यक्ति थे। उन्होंने बिजनेस और परोपकार दोनों पर कभी न मिटने वाली छाप छोड़ी है। टाटा कम्युनिटी के प्रति मेरी संवेदनाएं हैं।

देश में अब हर युवा पैदा करें दो बच्चे

- अब सीएम चंद्रबाबू नायडू को आई आबादी बढ़ाने की याद
- आंध्र सीएम बोले-पूरे भारत में बढ़ती उम्र बन रही है समस्या

हैदराबाद (एजेंसी)। आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने कहा है कि देश में लोगों के कम से कम दो बच्चे होने चाहिए। एक अंग्रेजी अखबार से बातचीत में चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि आंध्र समेत पूरे भारत में बढ़ती उम्र समस्या बन रही है। चीन, जापान और यूरोप भी इस समस्या से जूझ रहे हैं। साउथ इंडिया में जन्म दर 1.6 है, जो कम से कम 2.1 होना चाहिए। सभी को दो बच्चे होने चाहिए, इससे भारत को सैकड़ों वर्षों तक ग्लोबल लीडर बने रहने में मदद मिलेगी। नायडू ने कहा कि 90 के दशक में जनसंख्या नियंत्रण को बढ़ाया गया, लेकिन मैं पॉपुलेशन मैनेजमेंट को बढ़ावा दे रहा हूं। उन्होंने कहा कि अब ऐसे नियम बनने चाहिए कि दो बच्चों कम होने पर स्थानीय निकाय के चुनाव नहीं लड़ सकते। चंद्रबाबू नायडू ने तीन महीने पहले बड़ी जीत के बाद शपथ ली थी, मगर वह अभी तक बजट पेश नहीं कर पाए। केंद्र सरकार ने अपने बजट में आंध्र प्रदेश को विशेष पैकेज देने का ऐलान किया था। नायडू ने बताया कि चौथी बार सीएम बनने पर उन्हें पहले के मुकाबले ज्यादा चुनौतियों से जूझना पड़ रहा है।

सुप्रभात

चेहरे पर अंकित
पंक्तिबद्ध झुर्रियों पर लिखी
इबारत पढ़ी है तुमने !
बच्चों की तरह एक एक झुर्री पर
तर्जनी रख,पढ़ना उन्हें
दो झुर्रियों के बीच ठहरे
पसीने से तुम्हारी उँगली
नम हो जायेगी
उस नमी से ही तुम समझोगे
कविता के साथ,जीवन में
मौन होने का अर्थ
उम्रदराज होना पर्याप्त नहीं
जरूरी है
उस मौन को बचाये रखना।

– अरुण सातले

सीएम आवास से निकाले गए सामान के बीच बैठीं आतिशी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सीएम आवास से बाहर निकाले जाने के एक दिन बाद आतिशी अपने निजी आवास में सीएम ऑफिस का काम करती नजर आईं। दिल्ली मुख्यमंत्री ऑफिस की तरफ से इसका वीडियो भी शेयर किया गया। इसमें देखा जा सकता है कि आतिशी सीएम आवास से निकाले गए सामान के बीच बैठी हैं। इस दौरान उन्होंने एक फाइल पर साइन भी किए। सीएम आवास को लेकर विवाद तब बढ़ गया, जब 9 अक्टूबर को पीडब्ल्यूडी ने सिविल लाइंस में फ्लैगस्टाफ रोड पर बंगला नंबर 6 को सील कर दिया। इस बंगले में सीएम आतिशी 7 अक्टूबर को रहने आईं थीं। तीन दिन बाद उनसे बंगला खाली करा लिया गया। दिल्ली एलजी ऑफिस के मुताबिक, यह बंगला मुख्यमंत्री का घर नहीं है और इसे किसी को भी आवंटित किया जा सकता है।

आसियान समिट के लिए कम्युनिस्ट देश लाओस पहुंचे पीएम मोदी

- बौद्ध भिक्षुओं ने किया स्वागत, भारतीय समुदाय के साथ लाओस की रामायण देखी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इंडिया-आसियान समिट में शामिल होने के लिए 2 दिन के दौरे पर गुरुवार को कम्युनिस्ट देश लाओस पहुंचे। यहां बौद्ध भिक्षुओं ने उनका स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी ने लाओस की राजधानी वियनतियाने में लाओस की रामायण भी देखी। पीएम मोदी लाओस में 10 वीं बार इंडिया-आसियान समिट में शामिल होंगे। विदेश मंत्रालय के मुताबिक इस दौरान पीएम मोदी आसियान देशों के कई नेताओं के साथ द्विपक्षीय बातचीत भी करेंगे। लाओस के प्रधानमंत्री सोनेक्से सिफानडोन ने पीएम मोदी को न्योता दिया था। लाओस इस साल इंडिया-आसियान समिट और ईस्ट एशिया शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। मोदी सरकार की एक्ट ईस्ट पॉलिसी के 10 साल पूरे इस साल मोदी सरकारी की एक्ट ईस्ट पॉलिसी के 10 साल पूरे हो रहे हैं। इस लिहाज से भी ये दौरा बेहद अहम हो जाता है। एक्ट ईस्ट पॉलिसी' भारत का अहम हिस्सा है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में

ई-रजिस्ट्री और ई-पंजीयन के नवीन पोर्टल संपदा-2.0 लॉन्च किया

भोपाल (नप्र)। गुरुवार दोपहर कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कनवेंशन सेंटर में रखे गए कार्यक्रम में सीएम डॉ. मोहन यादव ने संपदा -2.0 सॉफ्टवेयर का शुभारंभ किया। सीएम ने ये दावा भी किया कि मध्यप्रदेश अब देश का पहला राज्य बन गया है जहां बिना रजिस्ट्रार दफ्तर के चक्कर लगाए घर बैठे आसानी से जमीन और मकान की रजिस्ट्री कराई जा सकती है। इतना ही नहीं प्रॉपर्टी पर कितना लोन बकाया है इसे भी चेक किया जा सकता है। इसके साथ ही प्रॉपर्टी की पहचान कस्टोडियन डिपार्टमेंट से कराई जा सकेगी। देश ही नहीं विदेश में बैठे लोगों को भी इसका डेमो दिया गया और उन्होंने प्रक्रिया की सरलता पर खुशी जताई।

यह बात मप्र के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने जमीन की पैमाइश, रजिस्ट्री, नामांतरण जैसी प्रक्रियाओं में गड़बड़ी को लेकर कई बार कही और आखिरकार गुरुवार को इसके समाधान के लिए नई व्यवस्था लॉन्च कर दी। इस सॉफ्टवेयर से प्रदेश के सभी जिलों को कनेक्ट किया गया है। रजिस्ट्री और प्रॉपर्टी खरीदने के लिए रजिस्ट्रार के दफ्तर जाने की जरूरत नहीं होगी। घर बैठे ई पंजीयन कर सकेंगे। ई साइन और डिजिटल सिग्नेचर के माध्यम से प्रोसेस पूरा हो जाएगा। केवाईसी की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन हो सकेगी। जमीन या मकान की जियो टैगिंग होगी। पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन होगी इससे न सिर्फ लोगों के पैसे की बचत होगी बल्कि समय भी बचेगा।

एग्रीमेंट और पावर ऑफ अटर्नी कराने वालों से सीएम ने की बात

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से एग्रीमेंट, पावर ऑफ अटर्नी करने वाले लोगों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि पहले विदेश में टेक्नोलॉजी विकसित होती थी और भारत में वर्षों बाद पहुंचती थी। भारत में यह व्यवस्था पहले लागू हो रही है और मध्य प्रदेश देश भर में उदाहरण बन रहा है। हांगकांग से सुरेंद्र चंद्रावत से सीएम ने बातचीत की, जिनकी लॉ फर्म है। सीएम ने चंद्रावत से पूछा कि आपकी प्रॉपर्टी इंडिया में है तो इसका इनकम टैक्स आप इंडिया में शो करेंगे या हांगकांग में? इस पर चंद्रावत ने बताया कि प्रॉपर्टी इंडिया में है तो इंडिया में शो होगी। अगर हांगकांग में होती तो वहां पर शो की जाती। इसके अलावा मुख्यमंत्री ने दिल्ली में बैठी डॉ.शक्ति मलिक और उनके पति से बातचीत की, जिन्हें घर में बैठकर यह सुविधा मिली और भोपाल नहीं आना पड़ा।

पीएम मोदी की प्रेरणा से विकसित हो रहा एमपी: डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह 10 साल प्रधानमंत्री रहे, वित्त मंत्री रहे और गवर्नर भी रहे, लेकिन वे भी ऐसी तकनीक नहीं विकसित कर पाए जैसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित कर दी। पीएम मोदी ने जीरो बजट से देश के गरीब लोगों की परेशानियों को ध्यान रखा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब जो व्यवस्था शुरू हुई है, उसमें नामांतरण के साथ बटांकन की प्रक्रिया भी शुरू हो रही है। इसके लिए अलग आवेदन नहीं करना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप कितने भी पढ़े लिखे हो, लेकिन यहां आने पर अंगूठा ही लगाना पड़ता है। अब तकनीक के दौर में सभी चीजों को डेवलप करना जरूरी भी है।

इस अवसर पर मंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा कि दस्तावेजों के ऑनलाइन पंजीयन की कार्रवाई 9 साल से चल रही है। इसमें सुधार की काफी गुंजाइश थी। इसलिए संपदा 2.0 लागू किया गया है। डिंडौरी, रतलाम गुना, हरदा में यह व्यवस्था लागू है और आज से पूरे प्रदेश में लागू हो गई है। मध्य प्रदेश देश का पहला प्रदेश है, जहां यह व्यवस्था लागू हो रही है। इसके लिए पूरी विभागीय टीम को बधाई है। पहले राजस्व और वित्त से इंटीग्रेशन था। लेकिन अब इसको जीएसटी, नगरीय विकास विभाग, आयकर विभाग, पंचायत विभाग तथा आधार से भी इसको इंटीग्रेटेड किया गया है। इस व्यवस्था में व्यक्ति खुद अपना स्लॉट बुक कर सकता है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 36.3 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 11 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

नौवमी मां सिद्धिदात्री

मां सिद्धिदात्री आपको जीवन में अद्भुत सिद्धि, क्षमता प्रदान करती है ताकि आप सब कुछ पूर्णता के साथ कर सकें। सिद्धि का क्याअर्थ है। सिद्धि, सम्पूर्णता का अर्थ है विचार आने से पूर्व ही काम का हो जाना। आपके विचारमात्र, से ही, बिना किसी कार्य किये आपकी इच्छा का पूर्ण हो जाना यही सिद्धि है।

गर्व की बात

हम भारतीय जिस तरीके से खाते हैं,वो धरती के लिए सबसे अच्छा !

● डब्ल्यूडब्ल्यूएफ की लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट में भारतीयों के खाने-पीने के तरीके की तारीफ ● जी-20 देशों में भारत के खान-पान के तरीके को बताया धरती के लिए सबसे अच्छा

नई दिल्ली (एजेंसी)। हर देश का खान-पान अलग होता है। उन्हें तैयार करने का तरीका अलग होता है। लेकिन अगर कोई पूछे कि दुनिया में खान-पान का सबसे अच्छा तरीका किस देश का है तो आप बेहिचक भारत का नाम ले सकते हैं। ये हम नहीं कह रहे बल्कि वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फंड की रिपोर्ट कह रही। हम भारतीय जिस तरीके से खाते हैं, वह धरती के लिए सबसे अच्छा है। क्लाइमेट चेंज के लिहाज से सबसे अच्छा है। मन में सवाल आ सकता है कि खाने-पीने के तरीके का आखिर धरती की सेहत से क्या संबंध हो सकता है। क्लाइमेट चेंज से क्या संबंध हो सकता है तो इसका जवाब छिपा है इसमें कि आप खा-पी क्या रहे हैं, उन्हें तैयार कैसे कर रहे हैं। खाना तैयार करने में ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कितना होता है, इससे तय होता है कि धरती की सेहत के लिहाज से वह ठीक है या नहीं। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ ने अपनी 'लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट' में भारत के खाने के तरीके

को सराहा है। रिपोर्ट कहती है कि बड़ी अर्थव्यवस्थाओं (जी 20 देशों) में भारत का खानपान सबसे ज्यादा सही है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि अगर 2050 तक दुनिया के सभी देश भारत के खाने के तरीके को अपना लें, तो पर्यावरण को सबसे कम नुकसान होगा। रिपोर्ट के मुताबिक, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका का खानपान सबसे खराब है। रिपोर्ट के मुताबिक, अगर 2050 तक दुनिया का हर व्यक्ति मौजूदा बड़ी अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों के खानपान को अपना ले, तो खाने से होने वाले ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के कारण दुनिया का तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से 263 प्रतिशत ज्यादा बढ़ जाएगा। इतना ही नहीं, हमें अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए एक पृथ्वी की जगह सात पृथ्वियों की जरूरत होगी। रिपोर्ट में भारत के मिलेट मिशन की भी तारीफ की गई है। रिपोर्ट में बताया गया है कि अगर 2050 तक दुनिया के सभी देश भारत के खाने के तरीके को अपना लें, तो हमें अपनी खाने की जरूरतें पूरी करने के लिए एक से भी कम (0.84) धरती की जरूरत होगी। भारत में खाने की वजह से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन इतना कम है कि दुनिया का तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा नहीं बढ़ेगा।

भारत में बनेंगी दो न्यूक्लियर सबमरीन,बढ़ेगी ताकत

40 हजार करोड़ के प्रोजेक्ट को मोदी सरकार की मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। मोदी सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। केंद्र की कैबिनेट कमेटी और सिक्योरिटी ने दो स्वदेशी न्यूक्लियर पनडुब्बियों को बनाने की इजाजत दे दी है। इनका निर्माण विशाखापट्टनम के शिप बिल्डिंग सेंटर में किया जाएगा। सूत्रों का कहना है कि इन्हें बनाने में निजी कंपनियों की भी मदद ली जा सकती है। अरिहंत क्लास से यह पनडुब्बियां अलग होंगी। एडवांस्ड टेक्नोलॉजी वेसल प्रोजेक्ट के तहत बनने वाली इन पनडुब्बियों के निर्माण के बाद हिंद महासागर क्षेत्र और

दक्षिण चीन सागर में नौसेना की ताकत अधिक हो जाएगी। पहले चरण में दो पनडुब्बियों का निर्माण किया जा रहा है। यह सौदा लंबे समय से लटका हुआ था और भारतीय नौसेना इस पर जोर दे रही थी क्योंकि यह भारत की अंडरवॉटर रक्षा क्षमता की कमी दूर करने के लिए महत्वपूर्ण जरूरत थी। जानकारी के मुताबिक दो पनडुब्बियों का निर्माण होने के बाद 4 और पनडुब्बियों का निर्माण किया जा सकेगा। इसके अलावा अगले कुछ साल में नौसेना की ताकत में और इजाफा होन जा रहा है। कई युद्धपोत और सबमरीन नौसेना में शामिल होने वाले हैं। इसी साल दिसंबर में आईएनएस विशाखापट्टनम को शामिल किया जा सकता है।

मेपकास्ट में पश्चिमी क्षेत्र के 25 पीजीटी भौतिकी शिक्षकों के लिए स्टेम आधारित प्रशिक्षण का आयोजन

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी) के क्रिएटिव लर्निंग सेंटर, द्वारा भारत के पश्चिमी क्षेत्र के 25 पीजीटी भौतिकी शिक्षकों के एक समूह हेतु विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी, गणित एवं नवाचार आधारित स्टेम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया । ये शिक्षक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल द्वारा आयोजित 'माध्यमिक स्तर-भौतिकी में शैक्षिक किटों के उपयोग पर पश्चिमी क्षेत्र के केआरपी के प्रशिक्षण' में भाग ले रहे हैं। दोपहर 1:30 बजे से शाम 5:30 बजे तक अपनी यात्रा के दौरान शिक्षकों द्वारा एसटीईएम शिक्षा पर व्यावहारिक सत्र और क्रिएटिव लर्निंग सेंटर में विकसित विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार आधारित नवीन मॉडल और प्रदर्शनों की एक कार्यशाला का अनुभव किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य भौतिकी शिक्षकों को एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) शिक्षा के व्यावहारिक पहलुओं से परिचित कराना था। इसमें 'इलेक्ट्रोमैग्नेटिक इंडक्शन', सतारा-2 से आवाज़ बनाना, न्यूटन के नियमों पर आधारित खिलौने और गणित व विज्ञान के बेसिक फंडामेंटल पर आधारित मॉडल शामिल थे। इस दौरान शिक्षकों और बच्चों में रचनात्मक सोच विकसित करने पर जोर दिया गया। कार्यशाला में विभिन्न गतिविधियों के तहत न्यूज़पेपर से टोपी बनाना, कहानियों को शिक्षा से जोड़ना और वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरल और मनोरंजक तरीके से समझाने का प्रयास किया गया। इसके साथ ही, एक विशेष डेमोंस्ट्रेशन में रिमोट कंट्रोल से संचालित एयरक्राफ्ट का भी प्रदर्शन किया गया, जिसने शिक्षकों में खासा उत्साह भरा।

इस कार्यक्रम की शुरुआत एमपीसीएसटी के महानिदेशक डॉ. अनिल कोठारी के साथ शिक्षकों के इंटरेक्शन से हुई। वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राजेश शर्मा ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और अपने ज्ञान और अनुभव को साझा किया। यह सत्र विज्ञान और शिक्षा में नवाचार को बढ़ावा देने के एमपीसीएसटी के निरंतर प्रयासों का हिस्सा है। एसटीईएम शिक्षा में रचनात्मकता को जोड़ने के इस प्रयास ने शिक्षकों को नई प्रेरणा और शिक्षण पद्धतियों में नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया। प्रेस को भी इस सत्र में शामिल होने का अवसर प्रदान किया गया, जहां उन्होंने शिक्षकों और वैज्ञानिकों के बीच हुए संवाद और प्रदर्शन का अनुभव किया। इस अवसर पर मेपकास्ट के वैज्ञानिक, सलाहकार एवं के अधिकारी उपस्थित थे।

एक देश एक चुनाव के फैसले के खिलाफ केरल

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल विधानसभा में देश में एक साथ चुनाव कराने के केन्द्र के फैसले के खिलाफ प्रस्ताव पारित हो गया है। गुरुवार को सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें केंद्र सरकार से रामनाथ कोविंद पैनल द्वारा सुझाए गए 'एक देश, एक चुनाव' के प्रस्ताव को मंजूरी देने के अपने फैसले को वापस लेने की अपील की गई है। इस दौरान केरल विधानसभा में यह भी कहा गया कि यह कदम अलोकतांत्रिक और असंवैधानिक है। मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन

की ओर से राज्य के संसदीय कार्य मंत्री एमबी राजेश ने प्रस्ताव पेश किया जिन्होंने कहा कि यह प्रस्ताव देश की संघीय व्यवस्था को कमजोर करेगा और भारत के संसदीय लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाएगा। एमबी राजेश ने कहा,यह कदम असंवैधानिक है और संवैधानिक मूल्यों के खिलाफ है। साथ ही यह आरएसएस और बीजेपी के एजेंडे को लागू करने का प्रयास है। मंत्री ने प्रस्ताव में यूडीएफ विधायकों द्वारा सुझाए गए कुछ संशोधनों को भी स्वीकार किया।

हरियाणा चुनाव की हार से नाराज हुए राहुल गांधी

बोले-नेताओं का इंटरेस्ट पार्टी से ऊपर रहा,फैक्ट फाइंडिंग कमेटी हार की वजह पता करेगी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा चुनाव में मिली हार पर कांग्रेस की समीक्षा मीटिंग गुरुवार को राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के आवास पर हुई। इसमें राहुल गांधी ने कहा कि हरियाणा में नेताओं का इंटरेस्ट ऊपर रहा, इस कारण से पार्टी का इंटरेस्ट नीचे चला गया। बैठक में तय किया गया कि हार के कारणों को जानने के लिए फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाई जा रही है, जो हरियाणा में जाकर नेताओं से चर्चा करके रिपोर्ट हाईकमान को सौपेंगी। कमेटी में कौन-कौन चेहरे शामिल

किए जाएंगे, अभी उनके नामों पर चर्चा नहीं हो पाई है। करीब आधे घंटे चली मीटिंग के बाद कांग्रेस नेता अजय माकन ने हुड्डा-सैलजा के मतभेदों पर कहा कि हार के बहुत सारे कारण हैं, जो चुनाव आयोग से लेकर नेताओं के मतभेद तक हैं। इन्हीं सब कारणों पर चर्चा हुई और आगे भी चर्चा करेंगे। इतना बड़ा उलटफेर, एग्जिट पोल जो कह रहे थे, बड़े से बड़ा सर्वे जो कह रहे थे, सभी के सभी एक साथ गलत साबित कैसे हो सकते हैं। आधे घंटे की मीटिंग में इस मामले में किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुंचा जा सकता है। आज की मीटिंग में हमने आगे की रणनीति पर चर्चा की है।

पंजाब और राजस्थान के बॉर्डर इलाकों में बनेगी नई सड़क

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को राजस्थान और पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों में 2,280 किलोमीटर सड़क निर्माण की परियोजना को मंजूरी दे दी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंत्रिमंडल के फैसले की सराहना करते हुए कहा कि इससे न केवल सीमावर्ती गांवों में आवाजाही सुगम होगी बल्कि इन क्षेत्रों में लोगों के जीवन स्तर में भी सुधार आएगा। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, 'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने राजस्थान और पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों में 4,406 करोड़ रुपये की लागत से 2,280 किलोमीटर सड़क निर्माण को मंजूरी दी है, जिसमें सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास पर जोर दिया गया है।' बयान में कहा गया कि यह परियोजना मानसिकता में बदलाव का परिणाम है।

बड़ा सौदा ! समुद्र में बढ़ेगी भारत की ज्यादा ताकत

● नौसेना को मिलेगी दो परमाणु पनडुब्बियां, दर्जनों ड्रोन का भी सौदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय नौसेना और रक्षा बलों की निगरानी क्षमताओं को बढ़ावा देने के लिए कैबिनेट समिति ने दो न्यूक्लियर सबमरीन के स्वदेशी निर्माण और अमेरिका से 31 प्रीडेटर ड्रोन खरीदने के लिए महत्वपूर्ण सौदों को मंजूरी दी है। सौदों के मुताबिक, भारतीय नौसेना को दो न्यूक्लियर-पावर्ड अटैक सबमरीन मिलेंगी, जो हिंद महासागर क्षेत्र में उसकी क्षमताओं को कई गुना बढ़ाएंगी। विशाखापत्तनम के शिप बिल्डिंग सेंटर के साथ इन दो सबमरीन के निर्माण के लिए लगभग 45,000 करोड़ रुपये का सौदा होगा, जिसमें निजी क्षेत्र की कंपनियों जैसे लार्सन

एंड टुब्रो की प्रमुख भागीदारी होगी। न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक, यह सौदा काफी समय से लंबित था और भारतीय नौसेना इसे एक महत्वपूर्ण जरूरत के तौर पर देख रही थी ताकि समुद्र के अंदर नौसेना की क्षमताओं में कमी को पूरा किया जा सके। भारत की योजना है कि वह भविष्य में छह ऐसे सबमरीन अपने बेड़े में शामिल करे। ये सबमरीन एडवांस टेक्नोलॉजी वेसल परियोजना के तहत बनाई जाएंगी जो कि अरिहंत वर्ग के तहत निर्माणाधीन पांच न्यूक्लियर सबमरीन से अलग हैं। कैबिनेट समिति द्वारा आज मंजूर किए गए अन्य प्रमुख सौदे के तहत अमेरिका की जनरल एटोमिक्स से 31 प्रीडेटर ड्रोन की खरीद भी शामिल है। यह सौदा विदेशी सैन्य बिक्री अनुबंध के तहत किया जा रहा है।

चिराग के खिलाफ बीजेपी ने मांझी को किया आगे !

बिहार में पारस के जरिए बनाया जा रहा नया 'पावर कॉरिडोर'

पटना (एजेंसी)। अंततः केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने एनडीए की राजनीति में जो पलीता लगाया था उसमें धमाका भी हो गया। और यह धमाका किया जमुई से लोजपा (आर) के सांसद और चिराग पासवान के जीजा अरुण भारती ने। शह और मात की जो विसात केंद्रीय मंत्री जीतन राम ने बिछाई थी उसमे प्रारंभिक सफलता तो मिल गई। केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी के बयान पर पलटवार करते जमुई सांसद अरुण भारती ने कहा कि पशुपति पारस में कोई गुण नहीं है। रामविलास पासवान के उद्देश्य, राजनीतिक विरासत को चिराग ही आगे ले जा सकते हैं। देश में रामविलास के जाने से एक दलित नेता की जो कमी हुई है, उसकी भरपाई चिराग पासवान ही कर सकते हैं। जीतन राम मांझी के बयान का खंडन करते हुए सांसद अरुण भारती ने जीतन राम मांझी पर ही सवाल उठा दिया कि वो ऐसी बयानबाजी क्यों कर रहे हैं। दरअसल, बिहार में इन दिनों दलित राजनीति उफान पर है। और अभी देखे तो अलहदा रूप में दलित राजनीति के मुख्यतः दो प्लेटफार्म हैं। एक लोकजनशक्ति पार्टी और दूसरा हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा सेक्युलर। वर्तमान समय में लोजपा दो धड़ों में बंट गई है। चिराग के नेतृत्व में लोजपा (आर)और पशुपति पारस के नेतृत्व में लोजपा राष्ट्रीय ताल ठोक रही है। लोजपा के दो गुटों में बंटे रहने के कारण इनकी शक्ति का विभाजन होने की गुंजाइश भी है। ऐसे में जीतन राम मांझी का पशुपति पारस को रामविलास पासवान का राजनीतिक उत्तराधिकारी बताना एक रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है। चिराग और पशुपति के परिवार के बीच जो दरार है उसे और भी गहरा करना भी इस रणनीति का हिस्सा हो सकता है।

सेना का जवान राइफल और मैगजीन के साथ गिरफ्तार

● हथियार चोरी के बाद से था फरार,60 कारतूत भी बरामद

खटीमा (एजेंसी)। सेना का जवान इंसास राइफल, 60 कारतूस, चार मैगजीन के साथ उत्तराखंड के उधमसिंहनगर जिले के खटीमा में गिरफ्तार हुआ है। सेना के हथियार चोरी करने के बाद से जवान फरार चल रहा था। जवान के से पुलिस ने राइफल, कारतूस और मैगजीन समेत सारा सामान बरामद कर लिया है। आरोपी के खिलाफ असम में आर्म्स एक्ट और हथियार चोरी में मुकदमा दर्ज है। खटीमा पुलिस ने भी चोरी के सामान की बरामदगी का मुकदमा दर्ज कर आरोपी को न्यायालय में पेश किया। पुलिस आरोपी को पूछताछ के लिए रिमांड पर लेने का प्रयास कर रही है। आरोपी की गिरफ्तारी के बाद बनबसा राजपूत रेजीमेंट के अधिकारियों ने भी जवान से पूछताछ की। कोतवाल मनोहर सिंह दसौनी ने बताया कि वर्ष 2020 में बनबसा से भर्ती हुए मूल उत्तराखंड के बनलेख नंदकुली चम्पावत हाल डिग्री कॉलेज रोड चम्पावत निवासी सूरज चंद्र जोशी बंगाल इंजीनियर का जवान है।

एक सप्ताह के अंदर चुनाव के नए राउंड का ऐलान

झारखंड और महाराष्ट्र संग 50 सीटों पर होगा उपचुनाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में एक देश एक चुनाव के मुद्दे पर बात हो रही है। पीएम नरेंद्र मोदी समेत केंद्र सरकार इस पर जोर दे रही है और मंथन चल रहा है। लेकिन इस बीच देश चुनाव में ही बिजी है। जम्मू-कश्मीर और हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजे मंगलवार को ही आए हैं और अब इलेक्शन के नए राउंड का ऐलान एक सप्ताह के अंदर हो सकता है। अब तक मिली जानकारी के अनुसार 18 अक्टूबर तक कभी भी महाराष्ट्र से लेकर झारखंड तक विधानसभा चुनाव कराने का ऐलान हो सकता है। इसके साथ ही यूपी, बंगाल, असम और राजस्थान समेत देश की 50 सीटों पर उपचुनाव हो सकता है। महाराष्ट्र विधानसभा का कार्यकाल 26 नवंबर तक है। ऐसे में नई राज्य सरकार का गठन इससे पहले ही हो जाना चाहिए। इसके अलावा महाराष्ट्र सरकार ने अपील की है कि 15 नवंबर के बाद ही चुनाव का आयोजन हो। इसलिए क्योंकि 31 अक्टूबर को चुनाव है और फिर अगले कुछ दिन तक अन्य त्योहार हैं। यही नहीं देव दीपावली भी बड़े पैमाने पर मनाई जाती है। इसलिए 15 नवंबर के बाद ही चुनाव हो।

हरियाणा सीएम का 12 अक्टूबर का शपथग्रहण टाला गया

● 2 विधायक-सांसद दिल्ली में डटे, किरण चौधरी बेटी समेत खट्टर से मिलीं,डिप्टी सीएम-मंत्रीपद की लॉबिंग

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा के नए सीएम के तौर पर नायब सैनी 12 अक्टूबर को शपथ लेने वाले थे। पंचकूला के परेड ग्राउंड में शपथ के लिए तैयारियां भी शुरू हो चुकी थीं। भीड़ जुटाने के लिए सरकारी बसें तक मांग ली गई थी। हालांकि पीएम नरेंद्र मोदी के विदेश दौरे की वजह से इसे टाल दिया गया। अब शपथग्रहण 15 अक्टूबर तक कभी भी हो सकता है। शपथ से पहले चंडीगढ़ में बीजेपी विधायक दल की मीटिंग होगी। इस बैठक में दो केंद्रीय पर्यवेक्षक शामिल होंगे। वहीं सैनी अभी दिल्ली में ही हैं। जहां वे हरियाणा चुनाव प्रभारी केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से मीटिंग कर रहे हैं। इसमें मंत्रिमंडल को लेकर चर्चा हो सकती है। वहीं शपथग्रहण से पहले डिप्टी सीएम और मंत्रीपद के लिए लॉबिंग शुरू हो चुकी है। पानीपत ग्रामीण से विधायक महिपाल ढांडा और इसराना से चुनाव जीते राज्यसभा सांसद कृष्णलाल पंवार ने दिल्ली में डेरा डाल लिया है। ढांडा डिप्टी सीएम पद के लिए जोर लगा रहे हैं। भाजपा यहां 2 डिप्टी सीएम लगा सकती है।

नवरात्रि पर युवधर्म द्वारा बेटियों को आत्मरक्षा प्रशिक्षण

भोपाल (नप्र)। नवरात्रि के पावन महापर्व पर मंदसौर में संस्था युवधर्म द्वारा बेटियों बहनों को आत्मरक्षा प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन जिला व प्रदेश ही नहीं देश मे कई स्थानों पर चर्चा का विषय है। संस्था के हितेश शुक्ला ने

बताया कि इस नवीन पहल को बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला है। नौ दिवसीय शक्ति की आराधना वर्तमान समय में बेटियों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण की आवश्यकता को देखते हुए यह आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य बेटियों विकृत मानसिकता के लोग जो बेटियों की प्रगति में बाधा बनने का कार्य करते हैं जिसके कारण माता पिता के मन में अज्ञात भय बेटियों सुरक्षा को लेकर बना रहता है। ऐसे समय में बेटियों को आत्मरक्षा में आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करना चाहिए। यही इस आयोजन का उद्देश्य है। देश भर में नवरात्र के दिनों में शक्ति की आराधना इस तरह भी की जा सकती है। यह नवाचार का संदेश देने में सफल रही है। शिविर में 130 से अधिक बेटियों ने नियुद्ध, दंड एवं तलवार चलाने का प्रशिक्षण लिया है।

देश ने दूरदर्शी उद्योगपति और सच्चे देशभक्त को खोया : राज्यपाल श्री पटेल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने श्री रतन टाटा के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा है कि श्री रतन टाटा के निधन से देश ने एक दूरदर्शी उद्योगपति और एक सच्चे देशभक्त को खो दिया है।

राज्यपाल श्री पटेल ने शोक संदेश में कहा है कि श्री टाटा एक महान उद्योगपति और समाजसेवी थे। उनका निधन भारतीय उद्योग जगत और समाज के लिए बड़ी क्षति है। श्री टाटा ने भारतीय उद्योग को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया है। उनकी विरासत हमेशा हमारे दिलों में रहेगी। राज्यपाल श्री पटेल ने परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति और दुख की इस घड़ी में उनके परिजन, मित्रों और प्रशंसकों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना की है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने महान उद्योगपति श्री रतन टाटा के निधन पर व्यक्त किया शोक

उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि भारत के महान उद्योगपति, परोपकारी व्यक्तित्व, श्री रतन टाटा के निधन की खबर सम्पूर्ण देश के लिए अत्यंत दुःखद है। श्री टाटा ने अपने असाधारण नेतृत्व और समर्पण से न केवल भारत को विकास के पथ पर आगे बढ़ाया, बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा और जनसेवा के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान दिया। उनका निधन देश के औद्योगिक जगत और समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि श्री रतन टाटा का जीवन और उनकी सेवाएं सदैव प्रेरणास्त्रोत रहेंगी। उन्होंने दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और शोकाकुल परिजनों को इस कठिन समय में धैर्य और संबल प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

उद्यानिकी सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना में मध्यप्रदेश, देश का अग्रणी राज्य : मंत्री श्री कुशवाह

केन्द्र सरकार ने प्रदेश में योजना की अवधि एक वर्ष और बढ़ाई

भोपाल (नप्र)। उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा है कि प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश, देश के अग्रणी राज्यों में है। प्रदेश की इस उपलब्धि के दृष्टिगत केन्द्र सरकार द्वारा मध्यप्रदेश में प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना की अवधि एक वर्ष बढ़ाई गई है। मंत्री श्री कुशवाह ने केन्द्र सरकार के इस निर्णय पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय खाद्य प्र-संस्करण मंत्री श्री चिराग पासवान के प्रति आभार व्यक्त किया है।

प्रमुख सचिव उद्यानिकी श्री अनुपम राजन ने बताया कि प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश के शानदार प्रदर्शन को देखते हुए केन्द्रीय खाद्य प्र-संस्करण मंत्रालय द्वारा मध्यप्रदेश में योजना के क्रियान्वयन अवधि को 31 मार्च 2026 तक बढ़ा दिया है। इस योजना के तहत मध्यप्रदेश में 420 औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिये बैंकों द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है, जो एक रिकार्ड है।

प्रमुख सचिव श्री राजन ने बताया कि मध्यप्रदेश में पीएमएफएमई योजना वर्ष 2020-21 से 2024-25 तक 5 वर्षों के लिए लागू की गई थी। पीएमएफएमई योजना के माध्यम से खाद्य प्र-संस्करण उद्योग इकाइयों की स्थापना के लिए निजी और समूह को 35 प्रतिशत या अधिकतम 10 लाख रूपये का अनुदान दिया जाता है। इससे प्रेरित होकर प्रदेश में कृषि/उद्यानिकी के क्षेत्र में युवा स्वयं की औद्योगिक यूनिट स्थापना के लिए प्रेरित हुए है। श्री राजन ने बताया कि प्रदेश में खाद्य प्र-संस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित कमेटी के माध्यम से प्रस्तावों का परीक्षण किया जाता है, इसके उपरांत ही केन्द्रीय इंटरमिनिस्ट्रियल इम्पावर कमेटी को प्रस्ताव भेजे जाते है। योजना में प्राप्त 917 प्रकरणों में से 420 प्रकरणों की स्वीकृति प्राप्त कर मध्यप्रदेश, देश में अग्रणी राज्य बना है।

उल्लेखनीय है कि अपर सचिव, केन्द्रीय खाद्य प्र-संस्करण श्री मिनहाज आलम ने पत्र लिखकर प्रमुख सचिव उद्यानिकी श्री अनुपम राजन और उनकी टीम के कार्य की सराहना की है।

भोपाल-बिलासपुर एक्सप्रेस सहित 6 ट्रेनों की सेवा बहाल

दक्षिण-पूर्व-मध्य रेलवे के बीरसिंहपुर स्टेशन को तीसरी लाइन से जोड़ने का काम पूरा

भोपाल (नप्र)। रेल प्रशासन द्वारा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर मंडल में बीरसिंहपुर रेलवे स्टेशन को तीसरी लाइन से जोड़ने का काम किया जा रहा है। यह काम समय से पहले पूरा हो गया है। जिससे अब निरस्त ट्रेनों की सेवा बहाल रहेगी। यानि अपने नियमित समय-सारणी के अनुसार गंतव्य तक चलती रहेंगी। भोपाल रेल मंडल के अधिकारियों ने बताया कि यात्री किसी भी तरह की असुविधा की स्थिति में रेलवे हेल्प लाइन नंबर 139 पर संपर्क कर सकते हैं।

भोपाल में सजा रावण का बाजार...

जहां बिक रहे हैं 1 से 50 फीट तक ऊंचे 'रावण'

दशहरे पर 7 हजार पुतले जलेंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक अनोखा बाजार सजा है। इसमें कोई सामान नहीं बल्कि रावण के पुतले बिकेंगे। इनकी एडवांस बुकिंग भी हो चुकी है। दशहरे के दिन लोग इन पुतलों को ले जाएंगे। भोपाल में इस बार 7 हजार से ज्यादा छोटे-बड़े रावण के पुतलों का दहन होगा।

लिंक रोड नंबर-2 स्थित तुलसीनगर, सेकंड स्टॉफ, बांसखेड़ी, ईंटखेड़ी, पंचशील नगर समेत कई स्थानों पर करीब 300 कारीगर पिछले डेढ़-दो महीने से पुतले तैयार कर रहे हैं। अब इन पुतलों को सड़क किनारे सजाकर रख दिया है। यहां 1 से 50 फीट ऊंचे पुतले हैं। जिनकी कीमत 500-600 से 40 हजार रुपए तक है। दशहरे को 2 दिन बचे होने से लोग एडवांस बुकिंग कर रहे हैं।

बड़े पुतले के निर्माण में एक सप्ताह- लिंक रोड नंबर-2 पर पुतलों का निर्माण कर रहे कारीगर उमेश बंसल ने बताया, वे 6 से 40 फीट तक ऊंचे पुतले बना रहे हैं। सबसे छोटे पुतले की कीमत 600 रुपए से शुरू होती है। सबसे बड़ा पुतला 40 हजार रुपए का है। बड़ा पुतला

बनाने में 6 से 7 दिन तक लग जाते हैं।

मेघनाथ-कुंभकरण के पुतले भी होते हैं साथ- कारीगर संजू ने बताया, लोग एडवांस बुकिंग कर रहे हैं। उनके पास 40 से 60 फीट तक के पुतलों की बुकिंग ज्यादा आ रही है। इनकी कीमत 50 हजार रुपए से ज्यादा है। आकर्षक वेशभूषा, हथियार के साथ ही मेघनाथ और कुंभकरण के पुतले भी साथ में होते हैं।

पटाखों की वजह से बढ़ जाता है रेट

कारीगर संजू ने बताया, ये पुतले बिना पटाखों के होते हैं। यदि कोई पुतलों में पटाखे रखवाना चाहेंगे तो उसकी कीमत बढ़ जाएगी। बड़े पुतलों की कीमत ज्यादा है, क्योंकि इसमें बांस, धागा, कपड़ा, पेपर का उपयोग ज्यादा होता है। वहीं, तीन से चार कारीगर काम में लगते हैं।

3 दिन ज्यादा बिक्री होगी

कारीगर उमेश ने बताया, एक कारीगर छोटे-बड़े 20 से 25 पुतले तक बना रहा है। पुतले खरीदने के लिए लोग आ रहे हैं। एडवांस बुकिंग भी कई दिन पहले से शुरू हो गई। गुरुवार-शुक्रवार और शनिवार को ज्यादा बिक्री होगी। शनिवार को दशहरा है। ज्यादातर पुतले इसी दिन बिकेंगे।

बारिश के आसार नहीं, इसलिए राहत

साल 2022 में तेज बारिश होने की दशहरा पर्व बिगड़ गया था। प्रदेश में दशहरे पर रावण के पुतले को श्रीराम के बाण से पहले ही इंद्र के बाणों का सामना करना पड़ा था। बारिश की वजह से राजधानी भी में रावण के पुतले भीग गए थे। बांसखेड़ी इलाके में कारीगरों को पुतले बस स्टॉप में रखना पड़े थे। इससे उन्हें खासा नुकसान हुआ था। इस बार मौसम साफ होने से कारीगरों ने राहत की सांस ली है।

बोरी में मिली नवजात की मौत, नर्स हिरासत में

भोपाल में नाबालिग की कराई थी डिलीवरी; नाबालिग बॉयफ्रेंड समेत 4 पर एफआईआर

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बोरी में बंद मिली नवजात बच्ची की गुरुवार को मौत हो गई। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए हमीदिया स्थित मॉर्चुरी भेजा गया है। बच्ची को फेंकने वाली संदेही नर्स को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। सीसीटीवी फुटेज की मदद से उसकी पहचान हुई।

आसमां खान, नर्स

संदेही नर्स आसमां उर्फ फिरदौस खान ने 14 साल की लड़की की डिलीवरी कराई थी। परिवार ने बदनामी के डर से नवजात को ठिकाने लगाने का जिम्मा नर्स को ही दिया था। उसने बाग उमराव दुल्हा के पास रेलवे ट्रैक के किनारे नवजात को फेंक दिया था।

पीड़ित का ममेरा भाई है आरोपी

नाबालिग स्कूली छात्रा बताई जा रही है। आरोपी भी 17 साल का नाबालिग है। वह पीड़िता का ममेरा भाई है। पुलिस ने उसे हिरासत में ले लिया है। पुलिस ने पीड़ित नाबालिग, उसकी मां, नाबालिग आरोपी और नर्स आसमां उर्फ फिरदौस को नामजद आरोपी बनाया है। पुलिस आसमां के सहयोगी डॉक्टर की भी तलाश कर रही है। उसने नाबालिग की डिलीवरी कराने के लिए एक डॉक्टर की मदद ली थी।

नाबालिग अपनी मां के साथ जहांगीराबाद थाना क्षेत्र में रहती है। उसके पिता दस साल पहले मां को छोड़ चुके हैं, वह अलग रहते हैं। हालांकि पुलिस ने उन्हें भी पूछताछ के लिए तलब किया था। पुलिस आरोपी के खिलाफ रेप और पॉक्सो की धाराओं में भी केस दर्ज कर रही है।

सीसीटीवी में घटनास्थल के पास दिखी थी महिला- मंगलवार देर रात बोरी में बंद कर मासूम को फेंकने वाली महिला के सीसीटीवी फुटेज सामने आए थे। वीडियो में एक महिला घटनास्थल के करीब दिखाई दी। फुटेज के आधार पर पुलिस ने अज्ञात महिला के खिलाफ एफआईआर की थी। पुलिस ने उसे हिरासत में लिया था। वह नर्स है और नवीन नगर ऐशबाग में रहती है। जिस नाबालिग की डिलीवरी हुई थी वह 8वीं पास छात्रा है। हालांकि करीबी रिश्तेदार की ज्यादती की वजह से पढ़ने नहीं जा रही थी।

औद्योगिक एवं वाणिज्यिक उपभोक्ताओं की सुविधा के लिये 'उद्योग मित्र योजना-2024' लागू : ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया कि प्रदेश के उच्चदाब एवं निम्नदाब श्रेणी के औद्योगिक एवं वाणिज्यिक उपभोक्ताओं की सुविधा के लिये स्थायी रूप से विच्छेदित विद्युत कनेक्शनों को पुनः जोड़ने एवं बकाया राशि के भुगतान में राहत तथा नवीन औद्योगिक एवं वाणिज्यिक आवेदकों को आवश्यक अधोसंरचना निर्माण की लागत के भुगतान में राहत देने के लिये 'उद्योग मित्र योजना-2024' लागू की गई है। यह योजना 2 वर्षों के लिये प्रभावशील रहेगी।

मंत्री श्री तोमर ने कहा है कि इस योजना से वितरण कंपनियों की स्थायी रूप से विच्छेदित उपभोक्ताओं से बकाया राशि की वसूली हो सकेगी। साथ ही फिर से कनेक्शन जोड़ने एवं नवीन कनेक्शनों से विद्युत विक्रय में वृद्धि होने से राजस्व में वृद्धि भी होगी। यह योजना राज्य के औद्योगिक विकास के लिये भी सहायक होगी।

पात्रता-योजना में सभी उच्च एवं निम्न दाब श्रेणी के स्थायी रूप से विच्छेछित औद्योगिक और वाणिज्यिक उपभोक्ता, जो कि योजना अनुसार बकाया राशि जमा कर पुनर्संयोजन या नया कनेक्शन लेना चाहते हैं, पात्र होंगे। साथ ही ऐसे औद्योगिक एवं वाणिज्यिक श्रेणी के नवीन आवेदक भी पात्र होंगे, जो विद्युत कनेक्शन के लिये विद्युत अधोसंरचना का निर्माण विद्युत वितरण कंपनियों से करवाना चाहते हैं।

प्रावधान-योजना में उपभोक्ताओं को स्थाई विच्छेदन के दिनांक पर देय कुल बकाया राशि का न्यूनतम 20 प्रतिशत भुगतान कनेक्शन जोड़ने के पूर्व एक मुश्त देना होगा। नवीन कनेक्शनों के प्रकरणों में जरूरी अधोसंरचना लागत की राशि का न्यूनतम 20 प्रतिशत भुगतान आवेदन के साथ एक मुश्त देना होगा। शेष राशि का भुगतान मासिक बिल के साथ ब्याज सहित अधिकतम 3 वर्ष में किया जा सकेगा।

योजना का लाभ लेने के लिये आवेदक को महाप्रबंधक/वृत्त कार्यालय में आवेदन देना होगा। साथ ही 500 रूपये के स्टॉम्प पेपर पर इस आशय का शपथ-पत्र देना होगा कि वह योजना के प्रावधान के अनुसार राशि का भुगतान करेंगे। नवीन कनेक्शनों के लिये आवेदकों को ऑनलाइन आवेदन देना होगा एवं विद्युत नियामक आयोग द्वारा निर्धारित सर्विस कनेक्शन शुल्क, सुरक्षा निधि आदि भी देय होगा। आवश्यक अधोसंरचना का निर्माण बिजली कम्पनियों द्वारा निर्धारित एसओआर के अनुसार किया जायेगा।

निर्धारित किश्तों एवं मासिक देयकों का भुगतान नहीं किये जाने पर 15 दिवस की सूचना देकर बिजली कनेक्शन काटा जा सकेगा। योजना का लाभ उपभोक्ताओं को केवल एक बार ही प्राप्त हो सकेगा। योजना अवधि में कोई उपभोक्ता अपने परिसर का हस्तांतरण किसी अन्य व्यक्ति को करता है, तो निर्धारित शर्तों के तहत सभी सुविधाएं नये उपभोक्ता को प्राप्त हो सकेंगी।

योजनांतर्गत किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में प्रकरण का निराकरण विभागीय समिति द्वारा किया जायेगा। समिति में अपर मुख्य सचिव ऊर्जा, प्रबंध संचालक एमपी पॉवर मैनेजमेंट कम्पनी और विधि विशेषज्ञ होंगे। समिति के संयोजक संबंधित विद्युत वितरण कम्पनी के प्रबंध संचालक होंगे। योजनावधि में प्राप्त होने वाले आवेदनों पर भी विचार किया जायेगा।

जीजीबाई मंदिर में दान किए जाते हैं जूते-चप्पल

बेटी की तरह देवी मां का रखा जाता ख्याल; 25 साल से चली आ रही परंपरा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार क्षेत्र में एक पहाड़ी पर माता कामेश्वरी की शक्ति पीठ है। इस मंदिर को जीजीबाई (बहन) माता का मंदिर कहा जाता है। इसके अलावा देवी मां को 'चप्पल वाली माता' के नाम से भी जाना जाता है।

मन में आया ख्याल, पहाड़ी पर बनाया मंदिर- इस मंदिर की स्थापना 1999 में मंदिर के मुख्य पुजारी ओमप्रकाश महाराज ने की थी। मंदिर के ही अन्य पुजारी सुभाष शर्मा बताते हैं कि गुरुजी ओमप्रकाश महाराज पहले दशहरा पति मंदिर में पूजा करते थे। उन्हें अनुभूति हुई कि पास की पहाड़ी पर मां कामेश्वरी का प्राचीन दरबार रहा है और उन्हें वहां माता के बाल रूप की स्थापना करनी चाहिए। ऐसे में गांव वालों के साथ मिलकर उन्होंने मंदिर की स्थापना की। तब से ही यहां मां को बेटी के रूप में पूजा जाने लगा।

बेटी की तरह मां का रखा जाता है ख्याल- मंदिर के मुख्य पुजारी ओम प्रकाश महाराज बताते हैं कि जब उन्होंने मंदिर की स्थापना की, उससे पहले इस पहाड़ी पर भगवान शिव और पार्वती का विवाह समारोह संपन्न करवाया था। इस विवाह में उन्होंने मां पार्वती को अपने हाथों से बेटी के रूप में विदा किया था। इसलिए देवी को अपनी बेटी मानकर उनकी पूजा करते हैं। क्षेत्रवासी मां को अपनी बहन की तरह मानते है, इसलिए उन्हें जीजीबाई कहते हैं।मुख्य पुजारी ओम प्रकाश 25 सालों से मंदिर में मां की सेवा कर रहे हैं।

कैसे शुरू हुई जूते-चप्पल दान की परंपरा- इस मंदिर के मुख्य पुजारी ओम प्रकाश महाराज देवी को अपनी बेटी मानकर उनकी पूजा करते हैं। इसी परंपरा के तहत बाल स्वरूप में देवी का पूजन किया जाता है। मंदिर में देवी का श्रृंगार रोज किया जाता है, जिसमें चश्मा, छाता, कपड़े, इत्र, कंघा, और चप्पल शामिल हैं।

देवी के लिए दिन में 2-3 बार कपड़े बदले जाते हैं और उन्हें नियमित रूप से सजाया जाता है। भक्त यहां देवी सिद्धिदात्री को बाल रूप में देखते हैं और उनकी देखभाल एक बेटी की तरह की जाती है।

चप्पल दान से माता होती प्रसन्न- भक्त मानते हैं कि देवी मंदिर में चप्पल दान से वे प्रसन्न होती हैं और भक्तों की मनोकामनाएं पूरी करती हैं। लोग नई चप्पल, जूते, और सैंडल माता के चरणों में अर्पित करते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने समत्व भवन में कृषकों के आदान एवं उत्पादन की समीक्षा की।

इंडस्ट्रियल और कमर्शियल कंज्यूमर्स के लिए नई योजना

स्थायी रूप से कटे बिजली कनेक्शन फिर से जोड़े जाएंगे; ऐसे ले सकते हैं योजना का लाभ

भोपाल (नप्र)। अवैध कॉलोनी में बने मकानों के लिए स्थायी कनेक्शन की सुविधा देन के बाद अब मोहन सरकार इंडस्ट्रियल और कमर्शियल कंज्यूमर्स के लिए नई योजना लेकर आई है। उद्योग मित्र 2024 नाम से शुरू की जा रही इस योजना में प्रदेश के हाई टेंशन (एचटी) और लो टेंशन (एलटी) लाइन के इंडस्ट्रियल और कमर्शियल कंज्यूमर्स को यह सुविधा मिलेगी।

इसमें ऐसे उपभोक्ता शामिल होंगे। जिनके विद्युत कनेक्शनों को स्थायी रूप से काटा गया है। ऐसे कनेक्शनों को दोबारा जोड़ने और बकाया राशि पेमेंट का काम इस योजना में हो सकेगा। इसके साथ ही इन्हीं कैटेगरी वाले नए आवेदकों को बिजली लाइन डालने, ट्रांसफॉर्मर लगाने और कनेक्शन देने के लिए आने वाली निर्माण लागत के भुगतान में भी राहत इस योजना में मिलेगी।

दो साल के लिए लागू की जाने वाली इस योजना से डिस्ट्रीब्यूशन कंपनियां स्थायी रूप से काटे गए कनेक्शन वाले कंज्यूमर्स से बकाया राशि की वसूली कर सकेंगे। इसके साथ ही दोबारा कनेक्शन जोड़ने एवं नए कनेक्शन दिए जाने से ऊर्जा विभाग का राजस्व बढ़ेगा। योजना प्रदेश के औद्योगिक विकास में भी सहायक होगी।

ऐसे कंज्यूमर ले सकेंगे योजना का लाभ- योजना में कमर्शियल और इंडस्ट्रियल कैटेगरी के सभी हाईटेंशन और लो टेंशन लाइन के स्थायी उपभोक्ता, जिनके कनेक्शन कटे हैं वे बकाया राशि जमा कर पुनर्संयोजन करा सकते हैं या नया कनेक्शन ले सकते हैं। ऐसे इंडस्ट्रियल और कमर्शियल कैटेगरी के नए आवेदक भी पात्र होंगे, जो विद्युत कनेक्शन के लिए पूरी लाइन डलवाने और ट्रांसफॉर्मर लगवाने व कनेक्शन लेने का काम वितरण कंपनियों से कराना चाहते हैं।

ऐसे पूरी होगी प्रोसेस

योजना में उपभोक्ताओं को स्थायी रूप से काटे गए कनेक्शन पर कुल बकाया, बिजली बिल का कम से कम 20 प्रतिशत भुगतान कनेक्शन जोड़ने के पहले एक मुश्त देना होगा।

नए कनेक्शन के मामले में जरूरी अधोसंरचना लागत की राशि का कम से कम 20 प्रतिशत भुगतान आवेदन के साथ देना होगा। शेष राशि का भुगतान मासिक बिल के साथ ब्याज सहित अधिकतम 3 साल में किया जा सकेगा।

आवेदक को महाप्रबंधक या सर्किल कार्यालय में आवेदन देना होगा। साथ ही 500 रुपए के स्टाम्प पेपर पर शपथ-पत्र देना होगा कि वह योजना के प्रावधान के अनुसार राशि का भुगतान करेंगे। नए कनेक्शन के लिए आवेदक को ऑनलाइन आवेदन देना होगा एवं विद्युत नियामक आयोग द्वारा तय सर्विस कनेक्शन फीस, सिक्योरिटी डिपॉजिट भी देय होगा। इसके बाद ऐसे इलाकों में अधोसंरचना का निर्माण बिजली कम्पनियों द्वारा निर्धारित एसओआर के अनुसार किया जाएगा।

तय किश्तों एवं मासिक बिलों का भुगतान नहीं किए जाने पर 15 दिन की सूचना देकर बिजली कनेक्शन काटा जा सकेगा। योजना अवधि में कोई उपभोक्ता अपने परिसर का हस्तांतरण किसी अन्य व्यक्ति को करता है, तो तय शर्तों के आधार पर सभी सुविधाएं नये उपभोक्ता को प्राप्त हो सकेंगी।

उद्योग मित्र योजना विवाद निराकरण के लिए समिति भी होगी

जिस तरह से अवैध कॉलोनी में रहने वालों के लिए कनेक्शन के लिए शासन स्तर पर समिति बनी है। उसी तरह उद्योग मित्र योजना में भी किसी प्रकार के विवाद के निराकरण का काम विभागीय समिति द्वारा किया जाएगा। समिति में अपर मुख्य सचिव ऊर्जा, प्रबंध संचालक एमपी पावर मैनेजमेंट कम्पनी और विधि विशेषज्ञ होंगे। समिति के संयोजक संबंधित विद्युत वितरण कम्पनी के प्रबंध संचालक होंगे। योजना अवधि में प्राप्त होने वाले आवेदनों पर भी विचार किया जाएगा। योजनावधि समाप्त होने के अंतिम दिन तक प्राप्त सभी आवेदनों के निराकरण हर स्थिति में 30 दिन के अंदर कर दिया जाएगा।

संपादकीय

भारत के 'रतन' का महाप्रयाण

देश के सर्वाधिक सम्मानित उद्योगपति और टाटा संस के मानद चेयरमैन एमिरेट्स रतन टाटा का निधन भारत मां के एक सपूत का महाप्रयाण है। रतन टाटा ने भारत में आधुनिक औद्योगिक क्रांति का आगाज करने वाला टाटा समूह का करीब चालीस साल तक सफल नेतृत्व किया। उसे और ऊंचाई पर ले गए। उसका अत्यधिक विस्तार किया। इसके लिए भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया। रतन टाटा आखिर तक सक्रिय थे। चार दिन पहले भी जब उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था, तब टाटा की यही प्रतिक्रिया थी कि यह 'रूटीन चेक अप' है। चिंता की कोई बात नहीं है। लेकिन दो ही दिन बाद ईश्वर ने उन्हें अपने पास बुला लिया। 86 साल की उम्र में उन्होंने मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में आधी रात अंतिम सांस ली। गौरतलब है कि टाटा समूह 2023-24 में 13 लाख 85 हजार करोड़ रुपये के राजस्व के साथ दुनिया के सबसे बड़े उद्योग समूहों में से एक है। भारत के रतन कहे जाने वाले दिग्गज उद्योगपति रतन टाटा अरबपतियों में शामिल होने के बावजूद अपनी सादगी से हर किसी का दिल जीत लेते थे। वह उन शख्सियतों में शुमार थे, जिनका हर कोई सम्मान करता था। कई मौकों पर उन्होंने गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद कर भारतीयों को गर्व महसूस कराया। यूं तो रतन टाटा ने पूरे उद्योग समूह को नए पंख दिए, लेकिन 1 लाख रु. में नैनो कार तथा एयर इंडिया पर फिर से टाटा समूह का अधिकार उनके जीवन के दो अहम मोड़ थे। हालांकि उनका महत्वाकांक्षी नैनो प्रोजेक्ट असफल रहा, क्योंकि उसके साकार होने में काफी देर हो गई और समाज का जो वर्ग सस्ती कार खरीद सकता था, वह बड़ी कारों की ओर चला गया। 28 दिसंबर 1937 को नवल और सूनू टाटा के घर जन्मे रतन टाटा ग्रुप के फाउंडर जमशेदजी टाटा के पड़पोते थे। उनके माता पिता बचपन में ही अलग हो गए थे और दादी ने उनकी परवरिश की थी। 1991 में उन्हें टाटा ग्रुप का चेयरमैन बनाया गया था। इसमें संदेह नहीं कि भारत रत्न जे.आर.डी. टाटा ने रतन टाटा को अपना उत्तराधिकारी बहुत सोच समझकर बनाया होगा, जिस पर रतन टाटा पूरी तरह खरे उतरे। टाटा का जीवन बहुआयामी था। वो दूरदर्शी उद्योगपति तो थे ही साथ किताबें पढ़ने, संगीत सुनने, कारों का बेड़ा रखने के शौकीन थे। उद्योगपति के साथ-साथ उनका परोपकारी रूप भी दुनिया को बखूबी मालूम है। देश में कोराना महामारी के समय रतन टाटा ने 5 सौ करोड़ दान किए थे। वैसे भी टाटा समूह ने देश में हर क्षेत्र के विकास में अपना महत्तम योगदान दिया है। शायद ही कोई क्षेत्र ऐसा हो, जिसमें टाटा की भागीदारी नहीं हो। टाटा की विशेषता यह है कि उसने केवल मुनाफे के लिए ही काम नहीं किया। सामाजिक सरोकारों को भी हमेशा ध्यान में रखा। यह रतन टाटा की नेतृत्व क्षमता का ही नतीजा था कि उनके कार्यकाल में टाटा समूह का राजस्व 40 गुना बढ़ गया। वह ऐसे उद्यमी थे, जिसने बड़ी तादाद में स्टार्ट-अप में निवेश किया था। वह एक प्रशिक्षित पायलट भी थे जिन्होंने एफ-16 विमान उड़ाया था। रतन टाटा की अगुवाई में ही टाटा समूह ने टेटली, जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) और एंग्लो-डच स्टील निर्माता कोरस का अधिग्रहण किया, जिससे टाटा समूह को एक ग्लोबल इमेज मिली। टेटली के अधिग्रहण के साथ ही टाटा समूह एक ग्लोबल प्रतिस्पर्धी बन गया। महामना रतन टाटा के निधन पर भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित अनेक हस्तियों ने गहरा शोक व्यक्त किया है। इस महान शख्सियत के निधन पर 'सुबह सवेरे' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

नजरिया

प्रदीप मिश्र

लेखक जम्मू-कश्मीर में पत्रकार रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर : विपक्ष को मत, सरकार को मात

खस्ताहाल सड़कें, बदहाल साफ-सफाई, बिजली-पानी की अनियमित आपूर्ति, आवागमन में असुविधा और अव्यवस्था के अलावा शिक्षा और सेहत की बुनियादी सुविधाओं का अभाव जन सामान्य को हर समय उद्धेलित करता है। राजनीतिक तौर पर अवसर मिलने पर नागरिक अपने मताधिकार से इन सुविधाओं की उपलब्धता, निरंतरता और गुणवत्ता पर अपनी सहमति-असहमति प्रकट करता है। दस साल बाद जम्मू-कश्मीर की 63.88 प्रतिशत यानी दो तिहाई आबादी का जनादेश इसे जाहिर करता है। नतीजे बता रहे हैं कि पांच अगस्त 2019 के बाद बहुप्रचारित नए जम्मू-कश्मीर में सब कुछ नहीं बदला। पुरानी रियासत में सियासत का दो दशक पुराना दौर जारी है। सरकारों और सत्ता को भ्रम हो सकता है लेकिन जनता मतदान के समय उचित फैसला करता है।

अनुच्छेद 370 और 35 ए, पत्थरबाजों की रिहाई, जनसुरक्षा अधिनियम (पीएसए) खत्म करने, सशस्त्र बल विशेषाधिकार (अफस्पा) की वापसी, पाकिस्तान से बातचीत-व्यापार, पीओके का भारत में विलय जैसे राजनीतिक विमर्श के मुद्दे जनहित के कारक नहीं बन पाए। केंद्र सरकार, भाजपा, अंतरराष्ट्रीय जगत, उपराज्यपाल और अलग-अलग गठबंधन करने वाले सियासी सूरमाओं के लिए स्थिर और स्पष्ट संदेश है। जम्मू, पीरपंजाल, चिनाब घाटी, कश्मीर घाटी में पाकिस्तान के सीमावर्ती इलाकों, दक्षिण कश्मीर घाटी में आतंक के गढ़ में मतदाताओं ने अपना एजेंडा साफ कर दिया है। बता दिया है कि दस साल बाद वे पहले से परिपक्व हो गए हैं। उन्हें अपने मुद्दे मालूम हैं और वे अपने हितैषी नेताओं के बारे में बेहतर तरीके से जानते हैं। यह भी कि किसी के उकसाने पर बहिष्कार का औजार बनने का मेलब बुनियादी और ढांचागत सहूलियतों का तंत्र विकसित करने में बाधाएं खड़ी करने के अलावा अपना योगदान न देना भी है।

सहूलियतें चाहिए तो निर्णायक जनादेश जरूरी है। अन्यथा जनता से जुड़ी नीतियों को नजरअंदाज करने का खामियाजा भुगतना ही पड़ता है।

पांच अगस्त 2019 से पहले भी राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित जम्मू-कश्मीर का जनादेश जाहिर करता है कि उसका सेकुलर ताना-बाना कितना सुरक्षित और मजबूत है। यदि कश्मीर घाटी में लोगों ने कारोबार और कैरियर की कश्मकश के बावजूद जमात-ए-इस्लामी जैसे कट्टर संगठन को तवज्जो देने के बजाय नेशनल कांफ्रेंस पर ज्यादा भरोसा जताया। दूसरी ओर जम्मू की जनता की जद्दोजहद ने भी भाजपा को चुनाव की जंग नहीं जीतने दी। लोग जानते हैं कि अनुच्छेद 370 खत्म होने के बाद से उपराज्यपाल के नेतृत्व में जो व्यवस्था चल रही थी, उसके पीछे दिशा निर्देश केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा सरकार के ही रहे हैं। नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस गठबंधन को शिकस्त देने के लिए बारामुला से निर्दलीय सांसद शेख रशीद की अवामी इत्तेहाद पार्टी और प्रतिबंधित जमात-ए-इस्लामी के बीच कराए गए समझौते का असर कश्मीर में ही नहीं पड़ा। भाजपा ने कश्मीर घाटी की 47 में से 28 सीटों पर चुनाव नहीं लड़ा। जम्मू क्षेत्र में डेमोक्रेटिक पीपुल्स आजाद पार्टी के सदर गुलाम नबी आजाद और जम्मू-कश्मीर अपनी पार्टी के संस्थापक अल्ताफ बुखारी के साथ पीपुल्स कांफ्रेंस के सज्जाद गनी लोन की चुनाव के समय अनदेखी भी भाजपा को भारी पड़ गई।

90 सदस्य वाली विधानसभा में बहुमत के लिए अवाम को भाजपा के नारों, दावों और संकल्प पर विश्वास नहीं हुआ। उन्हें लगा कि सारा प्रचार राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय छवि बनाने के लिए है। औद्योगिक विस्तार के लिए पूंजी निवेश, इंफ्रास्ट्रक्चर आदि पर खर्च के आंकड़े अविश्वसनीय और अवास्तविक हैं।

राज्य का दर्जा छीने जाने की कसक तो जम्मू-कश्मीर और लद्दाख तक है। इसकी संवेदनशीलता को ऐसे समझा जा सकता है कि चुनाव नतीजे आने से एक दिन पहले 7 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की गई है। याचिका में दो महीने में राज्य का दर्जा बहाल करने के अनुरोध के साथ बताया गया है कि अनुच्छेद 370 खत्म करने की वैधता पर अंतिम फैसले के 11 महीने बाद भी सॉलिसिटर जनरल के आश्वाशन के बाद भी केंद्र सरकार ने कुछ नहीं किया।

2014 के विधानसभा चुनाव में पहली बार सर्वाधिक 25 सीटें जीतने वाली भाजपा ने 28 सीटें हासिल करने वाली जम्मू-कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के साथ मिलकर दो बार सरकार बनाई थी। इसके बाद तीसरी बार केंद्र में मंत्री जितेंद्र सिंह और सांसद जुगल किशोर ने आम लोगों की सुनवाई नहीं की। यही कारण रहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव में सिर्फ जम्मू संभाग की दो ही सीट पर चुनाव लड़ने के बाद वोटों के प्रतिशत में बड़ी गिरावट आई। पार्टी से इसे समझने में देर हो गई। पूरी ताकत झोंकने के बाद भी भाजपा 2014 की स्थिति में सुधार नहीं कर पाई। भाजपा और मौजूदा केंद्र सरकार दुनिया को कभी भी यह नहीं बता पाएगी कि उसे 370 हटाने का क्या सिला मिला है। केंद्र सरकार ने 2019 में अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद विदेशी दलों को घाटी में घुमाया था। 16 देशों के प्रतिनिधियों को चुनाव भी दिखाया। बेमेल सरकार में शामिल होने का नुकसान महबूबा मुफ्ती को भी हुआ, जिनकी सीटें एक अंक में ही नहीं रह गईं, बेटी इलतिजा मुफ्ती परंपरागत सीट से हार गईं।

परिणाम इशारा करते हैं कि 2014 के बाद से अब तक ज्यादातर मतदाताओं के मन में भर गया कि भाजपा नेता विपक्ष के परिवारवाद और भ्रष्टाचार पर प्रहार तो करते हैं लेकिन खुद की खामियों पर गौर करने की जहमत नहीं उठाते हैं। पाकिस्तान पर आक्रामक रवैया अपनाते हैं। पीओके को वापस लाने का दावा करते हुए वहां के लोगों से नियंत्रण रेखा पार करने की अपील करते हैं। दूसरी ओर जम्मू- कश्मीर के लोगों को अनुच्छेद 370 खत्म करने की बात बार-बार याद दिला कर मानो कोई जख्म कुरेद देते हैं। ग्राम पंचायत, जिला विकास बोर्ड, नगर पंचायतों की जिम्मेदारी का जिक्र नहीं करते। उन्हें लगा कि आगे भी ऐसा ही होगा। भाजपा नेता जो अभी नहीं सुनते हैं, सत्ता में आने के बाद हो सकता हैं, उनकी ओर देखें भी नहीं। वहीं उपराज्यपाल की सर्वोच्चता के बाद भी विपक्ष की सरकार बनने पर उनकी बात और उनके मुद्दों को सही जगह उठाया जाएगा। पांच साल से सारा तंत्र ब्यूरोक्रेसी अर्थात नौकरशाही के हाथ में रहा है। अब लोकतंत्र यानी डेमोक्रेसी आएगी। अगर वे भाजपा में विश्वास जताएंगे तो तय है कि नौकरशाही के चंगुल से उन्हें अगले पांच और साल निजात नहीं मिलेगी। कश्मीर के युवाओं ने इसे वोटोक्रेसी का नाम दिया।

बेलगाम नौकरशाही से आजिज अवाम ने एकतरफा मन बना लिया था। अब नई सरकार तनातनी के बावजूद उपराज्यपाल, केंद्र सरकार और भाजपा के दावों की सच्चाई जनता को बताएगी। ध्यान रहे। जादू की उम्मीद में भाजपा नेता आम लोगों से जुड़े नहीं। उनके हक के लिए लड़े नहीं। परोक्ष रूप से पार्टी का शासन था। फिर भी प्रशासन से वे जनहित के काम ज्यादा नहीं करा पाए। तंत्र पर नियंत्रण में बाहरी लोगों को महत्व, हस्तक्षेप और उनके नीति-नियमों ने भी जनता को पार्टी और प्रशासन के प्रति बेरुखी बरतने के लिए मजबूर कर दिया। 25 लाख युवाओं की अनदेखी और बेरोजगारी के साथ-साथ बेवजह के बयानों ने भी भाजपा की बात बिगाड़ दी।

आम आदमी को नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस गठबंधन के दावे ज्यादा भरोसेमंद लगे। एक तरह से अगले पांच साल उन्होंने चुनाव की घोषणा से पहले ही विपक्ष को देने का मन बना लिया था। सत्ता पक्ष इसे परख नहीं पाया। स्थानीय कद्दावर नेताओं को टिकट न देने का प्रयोग किया गया। बाद में चुनाव का प्रबंधन भी दिल्ली से आयातित नेताओं के हाथ में आ गया। टिकट वितरण में मनमानी के साथ ही आर्थिक लाभ लेकर प्रत्याशी बनाने की बातें भी छिपी नहीं रह पाईं।

बुनियादी सुविधाओं से जुड़ी छोटी-छोटी बातें कैसे बड़ा निर्णय करवा देती हैं, जम्मू-कश्मीर में यह साबित हो गया। केंद्र सरकार और भाजपा के सुरक्षा, स्थिरता, विकास, अनुच्छेद 370 हटाने, राजनीतिक आरक्षण, राज्य के दर्जे की बहाली का वादा जैसे बड़े मुद्दे, बड़े दावे, बड़े वादे सब एक झटके में ध्वस्त हो गए। मतदाताओं ने एक ऐसे गठबंधन को सरकार बनाने का अवसर दे दिया, जिस पर देश विरोधी, पाकिस्तान परस्त, परिवारवाद और भ्रष्टाचार के आरोप लगाए गए। लोगों ने अपने अधिकारों के लिए लड़ने वालों को गले लगा लिया और बातों में ही दम भरने वालों को किनारे कर इंतजार करने के लिए कह दिया। पहले दौर में मतदान के आगाज से ही परिणाम का अंदाज लग गया था कि अंजाम क्या हो सकता है। व्यवस्था बदलने के लिए युवाओं में ज्यादा जोश दिखा। नौकरशाही के प्रति आक्रोश दिखा।

आकलन है कि अनुच्छेद 370 हटाने के बाद कि चिनगारी कहीं न कहीं दबी हुई है। बोल नहीं रहे थे क्योंकि डर अधिक था। भय का आतंक इस कदर हावी रहा कि उन्होंने गली-मोहल्ले, गांव-कस्बों की बुनियादी समस्या उठाने से भी गुरेज किया। अवाम को यह डर भी सताता रहा कि व्यवस्था नहीं बदलने पर बुलडोजर और मॉब लिंचिंग जैसे मामले कभी भी उनके आसपास का हिस्सा बन जाएंगे। फिर वे न तो आवाज उठा पाएंगे और न ही उनकी सुनी जाएगी। विधानसभा चुनाव में उन्हें इन मुश्किलात से सामना करने का साहस मिला। मौका मिलने पर उन्होंने त्रिशंकु विधानसभा बनाने के लिए भाजपा द्वारा अवामी इत्तेहाद पार्टी और जमात-ए-इस्लामी के साथ अघोषित गठबंधन को तरजीह नहीं दी। मतदाताओं को मतदान के समय ही मालूम था कि इंडिया गठबंधन में शामिल दलों को उनके स्पष्ट जनादेश से पूर्ण राज्य के दर्जे की बहाली में विलंब होगा। फिर भी उन्होंने भयमुक्त होने को प्राथमिकता दी। अब भी उनकी आवाज भले ही कम सुनी जाए, वे अपनी बात को बुलंद तरीके से बोल सकेंगे।

विचार

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं व राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं।

'मन की बात' के 10 साल और नई आशाएं

जब 3 अक्टूबर, 2014 को 'मन की बात' शुरू हुई थी तो किसी को पता नहीं था कि इसकी यात्रा अपने 10 वर्ष पूर्ण करेगी। 10 साल अनवरत चलने वाली प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' की श्रृंखला बहुत ही ऐतिहासिक है। यह भारतीय रेडियो के इतिहास की भी सबसे लम्बी बातचीत की श्रृंखला है। हमारे देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के माध्यम से अब 140 करोड़ से अधिक लोगों को संबोधित कर रहे हैं। भारतीय जनमानस को संबोधित कर रहे हैं। विश्व में फैले भारतीयों और भारत में रूचि लेने वाले लोगों को संबोधित कर रहे हैं। इस प्रकार प्रधान मंत्री अपने लोगों को संबोधित करते हैं। जब 'मन की बात' के 100 एपिसोड पूर्ण हुए थे तो मैंने एक अखिल भारतीय स्तर पर आकाशवाणी से ही प्रसारण हेतु एक रेडियो रूपक लिखा था 'मन की बात-जन-जन की बात'। इसमें देश व्यापी प्रतिक्रियाओं को संयोजित किया गया था। उस 100 एपिसोड के पूर्ण होने पर जश्न मनाया गया था और पूरे देश में एक सकारात्मक लहर थी। अब 10 वर्ष 'मन की बात' पूर्ण हो चुके हैं और यात्रा अब आगे बढ़ चुकी है। तो यह सकारात्मक बातचीत जन-जन में अपनी पहचान बना चुकी है। और सच में, सब में इसे सुनने की उत्कंठा कम कभी नहीं हुई। अपितु हर बार नवीन बनकर कुछ नया ही कहती 'मन की बात' भारत के लिए एक सकारात्मक बयार ही बनकर आई।

भारत अब विजन 2047 के संकल्प यात्रा पर है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने विजन 2047 को बहुत ही बेबाकी से भारत के समक्ष रखा है। भारतीय प्रधान मंत्री ने सकारात्मक संवाद 'मन की बात' के माध्यम से भी विजन 2047 के संकल्प को कई बार दुहराया। इसका असर यह हुआ है कि भारत का युवा वर्ग ज्यादा अपने भविष्य को सुरक्षित व असरदार बाने की कोशिश में जुट गया है। वह यह चाहता है कि हमारे देश का गर्व और गौरव दोनों बढ़े। वह यह जानता है कि बिना हम युवाओं के सशक्त हुए भारत विजन 2047 के संकल्प पर खरा नहीं उतर सकता। 'मन की बात' का यह प्रधान मंत्री द्वारा किया जा रहा संवाद इस तरह युवा दिल का मिशन बन गया है।

अपनी तीसरी बार प्रधान मंत्री पद की जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए रेडियो-यात्रा को भी अविस्मरणीय यात्रा बनाने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत के पहले ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्हें स्वयं पर संतोष है। जिन्हें अपनी रेडियो यात्रा पर भी बात करते हुए प्रसन्नता होती है। 114वें संवाद कार्यक्रम में उन्होंने खुद कुछ बातें रखी कि 'मन की बात' की इस लंबी यात्रा के कई ऐसे पड़ाव हैं, जिन्हें मैं कभी भूल नहीं सकता। 'मन की बात' के करोड़ों श्रोता हमारी इस यात्रा के ऐसे साथी हैं, जिनका मुझे निरंतर सहयोग मिलता रहा। देश के कोने-कोने से उन्होंने जानकारियां उपलब्ध कराई। 'मन की बात' के श्रोता ही इस कार्यक्रम के असली सूत्रधार हैं। आमतौर पर एक धारणा ऐसी घर कर गई है, कि जब तक चटपटी बातें न हो, नकारात्मक बातें न हो तब तक उसको ज्यादा तवज्जोह नहीं मिलती है। लेकिन 'मन की बात' ने साबित किया है कि देश के लोगों में पॉजिटिव जानकारी की कितनी भूख है। पॉजिटिव बातें, प्रेरणा से भर देने वाले उदाहरण, हौसला देने वाली गाथाएँ, लोगों को, बहुत पसंद आती हैं। जैसे एक पक्षी होता है 'चकोर' जिसके बारे में कहा जाता है कि वो सिर्फ वर्षा की बूंद ही पीता है। 'मन की बात' में हमने देखा कि लोग भी चकोर पक्षी की तरह, देश की उपलब्धियों को, लोगों की सामूहिक उपलब्धियों को, कितने गर्व से सुनते हैं। 'मन की बात' की 10 वर्ष की यात्रा ने एक ऐसी माला तैयार की है, जिसमें, हर एपिसोड के साथ नई गाथाएँ, नए कीर्तिमान, नए व्यक्तित्व जुड़ जाते हैं।

यह बातें सुनकर किसी प्रधानमंत्री के अधरों से भारतीय जनता सुखद अनुभूति करती है। मधुमय शब्दों में जिस प्रकार कृतज्ञता देकर श्रेय भारतीय नागरिकों को दिया है, यह निःसंदेह उनका बड़प्पन है। सच तो यह है कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी रेडियो यात्रा के माध्यम से भी तो देश की उन्नति, विकास एवं यश में ही अभिवृद्धि करने का कार्य किया है। उन्होंने देश के नागरिकों के दिल को जीता है और देश के युवा मन को प्रोत्साहित कर, उत्साहित कर, अभिप्रेरित कर राष्ट्र निर्माण में लगाया है। भारत में 'मन की बात' को जिस प्रकार से कुछेक ने मजाक बनाया। जिस प्रकार से 'मन की बात' को कुछेक ने नकारने की कोशिश की। वे सभी कोशिशें बेकार हो गयीं। भारत की जनता ने 'मन की बात' को अपनाया। भारत की जनता ने 'मन की बात' के असर को अपने भीतर हुए असर के रूप में प्रदर्शित किया। यह सब इसलिए हुआ क्योंकि यह केवल रेडियो यात्रा प्रधानमंत्री की नहीं थी अपितु सच्चे मायने में जो अपने संकल्प प्रधानमंत्री ने देश को समर्पित किया है, उस संकल्प की यात्रा थी और वह यात्रा देश निर्माण की यात्रा बन गयी, इसलिए यह सबकुछ हुआ है।

नए भारत का निर्माण प्रधान मंत्री के 'मन' से ज्यादा 'संकल्प' का विषय है। इस रेडियो संवाद के माध्यम ने यह सिद्ध किया है। उन्होंने 'मन की बात' के माध्यम से सहज ही भारत के 'मन' को परिवर्तित करने का प्रयास किया है। देश में स्टार्ट-अप के माध्यम से आज यदि युवा कुछ कर रहे हैं तो उसके पीछे 'मन की बात' का भी शत-प्रतिशत योगदान है। प्रधानमंत्री के 'मन की बात' सुनकर यह समझ आता है कि जैसे कच्चे घड़े को कुम्हार संवारता है। थपकियाँ देकर नए घड़े को तैयार करता है। प्रधान मंत्री 'मन की बात' के माध्यम से युवाशक्ति को उसी तरह संवार रहे हैं। उनके भविष्य को नई राह दिखा रहे हैं, ऐसा कहा जाए तो कोई अतिश्योक्तिपूर्ण बात न होगी। 'मन की बात' की प्रेरणा से अब भारत में लाखों युवा उद्यमी अपनी भाग्य स्वयं लिख रहे हैं। 'मन की बात' सुनकर दान और सहयोग की भावना भारत में बढ़ी है। भारत के लोग यह आज सोच रहे हैं कि हमारा भारत कैसे महान बनेगा। कैसे आगे बढ़ेगा। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा है।

'मन की बात' कार्यक्रम का परिवर्तनकारी प्रभाव अब यह है कि देश की उपलब्धियों और लोगों के सामूहिक प्रयासों पर देश अपनी प्रगति के नए अध्याय लिखने जा रहा है। कार्यक्रम की अब तक 114 कड़ी प्रसारित हो चुकी। लोकतांत्रिक मर्यादाओं की अप्रतिम मिसाल पेश करते हुए 2019 और 2024 के लोकसभा चुनाव की आदर्श आचार संहिता के दौरान इसका प्रसारण नहीं किया गया तो उस समय 'मन की बात' लोग प्रतीक्षा करते थे। 'मन की बात' के प्रभाव का विश्लेषण किया गया जब-जब तो इसमें कई दिलचस्प बातें सामने आईं और अब जब देश में यह 'मन की बात' 10 साल के आगे की अपनी यात्रा में निकल चुकी है तो इसमें नई आशाएं अपना अस्तित्व बनाए हुई हैं, यह इसकी शक्ति है। प्रधान मंत्री के 'मन की बात' के पीछे की संकल्पनाएँ 10 वर्ष पहले भी अभिनंदनीय थीं आज अनुकरणीय भी हो चुकी हैं। निःसंदेह 10 वर्षों का 'मन की बात' का इतिहास प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सबसे श्रेष्ठ सर्जना है और राष्ट्र निर्माण की अतुलनीय अभिव्यंजना है। आने वाले समय में जब नए जोश से देश अपने स्वर्णिम अध्याय लिखेगा तो निःसंदेह बिना 'मन की बात' के उल्लेख के कोई भी ऐतिहासिक राष्ट्र निर्माण की कृति पूर्ण नहीं मानी जाएगी।

हमारे लिए जो कुछ है वह आज है ...

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

वैसे तो जीवन में हर किसी का कोई बड़ा सपना होता है, लेकिन सपनों के अनुरूप सब कुछ व्यवस्थित हो, यह कतई आवश्यक नहीं। निरंतर तन-मन-धन के समर्पण का प्रतिफल तत्काल मिल सके, इसकी संभावनाएं भी भविष्य के गर्भ में छिपी होती हैं। कल का तो हम महज अनुमान ही लगा सकते हैं, लेकिन लक्ष्य को सार्थक सिद्ध करने के लिए हमारे पास आज होता है। हर पल हर समय हमारे पास केवल और केवल आज ही हुआ करता है। इसलिए कल के भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए आज का सदुपयोग अत्यंत आवश्यक है। इसलिए रोज-दर-रोज यह जो आज है, इसे अकारथ न जाने देना, अंततः सफलता का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होता है।

जब हम आज की उपयोगिता को सुनिश्चित करते हुए कोई कार्ययोजना बनाते हैं और उस पर अमल करने को तत्पर रहते हैं, एक प्रकार से लक्ष्य की ओर बढ़ रहे होते हैं। इस बीच हमें यह संकेत बहुत ही स्पष्ट तौर पर मिलते चले जाते हैं कि हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। विचारों को जब तक व्यवहार के रूप में क्रियान्वित नहीं किया जाए, तब तक बड़ी तो बड़ी लेकिन छोटी-छोटी उपलब्धियों को भी नहीं पाया जा सकता। दरअसल जब हम चलना शुरू कर देते हैं, मंजिल पास आने लगा करती है। सफर चाहे जितना लंबा हो लेकिन चलते-चलते दूरियां पटने लगती है। अतीत में जीना या फिर भविष्य की कल्पनाओं में खोए रहना, हमारे आज को व्यर्थ सिद्ध कर देता है।

ऐसी स्थिति में जबकि हम अपने आज को व्यर्थ कर देते हैं, लक्ष्य तो और भी अधिक दूर हो जाता है। कोई भी काम करने से ही पूर्णता की ओर बढ़ता है, केवल और केवल खयाली पुलाव तो अपने आपको भ्रमित करने का ही कारण बना करता है। वैसे यह कोई आवश्यक नहीं कि आज का हमारा प्रयास किसी सार्थक मुकाम पर पहुंचे ही पहुंचे। बहुत संभव है कि हमारे प्रयास निरर्थक सिद्ध होते दिखाई दें। लेकिन निरर्थक सिद्ध हुए प्रयासों में भी निराशा की वजह सामने आ जाती है। जिसके चलते भरपूर आत्मविश्वास के साथ पुनर्प्रयास का मार्ग प्रशस्त होता है। असफलता के बाद सफलता भी मनोबल में तीव्र वृद्धि करती है। अंतर्मन में भी नई ऊर्जा एवं चेतना का संचार होने लगता है।

जो हमें आज या आज से करना चाहिए, उसे कल पर टालना, एक प्रकार से परिस्थितियों से किनारा करना होता है। कुछ अंशों में ऐसी मानसिकता भीरूपन की निशानी भी हुआ करती है। इसके चलते साधारण से साधारण कार्य भी दुष्कर जान पड़ता हैं। लेकिन जिनका मनोबल सशक्त होता है, प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अनुकूलता में तब्दील करने का साहस रखते हैं। यही साहस उन्हें ऊर्जा देता है और वे असंभव को संभव सिद्ध करने का सामर्थ्य भी रखने लगते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जैसे-जैसे छोटे बड़े लक्ष्य को हासिल किया जाने लगता है, वैसे वैसे आत्मविश्वास ही इतना पुख्ता हो जाता है कि फिर कुछ भी असंभव नहीं होता।

इतिहास साक्षी है कि एकल प्रयास के बलबूते पर देखते ही देखते किसी शख्सियत के लाखों करोड़ों अनुयायी बन गए। एक विचार और एक संकल्प को साथ लेकर असंभव से लगने वाले लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयास किया गया तो उसमें सफलता प्राप्त की। ऐसी ही शख्सियत इतिहास के पन्नों में प्रमुखता पाती है। व्यक्तिगत सामाजिक एवं सार्वजनिक जीवन में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिसमें शून्य से शिखर तक का सफर पूर्ण किया गया है। हर किसी क्षेत्र में ऐसे कीर्तिमान दर्ज करने वाली शख्सियत के बारे में लगभग हर कोई जानता है। सचमुच साधारण से असाधारण बनने का नुस्खा केवल और केवल आज के सदुपयोग पर ही निर्भर है।

वैसे भी किसी के प्रति सार्थक आशीर्वाद यही हो सकता है कि वह शतायु हो। ऐसे में आम आदमी अधिक से अधिक कितना जिएगा ! यही कोई अधिक से अधिक शतायु ही होगा। व्यावहारिक रूप से इसे परिपूर्ण आयु के रूप में लिया जाता है। और इधर सांस-दर-सांस हमारी अपनी जीने की आयु निरंतर कम से कमतर होती जा रही है। ऐसे में यदि आज को हमने व्यर्थ जाने दिया, तो इसकी तो कभी पूर्ति हो ही नहीं सकेगी। केवल और केवल एक सांस के बदले संसार भर की दौलत न्योछावर कर दी जाए, तो भी एक सांस तक नहीं खरीदी जा सकती। ऐसे में हमें चाहिए कि हम अपने सकारात्मक लक्ष्य की दिशा में प्रण-प्राण से जुट जाएं, और आज तो आज लेकिन एक भी सांस कभी व्यर्थ न जाने पाए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रीतम लखवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

किचनगुमिया रोग से पीड़ित पति की आपबीती

नए वैरियंट के साथ इस बिरादरी को किचनगुमिया रोग ने घेर लिया है। अब ये पति बिरादरी किचन में पाई जाती है। पतिदेव के नाम से संबोधित ये प्राणी किचन की हर प्रणाली से वाकिफ हो गया है। चीन से आयातित कोरोना वायरस के देश में फैले प्रभाव से संक्रमित होकर घर बैठ चुकी और वर्क फ्रॉम होम का संताप झेलती पति बिरादरी को फुरसत काटने के लिए घर की लुगाइयों ने सीधे किचन का रास्ता दिखाया था।

नई सदी में रोगों के नित नए वैरियंट आ रहे हैं। इससे स्वास्थ्य महकमा हैरान है तो दवा महकमा बाग-बाग हो रहा है। इधर, पति बिरादरी पर नया संकट आ गया है। नए वैरियंट के साथ इस बिरादरी को किचनगुमिया रोग ने घेर लिया है। अब ये पति बिरादरी किचन में पाई जाती है। पतिदेव के नाम से संबोधित ये प्राणी किचन की हर प्रणाली से वाकिफ हो गया है। चीन से आयातित कोरोना वायरस के देश में फैले प्रभाव से संक्रमित होकर घर बैठ चुकी और वर्क फ्रॉम होम का संताप झेलती पति बिरादरी को फुरसत काटने के लिए घर की लुगाइयों ने सीधे किचन का रास्ता दिखाया था। तब किसने सोचा था कि ये किचनगुमिया एक दिन उन पर ही भारी पड़ने वाला है। तत्समय पतिदेवों ने शौकिया तौर पर किचन में गैस सिलेंडर की नॉब ऑन की थी और भोजन में सब्जी, चपाती और चाय बनाते-बनाते सोशल मीडिया पर रील्स, फोटो पोस्ट की थी तो उसे सामाजिक तौर पर वाहवाही मिली थी, तब किसने सोचा था कि यह शौकिया किचनगुमिया एक दिन उसकी गले की हड्डी बन जाएगा। सोशल मीडियार्थियों ने जब उनकी हौसला अफजाई की थी तो उस समय पति बिरादरी फूल के कुप्पा हो गई थी। कोरोना के तीन चरण में पति किचनगुमिया रोग से बुरी तरह पीड़ित रहे थे। अब तक इस रोग का निदान नहीं मिला है। यहां तक कि इसके टीके तक विकसित नहीं हो पाए। बेचारे! पतिदेव कोरोना काल में किचन में जा-जाकर हर प्रकार के भोज्य पदार्थ बनाने में इतने एक्सपर्ट हो गए कि पत्नियों को किचन से निवृत्ति का इससे बेहतर कोई 'ऑप्शन' नजर नहीं आया। अब प्रायः पति नामक जीव किचन में ही पाया जाता है। इसे स्वास्थ्य विभाग के एक्सपर्ट ने गंभीर माना है। इसका नया वैरियंट भी खूब चर्चा में है। इसे 'मास्टर शेफ' के रूप में जगत जाना जाता है। टीवी पर पुरुष बिरादरी भी खाना बनाते दिख जाती है और उनकी पत्नियां घर पर बैठकर इसका आनंद उठाती हैं और बड़े गर्व से कहती हैं कि हमारे 'ये' हैं ना बहुत अच्छा खाना बना लेते हैं। मटर पनीर तो लाजबाव बनाते हैं। इनकी बनाई भिंडी मसाले का तो जबाव ही नहीं। इनकी गुजराती डिस भी बहुत बेहतरीन होती है। इनके दोस्त तो अंगुली चाट-चाट के अपनी अंगुली छोटी कर बैठे हैं। ये हर राज्य की स्पेशल डिस बनाने में एक्सपर्ट हो गए हैं। साउथ इंडियन डिस बनाते-बनाते तो इनके पास पड़ोस की भाभियों की भीड़ जमा होने लगी है। पड़ोसन भाभियों की गैंग रेसिपी की डिमांड करने लगी है। कुछ तो 'इनसे' ट्रेनिंग लेने की जिद पर अड़ गई हैं। एक दिन पड़ोसन कह रही थी कि आपके 'वो' हमारे 'उनको' ट्रेनिंग देंगे क्या? वो क्या है ना कि मैं भी तो किचन से 'वीआरएस' चाहती हूं। इधर, लोग चिकनगुनिया के कारण अस्पताल के चक्कर लगा रहे हैं और इधर, हमारी पति बिरादरी अभी भी किचनगुमिया के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाई है। इधर, पड़ोस की भाभियों से घिरी पति बिरादरी उन्हें रेसिपी समझाने में व्यस्त है।

कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य

स्मिता कुमारी

लेखिका सत्यमेव मानसिक विकास केंद्र की डायरेक्टर एंव पुनर्वास मनोवैज्ञानिक हैं।

ऑफिस में काम या जिम्मेदारी के नाम पर प्रेशर

हर साल 10 अक्टूबर को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने के लिए विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इस साल की थीम कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने की बातें करती हैं। कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य या मानसिक स्वास्थ्य से कार्यस्थल कैसे प्रभावित होता है उसके बारे में थोड़ा समझने की कोशिश करते हैं -

1. क्या आपके कार्यस्थल पर जाति, लिंग, धर्म, निवास क्षेत्र, भाषा, आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव वाले शब्दों का इस्तेमाल होता है?

2. क्या जब आपने तनाव महसूस किया तो कार्यस्थल पर अपने अधिकारी या सहकर्मी से सहजता के साथ और बिना पूर्वाग्रह की भय के इस बात को साझा कर पाते हैं? और बात करने पर आपके मानसिक स्वास्थ्य को महत्व देने में उनलोगों ने कितनी भागीदारी निभाई है?

3. कई बार शादीशुदा महिला या बच्चे होने के बाद महिला को घर की जिम्मेदारी के साथ कार्यस्थल की जिम्मेदारी भी निभानी पड़ती है, ऐसे में आपके अधिकारी का व्यवहार आपके साथ और आपके उन क्लीग के साथ कैसा रहा जिन पर घर गृहस्थी या बच्चे की जिम्मेदारी नहीं होती है। जो हर वक्त खुद को उपलब्ध बताकर 'जी सर, जी मैम' करते हैं। क्या आप वहां जाने-अनजाने कार्य का दबाव खुद पर महसूस करते हैं, या प्रमोशन, सैलरी और छुट्टी सम्बंधित विषयों पर भेदभाव सहते हैं?

4. क्या आपने कभी कार्यस्थल पर होने वाले दुर्व्यवहार के कारण जॉब छोड़ा या बजट की कमी के कारण कम्पनी ने आपको जॉब से निकाला तो आपके सहकर्मी, आपके अधिकारी ने आपके मानसिक पीड़ा को समझने और नई जॉब शुरुआत करने में आपकी मदद की या आपसे मानवीय व्यवहार किया?

5. क्या समान पद पर होने के कारण दूसरों के एक्स्ट्रा टाइम कार्य करने से या ऑफिस के कार्य के लिए उपस्थित रहने की तारीफ से आपको सीधे तौर पर या इनडायरेक्टली एक्स्ट्रा टाइम देकर काम के लिए, प्रमोशन के लिए दबाव दिया जाता है?

6. क्या मानसिक तनाव की बात करने पर आपसे समानुभूति के साथ व्यवहार करते हुए आपको रेस्ट या अन्य मनोवैज्ञानिक चिकित्सा का लाभ लेने का सहयोग यह कहकर दिया जाता है कि थोड़े दिन चाहो तो छुट्टी लेकर तबियत ठीक करके आओ, इस कंपनी में आपकी जॉब सुरक्षित रहेगी?

7. क्या महिला कर्मचारी के लिए अलग वाशरूम, चाइल्ड केयर रूम, बच्चे को स्तनपान कराने की रूम, पीरियड लीव या उस दौरान किसी को अत्यधिक दर्द होने पर थोड़े देर रेस्ट और सिकाई करने की व्यवस्था है? क्या आपका ऑफिस महिलाओं के अनुकूल है? या इसे इस रूप में लिया जाया है कि यह तो हर महीने की कहानी है, इसके लिए आपको आदत हो जानी चाहिए?

ऐसी कई बातें हैं जो दूसरे तरीके से भी आपके मानसिक तनाव या समस्या को बढ़ाती है जैसे- सफलता का दबाब, लोन यानी कर्ज का बोझ, परिवार के प्रति जिम्मेदारियों का दायित्व, बड़े-बड़े सपनों का बोझ, समाज और रिश्तेदारी में रुतबा दिखाने की शौक, परिवार के सपनों को पूरा करने का बोझ, नौकरी खोने का डर आदि। इस तरह कार्य स्थल का तनाव आपके जीवन को प्रभावित करता है और ठीक वैसे ही आपके जीवन के ये तनाव कार्यस्थल पर आपके कार्य को प्रभावित करते हैं, जैसे -

जब आप मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होते तो आपके कार्य की क्षमता प्रभावित होती है और आप जिस लक्ष्य को सामान्य रूप से प्राप्त कर सकते है वह भी प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है।

आप मानसिक रूप से परेशान होने पर खुद के कार्य को अपने अधिकारी के सामने बेहतर ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाते। हो सकता है आपका आईडिया आपके कार्यस्थल के कार्यों और आपको दोनों की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण साबित होता, अगर आप उसे बेहतर तरीके से प्रस्तुत कर पातें। आप मानसिक रूप से स्वस्थ होंगे तो अपने क्षेत्र की नई कौशलों को सीखने में और अपनी योग्यता को बढ़ाने में कार्य कर सकते हैं, जिससे आप अपने लिए नई दिशा तैयार कर सकते हैं।

मानसिक समस्या को अनदेखा करने से आप सिर्फ अपनी जिंदगी को ही प्रभावित नहीं करते, बल्कि आपके प्रियजनों की भी जिंदगी प्रभावित होती है, याद रखिए कम पैसे में भी खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं। आपके अपने आपकी सफलता की सपने देखते हैं, मगर जो सच में आपके अपने होते हैं आपकी जिंदगी के उन उलझनों को भी साथ खड़े होकर सुलझा देते हैं, जो आपको मानसिक रूप से कमजोर बनाती है।

कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य पर बात करना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि एनसीआरबी 2021 के रिपोर्ट के अनुसार मानसिक तनाव या समस्या के कारण 25.6 प्रतिशत दिहाड़ी मजदूर, 12.3 प्रतिशत स्वरोजगार, 9.7 प्रतिशत नौकरीपेशा, 6.6 प्रतिशत किसान और 8.4 प्रतिशत बेरोजगारों ने आत्महत्या कर लिया जो बेहद ही चिंतनीय है। अभी हाल में पुणे की सीए द्वारा मानसिक तनाव के कारण आत्महत्या की घटना हो या कार्यस्थल के तनाव और टारगेट अचीव करने की दबाव के कारण लोगों में हार्टअटैक की बढ़ती घटनाएं हो, यह सब कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य की चर्चा के महत्व को इसलिए भी बढ़ावा दे रही है क्योंकि कार्य के दबाव और असफलता की डर, जिम्मेदारियों का भय ने व्यक्ति और उसके रिश्ते दोनों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। रतन टाटा ने कहा था - जीवन में आगे बढ़ने के लिए उतार-चढ़ाव बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ईसीजी में एक सीधी रेखा का मतलब बै कि हम जीवत नहीं हैं। इसलिए जीवन में कार्य या कार्यस्थल पर उतार-चढ़ाव तो आते रहेंगे, मगर जरूरी है मानसिक स्वास्थ्य को महत्व देने की, उस पर बातचीत करने की और मजबूती से अपने कार्य और कार्यस्थल के वातावरण को मानसिक स्वास्थ्य के अनुकूल बनाने की। यह एक कर्मचारी और अधिकारी दोनों की नैतिक जिम्मेदारी है कि वे एक-दूसरे के मानसिक स्वास्थ्य को महत्व देते हुए कार्य की सफलता को महत्व दें।

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

'लोकनायक जयप्रकाश नारायण की वैचारिक यात्रा की बुनियाद अहिंसा है'

1963 में अमेरिकी पत्रकार वेल्स हेंगन ने एक किताब लिखी जिसका नाम था 'आफ्टर नेहरू हू ?' इस किताब में नेहरु के आठ संभावित उत्तराधिकारियों के नाम का जिक्र किया गया है जिसमें हर एक पर एक अध्याय लिखा गया है इसमें सातवें व्यक्ति के तौर पर जिस नेता के बारे में संभावना व्यक्त की गई थी वे थे जयप्रकाश नारायण, जो समाज में परिवर्तन की संभावनाओं को अपने में समेटे हुए थे। जे.पी. के नाम से लोकप्रिय लोकनायक जयप्रकाश नारायण का जन्म बिहार के एक गांव सिताबदियारा में 11 अक्टूबर 1902 में हुआ था। जेपी की जीवन यात्रा व विचार यात्रा क्रमशः अहिंसा और उस पर आधारित अहिंसक व लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था को कायम रखने की ओर बढ़ते जाने की यात्रा है। नौ साल की उम्र में उन्हें पटना के एक सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाया गया जहां वे प्रतिभाशाली और परिश्रमी छात्र साबित हुए। अपने छात्र जीवन से ही जेपी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित रहे और उनकी सक्रिय भागीदारी भी रही। उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन के मुख्य नेताओं में से एक तथा भारत के समाजवादी आंदोलन के शीर्ष नेता और सिद्धांतकार जयप्रकाश नारायण जिनके जीवन और विचारों के अध्ययन के बिना स्वतंत्र भारत की राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था को समझना नामुमकिन है। असहयोग आंदोलन के समय जब गांधी जी ने युवाओं से सरकारी शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार करने का आह्वान किया था। जेपी ने गांधी के प्रति और उपनिवेशवादी आंदोलन में अपनी में प्रतिबद्धता के चलते पटना कॉलेज छोड़कर कांग्रेस द्वारा स्थापित बिहार विद्यापीठ में पढ़ना पसंद किया। 1922 में अपनी पत्नी प्रभावती को गांधी जी के आश्रम में छोड़कर जेपी उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका चले गए। अमेरिका में उन्हें काफी आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। अमेरिका के प्रवास के दौरान जेपी मार्क्सवाद की ओर आकर्षित हो गए थे। विसकोंसिन विश्वविद्यालय के प्रगतिशील माहौल में उन्होंने मार्क्स, लेनिन,ट्राटस्की,प्लेखानोव और रोजा लक्सेमबर्ग की किताबों का गहन अध्ययन किया। अमेरिका में उन्हें एक स्नाकोत्तर छात्रवृत्ति भी मिली। एम.एन.राय का भारत संबंधी लेखन पढ़ने के बाद वे अपने आप को मार्क्सवादी मानने लगे। सात वर्ष अमेरिका में रहने के बाद 27 वर्ष की आयु में जेपी भारत लौटे। प्रभावती गांधी जी से बहुत प्रभावित थीं, गांधी जी की प्रेरणा से प्रभावती ने जेपी की अनुमति के बिना ब्रह्मचर्य का व्रत ले लिया था, प्रभावती ने उन्हें पत्र लिखकर अनुमति मांगी थी लेकिन जेपी ने उन्हें समझाया था कि इतने बड़े फैसले पत्रों के माध्यम से नहीं लिए जा सकते है,जब मैं भारत लौटूंगा तब हम इस पर बात करेंगे लेकिन प्रभावती ठान चुकी थी कि वे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेंगी और उन्होंने गांधी जी के समझाने के उपरांत भी इस व्रत को लिया जिसका पालन आजीवन जेपी ने भी किया। गांधी जी ने जेपी को दूसरा विवाह करने का प्रस्ताव भी दिया था लेकिन जेपी ने इसे ठुकरा दिया था। जे पी प्रारंभ में मार्क्सवाद से प्रभावित थे और कुछ मामलों में गांधी की आलोचना करते थे। स्वतंत्रता और समानता को आधारभूत मूल्यों के रूप में स्वीकार करते हुए भी जेपी का आदर्श सोवियत नमूने का समाजवाद था। गांधी से मिलने जब जेपी वर्धा गए थे,वहीं सेवाग्राम आश्रम में उनकी मुलाकात नेहरू से हुई। नेहरू ने उन्हें इलाहाबाद आकर कांग्रेस के लेबर रिसर्च डिपार्टमेंट का चार्ज संभालने के लिए कहा। जेपी मार्क्सवादी थे और गांधी से उनकी काफी असहमतियां थीं इसके बावजूद वे कम्युनिस्टों की कांग्रेस विरोधी भूमिका को भी नापसंद कर रहे थे। उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन में उन्होंने कांग्रेस का साथ देने का निर्णय लिया और राष्ट्रवादी आंदोलन में सक्रिय हो गए। 1932 के दूसरे असहयोग आंदोलन में जब गांधी,नेहरू और कांग्रेस के कई कद्दावर नेता जेल में थे,उस समय उन्होंने कांग्रेस के महामंत्री के रूप में पूरे देश में आंदोलन का संचालन किया। अंत में जेपी को भी गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें नासिक जेल भेज दिया गया जहां उनकी मुलाकात अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता,एम.एच. दांतवाला,मीनू मसानी जैसे कई और नेताओं से हुई। इन नेताओं से विचार विमर्श के बाद कांग्रेस के भीतर ही कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया और उसके महासचिव पद की जिम्मेदारी भी जेपी ने संभाली। 'व्हाई सोशलिज्म' नामक अपने निबंध में जेपी महात्मा गांधी के ट्रस्टीशिप और मशीनों के बारे में उनकी अवधारणाओं की खुलकर आलोचना करते है। जेपी कहते है कि 'बिना सामाजिक संबंधों को बदले हुए हृदय परिवर्तन की बात करना बेमानी है।' 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्हें हजारीबाग जेल में गिरफ्तार कर लिया गया था। जहाँ से वे जेल की दीवार लांघकर भाग निकले थे। भूमिगत आंदोलन चलाने में जेपी की महत्वपूर्ण भूमिका रही और इसी घटना ने उन्हें जनता के बीच लोकप्रिय बना दिया। गांधी की रणनीति के विपरीत जेपी पहले भी स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलनों में हथियारों के प्रयोग का निषेध पूरी तरह से नहीं करते थे। जेपी के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार की मशीनरी को ठप्प करने के लिए कई क्रांतिकारी गतिविधियां की गईं। 1943 में उन्हें दोबारा गिरफ्तार किया गया और लाहौर जेल में भेज दिया गया। लाहौर जेल में रहने के दौरान जेपी एक वैचारिक संक्रमण के दौर से गुजर रहे थे। जेपी का सोवियत आदर्श से मोहभंग हो गया था जिसमें स्टालिन की नीतियों, सोवियत रूस में व्यक्तिगत स्वतंत्रता के हनन,रूस का संकीर्ण राष्ट्रवाद और पूंजीवादी शक्तियों से उसकी सांठगांठ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। साथ ही जेपी साध्य साधन की एकता के प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करने लगे। इस विचार प्रक्रिया ने उन्हें तत्कालीन पश्चिमी समाजवादियों के बीच लोकप्रिय लोकतांत्रिक समाजवाद के सिद्धांत के प्रति आकर्षित किया। 1946-47 में जेपी ने अपने दो लेखों 'समाजवाद की ओर' और 'समाजवाद की मेरी तस्वीर' में सर्वहारा के अधिनायकत्व की रूसी अवधारणा को पूरी तरह से ध्वस्त किया और यह स्वीकार किया कि समाजवाद के लिए हिंसक क्रांति न तो वांछनीय है और न ही अनिवार्य। इस दौर में वह एक हद तक गांधी के विचारों के प्रति भी सकारात्मक रुख अपनाने लगे थे। गांधी ने कैबिनेट मिशन के सामने यह शर्त रखी कि जब तक जेपी और लोहिया को रिहा नहीं किया जाएगा तब तक वे वार्ता शुरू नहीं करेंगे। अप्रैल 1946 में दोनों नेताओं को रिहा किया गया, जनता के द्वारा पराक्रमी नायकों की तरह उनका स्वागत किया गया। लोकतंत्र में अपनी पूरी आस्था प्रकट करते हुए उन्होंने बड़े उद्योगों को राज्य के अंर्तगत लाने के लिए चुनाव के माध्यम से परिवर्तन की संभावना को स्वीकार किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जेपी ने सोशलिस्ट पार्टी की कमान संभाली लेकिन चुनावी राजनीति से जल्द ही उनका मोहभंग हो गया। इसके बाद वे लगातार वैचारिक संक्रमण और वैचारिक मुकामों से गुजरते रहे जिनका विश्लेषणात्मक वर्णन स्वयं उन्होंने अपनी आत्मकथा 'मेरी विचार यात्रा' में किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जेपी ने भारतीय लोकतंत्र के लोकतांत्रिक होने की सीमाओं पर विचार करना शुरू किया। भारत जैसे विशाल देश में आदर्शपूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था के साकार होने की संभावना अत्यंत कम है इसलिए उन्होंने विकेंद्रीकरण, सामुदायिक स्वायत्तता, ग्राम सुधार जैसे कार्यक्रमों पर जोर दिया। इसी के साथ जेपी ने साधनों की शुद्धता के प्रश्न पर अपने विचार भी रखे। जेपी ने जनता की सीधी भागीदारी वाले लोकतंत्र और रेडिकल विकेंद्रीकरण के पक्ष में कई सूत्रबद्ध तरीके से तर्क पेश किए जो साठ के दशक में बुद्धिजीवियों के बीच विमर्श का केंद्र रहे। जेपी विनोबा के साथ भूदान आंदोलन में भी सक्रिय रहे,इसी समय 1964 में नागालैंड में शस्त्र विराम,1972 में चंबल के डाकुओं का समर्पण,1970 का मुशहरी प्रयोग उल्लेखनीय घटनाएं हैं। जेपी को 1965 में मैगसेसे पुरुस्कार से भी नवाजा गया है। राष्ट्रीय मसलों के साथ साथ अंतरराष्ट्रीय मसलों पर भी सक्रिय रहे। तिब्बत के सवाल पर दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय परिषद का आयोजन और बांग्लादेश के सवाल पर विश्व जनमत के निर्माण का उनका कार्य बहुत सार्थक प्रयास रहा।

1957 में लिखे अपने लेख 'फ्रॉम सोशलिज्म टू सर्वोदय' में उन्होंने समाजवादी सिद्धांत और कार्यक्रम की आलोचना की। यहां उन्होंने लोकनीति को राजनीति से बेहतर बताया। उनका तर्क था कि स्वतंत्रता आंदोलन को लोकनीति के आईने में ही देखना चाहिए। जेपी का विचार चिंतन हमेशा लोकतंत्र और राष्ट्रवाद से जुड़ी समस्याओं पर केंद्रित रहा। उनकी नजर राष्ट्र और लोकतंत्र के बीच की अन्योन्य क्रिया पर टिकी रही। सरकार के कार्यों का मूल्यांकन उन्होंने हमेशा उसकी जन-वैधता के आईने में किया। यहां वे गांधी के सर्वोदय के दर्शन को स्वीकारते हुए दिखाई देते हैं। सात्विक समाजवाद की अवधारणा भी प्रस्तुत करते हैं जो लोक- प्रक्रिया के माध्यम से संचालित होगा। उन्होंने साठ के दशक में बनारस में गांधी अध्ययन संस्थान की स्थापना की जिसके निर्देशक पद के लिए ई.एफ.शुमाकर को आमंत्रित किया था हालांकि शुमाकर भारत नहीं आ पाए पर इस संस्थान पर बहुअनुशासनीय अध्ययन कार्यक्रम पर उनकी छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। लोकतंत्र में गहरी आस्था ने ही उन्हें छात्रों के आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए मजबूर किया, पर इस शर्त के साथ कि आंदोलन पूरी तरह से अहिंसक रहेगा। इस आंदोलन के केंद्र में बेरोजगारी,भ्रष्टाचार,गरीबी, शिक्षा प्रणाली को बदलने,चुनाव प्रणाली में सुधार करने की मांगें थी। श्रीमती इंदिरा गांधी की नीतियां उन्हें लोकतंत्र विरोधी लगीं और उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि संघर्ष के बिना केवल लोकशिक्षण से काम नहीं चल सकता है। वर्ग संघर्ष की अवधारणा को अहिंसा के साथ जोड़कर एक नई शुरुआत जेपी के द्वारा की गई जो अब तक की राजनीतिक अवधारणाओं में अलग थलग पड़ी हुई थी। सिर्फ राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों से समाज में संपूर्ण परिवर्तन नहीं आ सकता है। समग्र समाज के परिवर्तन के लिए जेपी ने संपूर्ण क्रांति की अवधारणा का प्रतिपादन किया। इसके साकार रूप के लिए अहिंसक संघर्ष,प्रतिरोध और रचनात्मक कार्यक्रमों के समन्वय पर पर जोर दिया। संपूर्ण क्रांति को सात भागों में विभाजित किया था,सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मानसिक,नैतिक,और आध्यात्मिक। संपूर्ण क्रांति की अवधारणा को स्पष्ट करने उसके लिए संगठित प्रयास करने और उसका नेतृत्व करने का अवसर जेपी को नहीं मिला लेकिन इसमें जेपी की विचार यात्रा की छाप है जो समग्रता से अपने में गांधी की अहिंसा,एम.एन.राय के नवमानववाद, लोहिया की सप्तक्रांति के विचार को समाहित कर एक अहिंसक और नए समाज की रचना की बुनियाद है। प्रकाश झा ने जेपी की संपूर्ण जीवन यात्रा को एक फिल्म 'लोकनायक' में समेटने की कोशिश की है जिससे हम सभी जेपी के बहुआयामी व्यक्तित्व व जीवन के अभिन्न हिस्सों को जान सकते हैं।

पुण्य स्मरण

यशवंत गोरे

गजलों को मध्यम वर्ग तक पहुंचाने वाले जगजीत सिंह

गजल के बादशाह कहे जाने वाले जगजीत सिंह की पुण्यतिथि 10 अक्टूबर को थी। उनके गजल गायक बनने की दिलचस्प कहानी डीएवी कालेज, जालंधर में पढ़ने वाले प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार सुरेंद्र मोहन पाठक ने अपनी आत्मकथा 'ना बैरी ना कोई बेगाना' में बयान की है। जगजीत सिंह भी इसी कालेज में पढ़ते थे। इसी कालेज में पुरषोत्तम जोशी नाम का लड़का भी पढ़ता था जो शास्त्रीय संगीत में काफी पारंगत था और जगजीत सिंह से एक साल जूनियर था। शास्त्रीय संगीत की इंटर कालेज और इंटर यूनिवर्सिटी प्रतियोगितायों में पुरषोत्तम हमेशा पहला स्थान पा जाता था और जगजीत को दूसरे स्थान से संतोष करना पड़ता था। निराश होकर जगजीत सिंह ने क्लासिकल प्रतियोगिता में हिस्सा लेना बंद कर दिया और सुगम संगीत में रूचि लेनी शुरू किया इसके बाद जगजीत सिंह की सफलता के द्वार खुलने लगे। हर प्रतियोगिता में वे अपना परचम लहराने लगे।

जगजीत सिंह सभी तरह के वाद्य यंत्र बजाने में भी पारंगत थे, वे कॉलेज में दावा करते थे कि दुनिया का कोई भी वाद्य यंत्र जिसे उन्होंने देखा भी न हो उसे बजा के दिखा देंगे केवल आधा घंटा उस वाद्ययंत्र के साथ छोड़ दें। उनका गायन के प्रति जूनून था कॉलेज के दिनों में भी वे सुबह पांच बजकर उठकर नियमित रूप से रियाज करते थे। हॉस्टल के अपने साथियों को वे राह चलते पकड़ कर गाना सुनाने लगते थे। कई बार वे नाराज भी हो जाते थे कि तुझे तो पास होना नहीं है, हमें तो पढ़ने दो। इस पर जगजीत गुस्से में आकर कहते,एक दिन ऐसा आएगा कि लोग मेरा गाना सुनने के लिए टिकट खरीदेंगे। यह आत्मविश्वास उनका 20 वर्ष की

आयु में था। इसी आत्मविश्वास के दम पर वे कुछ वर्षों बाद ही उनकी यह भविष्यवाणी सही साबित हुई और वे गजल किंग बन गए। जगजीत सिंह को अपने पिता से संगीत विरासत में मिला। जगजीत सिंह का जन्म 8 फरवरी 1941 को राजस्थान के श्रीगंगानगर में हुआ था। उनका असली नाम जगमोहन सिंह धीमन था। बचपन में ही गंगानगर के पंडित छगन लाल शर्मा के सानिध्य में दो साल तक शास्त्रीय संगीत सीखने की शुरुआत की। बाद में सैनिया घराने के उस्ताद जमाल खान साहब से ख्याल, ठुमरी और द्रुपद की बारीकियां सीखीं। पिता की ख्वाहिश थी कि उनका बेटा आईएएस पास कर प्रशासनिक अधिकारी बने। लेकिन जगजीत पर तो गायक बनने की धुन सवार थी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान संगीत में उनकी दिलचस्पी देखकर कुलपति प्रोफेसर सूरजभान ने जगजीत सिंह को उत्साहित किया। उनके ही कहने पर वे 1965 में मुंबई आ गए। शुरुआती दिनों में पेइंग गेस्ट के तौर पर रहना पड़ा और विज्ञापनों के लिए जिंगल्स गाकर तथा शादी-समारोह में गाकर रोज़ी- रोटी का जुगाड़ करते रहे। चित्रा सिंह, बाद में जिनसे उनका विवाह हुआ, जब पहली बार मिले तो उन्हें पसंद नहीं करती थी। चित्रा सिंह पहले ही देबू प्रसाद दत्ता से शादी कर चुकी थी और उनकी एक बेटी मोना भी थी। चित्रा मुंबई में जहां रहती थीं, उनके सामने एक गुजराती परिवार रहता था। जगजीत अक्सर यहाँ आते और अपने गानों की रिकॉर्डिंग करते थे। एक दिन चित्रा को सामने से आवाज सुनाई दी। जगजीत के जाने के बाद चित्रा ने पड़ोसी से पूछा, 'क्या मामला है?' पड़ोसी ने जगजीत की जमकर तारीफ की और जब उन्हें उनकी रिकॉर्डिंग सुनाई तो चित्रा ने पूछा, सरदार है क्या? जवाब मिला, हां, लेकिन दाढ़ी कटवा दी है।

चित्रा और जगजीत के हमसफर बनने की भी दिलचस्प कहानी है। 1967 में जब जगजीत और चित्रा एक ही स्टूडियो में रिकॉर्ड कर रहे थे, इसी दौरान वे मिले तो बात हुई। चित्रा बोलीं, 'आपको मेरा ड्राइवर छोड़ देगा घर तक।' रास्ते में चित्रा का घर पड़ता था। चित्रा ने जगजीत को चाय पर बुलाया। इसी दौरान जगजीत एक गजल गुनगुनाते है, जिसे चित्रा किचन से सुन लेती हैं। जब चित्रा ने उनसे पूछा कि किसकी है, जगजीत कहते, 'मेरी है'। इसके बाद चित्रा पहली बार जगजीत से प्रभावित हुई। इसके बाद जगजीत और चित्रा अक्सर मिलने लगे और एक दूसरे को पसंद करने लगे। वहीं दूसरी ओर चित्रा और देबू ने रजामंदी से अलग होने का फैसला ले लिया। जगजीत देबू के पास गए और कहा, 'मैं चित्रा से शादी करना चाहता हूं।' उनका संगीत अत्यंत मधुर और उनकी आवाज़ संगीत के साथ खूबसूरती से घुल-मिल जाती है। खालिस उर्दू जानने वालों की मिल्कियत समझी जाने वाली, शायरों की महफ़िलों में वाह-वाह की दाद पर इतराती ग़ज़लों को आम आदमी तक पहुंचाने का श्रेय अगर किसी को दिया जाए तो वे जगजीत सिंह ही है। उनकी ग़ज़लों ने उर्दू के कम जानकारों के बीच शेरो-शायरी की समझ को बढ़ाया ही नहीं, बल्कि ग़ालिब, मीर, जोश और फ़िराक़ जैसे शायरों से भी उनका परिचय कराया।

1990 में एक त्रासदी ने चित्रा -जगजीत दोनों को एकदम खामोश सा कर दिया। जगजीत और चित्रा के बेटे विवेक का एक कार दुर्घटना में दुखद निधन हो गया। बेटे के शोक में जगजीत सिंह छह महीने तक एकदम खामोश हो गए वहीं चित्रा सिंह इस त्रासदी से कभी उबर नहीं पाई और उन्होंने गायकी से हमेशा के लिए बिदा ले ली। जगजीत सिंह ने कुछ समय बाद अपने आप को संभाला और फिर से गाना शुरू किया। इसके बाद गायी गई गजलों में बेटे को खो देने का दर्द साफ झलकता था। इसी दर्द से पैदा हुई आवाज से उनके प्रशंसकों की संख्या अचानक बढ़ गई और वे किंग ऑफ़ गजल कहलाने लगे। उनकी आवाज में गजब की मिठास थी । उनकी आवाज में उतार चढ़ाव मेहंदी हसन व गुलाम अली जैसा भले ही नहीं हो पर उनकी आवाज सीधी दिल से निकल कर दिल तक पहुंच जाती थी। उनकी गायी गजलों के सभी एलबम लाजवाब है 'इन सर्च' 'इनसाइट'। गुलजार के साथ जगजीत की जुगलबंदी भी जबरदस्त है। जगजीत सिंह और पंकज उदास ऐसे गजल गायक है जिन्होंने अभिजात वर्ग के बंगलों से बाहर निकाल कर मध्यमवर्ग के छोटे घरों और फ्लैट में पहुंचाया। जगजीत सिंह की कई गजलें फिल्मों में भी ली गई हैं जैसे 'अर्थ' (झुकी झुकी सी नजर, तुम इतना जो मुस्कुरा),'साथ-साथ' (प्यार मुझसे जो किया), 'प्रेम गीत' (होठों से छू लो तुम) 'दुश्मन' (चिट्ठी ना कोई संदेश) 23 सितम्बर को मुंबई के लीलावती अस्पताल में ब्रेन हेमरेज होने के कारण उन्हें भर्ती करवाया गया था।उस दिन वे सुप्रसिद्ध गजल गायक गुलाम अली के साथ एक शो की तैयारी कर रहे थे। ऑपरेशन के बाद भी कुछ सुधार नहीं हुआ और 10 अक्टूबर 2011 को सुबह 8 बजे इस फनकार ने उसके प्रशंसकों से हमेशा के लिए विदाई ले ली। भारत सरकार द्वारा 2003 में जगजीत सिंह को कला के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। फरवरी 2014 में आपके सम्मान व स्मृति में दो डाक टिकट भी जारी किए गए।

बढ़ रहे एनीमिया के मरीज, खानपान-पौष्टिक आहार पर ध्यान न देना एक बड़ा कारण

40 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं को खून की कमी के कारण चढ़ाना पड़ रहा ब्लड

बैतूल। जिले में एनीमिया (खून की कमी) के मरीज बढ़ रहे है। यदि जिला अस्पताल में प्रसव के लिए आने वाली महिलाओं की ही बात करे तो, 40 प्रतिशत गर्भवती महिला को खून की कमी के चलते ब्लड लगाना पड़ रहा है। जिसका एक कारण यह है कि महिलाओं को पौषिक खाना नहीं मिल पाता है और महिलाएं एनीमिया से जल्द ग्रसित हो जाती है। चिकित्सकों की मानें तो स्वास्थ शरीर के लिए बेहतर डाइट का होना बेहद जरूर है। जिन महिलाओं की डाइट बेहतर होती है, उनमें इस रोग से लड़ने की क्षमता कहीं अधिक होती है। आमतौर पर महिलाएं सिर्फ सादा भोजन ही करती है जिससे उनकी भूख तो शांत हो जाती है, लेकिन शरीर को जो पोषक तत्व मिलने चाहिए उनकी पूर्ति नहीं हो पाती है। जिला अस्पताल के रिकॉर्ड का आंकलन करें तो अप्रैल 2023 से अप्रैल 2024 तक यानि एक साल में करीब 400 से अधिक महिलाओं को हाईरिक्स की श्रेणी में रखा था। इस अवधि में जिला अस्पताल में 7 हजार महिलाओं का प्रसव हुआ था। इनमें से 3 हजार 268 महिलाओं को प्रसव के पूर्व या बाद में ब्लड चढ़ाया गया है, यानि प्रसव के लिए भर्ती कुल महिलाओं में 40 प्रतिशत महिला को खून की कमी के चलते ब्लड चढ़ाया गया है। यह स्थिति इसलिए भी चिंताजनक है, क्योंकि शासन गर्भवती महिलाओं की सेहत के लिए करोड़ों रुपए हर साल खर्च कर रहा है, ताकि जच्चा-बच्चा सेहतमंद हो, किन्तु कही न,

कहीं स्वास्थ्य विभाग की भी लापरवाही के कारण यह उद्देश्य पूरा नहीं हो पा रहा है।

पौष्टिक आहार और खानपान में कमी- इस संबंध में चिकित्सा विभाग के विशेषज्ञों ने बताया कि एनीमिया का मुख्य कारण महिलाओं में प्रेगनेंसी के समय सही तरीके से पौष्टिक आहार नहीं लेना, माहवारी अधिक होने पर उपचार नहीं करना, खान-पान पर ध्यान नहीं देना है। चिकित्सकों का मानना है कि ज्यादातर गर्भवती महिलाएं आयरन और मल्टी विटामिन की खुराक पूरी नहीं लेती है। जिससे महिलाएं एनीमिया से ग्रसित मिलती है। गर्भवती महिलाओं को आयरन और मल्टी विटामिन की दवाएं खाने दी जाती है, जिनका महिलाएं शुरूआती समय में तो इनका सेवन करती हैं, लेकिन बाद में यह दवा खाना छोड़ देती हैं। जिसके कारण आयरन टेबलेट की पूरी खुराक नहीं होने के प्रसव के दौरान महिलाओं में खून की कमी देखी जाती है।

विभागीय अनदेखी भी एक बड़ा कारण- गर्भवती महिलाएं समय पर टेबलेट ले रही हैं या नहीं, इसकी मॉनिटरिंग करने का जिमा आंगनबाड़ी और आशा कार्यकर्ता का है। कई बार गर्भवती को उचित परामर्श नहीं मिलने और नियमित मॉनिटरिंग नहीं होने के कारण परेशानी देखने को मिलती है। आमतौर पर एनीमिया रोग से बचाव के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिला अस्पताल, प्राथमिक, सामुदायिक, आंगनबाड़ी से आयरन की निःशुल्क गोलियों का वितरण किया जाता है। लेकिन महिलाओं को उनके स्वास्थ्य के प्रति न जागरूक किया जाता है न ही समय-समय पर निःशुल्क चिकित्सा सलाह दी जाती है। जिससे यह रोग जाने-अजाने में महिलाओं को जकड़ रहा है। हालांकि स्वास्थ्य विभाग ग्रामीण अंचलों में समय-समय पर स्वास्थ्य एवं परीक्षण शिविर भी लगाता है लेकिन इसका लाभ बहुत कम लोग ही ले पाते हैं।

इनका कहना -

गर्भवती महिलाएं आयरन और मल्टी विटामिन की दवाओं का कोर्स पूरा नहीं करती है। पौष्टिक आहार और खानपान पर ध्यान नहीं देने से भी एनीमिया की शिकार हो जाती है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा एनीमिया के मरीजों में कमी लाने के लिए हर संभव प्रयास किया जाता है।

- डॉ. अशोक बारंगा, सीएस, जिला अस्पताल, बैतूल

जिला पंचायत के वरिष्ठ सदस्य राजा ठाकुर के 77वें जन्मदिन पर किया अंकुरित आहार का वितरण

बैतूल। भाजपा के वरिष्ठ नेता राजा ठाकुर के 77वें जन्मदिन के अवसर पर 10 अक्टूबर को सुबह पुलिस ग्राउंड में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें परिवारजनों ने समाज सेवा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के उद्देश्य से अंकुरित आहार का वितरण किया। राजा ठाकुर, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी अध्यक्ष एवं वर्तमान में जिला पंचायत सदस्य हैं, उनके इस खास दिन पर भाजपा कार्यकर्ताओं और आम जनता ने बढ़-चढक़र भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन उनके परिवार और शुभचिंतकों द्वारा किया गया, जिसमें स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। राजा ठाकुर के परिवार ने इस पहल को एक महत्वपूर्ण संदेश के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें अंकुरित आहार के माध्यम से स्वस्थ जीवनशैली अपनाने पर जोर दिया गया। कार्यक्रम के दौरान भाजपा के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भी राजा ठाकुर को उनके लंबे राजनीतिक जीवन और समाज सेवा में दिए गए योगदान के लिए बधाई दी। कार्यक्रम के अगले चरण में केक काटकर श्री राजा ठाकुर को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी गई। इस मौके पर सभी ने उनके दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य की कामना की। सुबह से बधाईयों का तांता लगा रहा, परिवार एवं आरएसके स्टॉफ तथा शहर के गणमाण्य नागरिकों की उपस्थिति में जिला चिकित्सालय एवं पुलिस ग्राउंड में अंकुरित आहार वितरण कर जन्मदिन मनाया गया।

बैतूल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पथ संचलन कल

बैतूल। नगर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पथ संचलन कल 12 अक्टूबर को सुबह 8:30 बजे पुलिस ग्राउंड बैतूल से प्रारंभ होगा। इस आयोजन में संघ के कार्यकर्ता एकत्रित होकर एकजुटता और समाज सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाएंगे। पथ संचलन का उद्देश्य समाज में जागरूकता फैलाना और एकता का संदेश देना है। संघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने इस आयोजन को सफल बनाने का आव्हान किया है।

प्रधानमंत्री नेशनल मेला अप्रेन्टिस 14 को

बैतूल। शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था में एक दिवसीय प्रधानमंत्री नेशनल अप्रेंटिसशिप मेला 14 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे से आयोजित किया गया है। अप्रेंटिसशिप मेला 18 से 30 वर्ष आयु तक के आईटीआई, डिग्री, डिप्लोमा 10वीं, 12वीं महिला-पुरुष अभ्यर्थी हिस्सा ले सकते हैं। मेले में वर्धमान फैब्रिक्स बुधनी, याजाकी इंडिया गुजरात, एमएन इंफ्राटेक भोपाल, यशस्वी ग्रुप भोपाल, क्रेस कॉर्प इंदौर एवं अन्य कंपनियों के प्रतिनिधि साक्षात्कार लेने के लिए उपस्थित रहेंगे। इस अप्रेन्टिस पद हेतु स्टाइपेंड, 8800 से 20000 रूपए तक रहेगी। इच्छुक अभ्यर्थी अपने दस्तावेज के साथ औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल में उपस्थित हो सकते हैं।

जिप सदस्य ने स्कूल का किया औचक निरीक्षण

बैतूल। जनपद सदस्य अकलेश वाघमारे ने गुरुवार को ढोंडवाड़ा स्थित हायर सेकंडरी स्कूल का औचक निरीक्षण किया। जिप सदस्य श्री वाघमरे ने विद्यालय की शिक्षण व्यवस्था, उपलब्ध संसाधनों, बच्चों एवं शिक्षकों की उपस्थिति की जानकारी ली। स्कूल में प्राचार्य सहित पांच शिक्षक अनुपस्थित थे तथा स्कूल में विद्यार्थियों की उपस्थिति भी कम पाई गई, जिस पर उन्होंने नाराजगी व्यक्त करते हुए वरिष्ठ अधिकारियों को इसकी सूचना दी और व्यवस्था बनाए जाने के निर्देश दिए। जनपद सदस्य श्री वाघमारे निरीक्षण के दौरान स्कूल की कक्षाओं में पहुंचे और बच्चों से मिलकर अध्यापन कार्य की सच्चाई को जाना। कक्षा दसवीं की तिमाही परीक्षा परिणाम संतोषजनक नहीं मिलने पर उन्होंने शिक्षकों से चर्चा की तथा विद्यार्थियों को मन लगाकर पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान विद्यालय शिक्षकों एवं बच्चों ने पठन-पाठन में होने वाली परेशानियों से जिप सदस्य को अवगत कराया। जिस पर उन्होंने आश्वासन दिया कि मुलभूत समस्याओं के समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों से बात करेंगे और स्वयं भी समाधान की दिशा में पहल करेंगे।

मद्य निषेध सप्ताह संपन्न, विजेताओं को किया पुरस्कृत

बैतूल। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस जेएच कॉलेज में मद्य निषेध सप्ताह का आयोजन महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्टूबर से प्रारंभ किया गया था, जिसका समापन आज गुरूवार को किया गया। इस दौरान नशे के विरूद्ध जनजाति के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन सप्ताह के अंतर्गत किया गया, वाद-विवाद, निबंध, चित्रकला - नाटक, रैली नाटक के प्रमाण पत्र वितरित किए गए और प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। समापन के मौके पर प्रमुख रूप से उप संचालक सामाजिक न्याय विभाग रोशनी थर्मा, डॉ.अनिता सोनी, जनभागीदारी समिति सदस्य निलेश गिरि गोस्वामी एवं महाविद्यालय स्टाफ सहित छात्र-छात्राएं मौजूद थी। कार्यक्रम सफल बनाने में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक अंजली नागोरे, आयुष घिंडोडे, नेहा किरोदे अमिता ,शालिनी कोसे, भूमिका फाटे, वृत्ति पंवार, निशा पंद्राम आदि का सराहनीय योगदान रहा।

रविंद्र देशमुख और अनिल खवसे की संदिग्ध मौत पर कांग्रेस ने की एसआईटी जांच की मांग, एसपी को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। पाथाखेड़ा क्षेत्र में रविंद्र देशमुख और अनिल खवसे की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौतों के बाद, जिला कांग्रेस कमेटी ने एसआईटी (विशेष जांच दल) जांच की मांग करते हुए एसपी को ज्ञापन सौंपा। कांग्रेस के जिला अध्यक्ष हेमंत वागद्रे ने बताया कि इन मौतों के पीछे कई रसूखदार लोगों के नाम सामने आ रहे हैं, जो सत्ताधारी पार्टी से जुड़े हुए हैं। इस कारण से निष्पक्ष जांच और आरोपियों की त्वरित गिरफ्तारी की मांग की जा रही है। ज्ञापन में कांग्रेस ने कहा कि रविंद्र देशमुख और अनिल खवसे की कॉल डिटेल्स, बैंकिंग लेनदेन और बीसी सुसाइटी में अन्य कोल कामगारों के पैसों की भी जांच की जानी चाहिए। बीसी सुसाइटी के संदर्भ में कई और नाम सामने आ रहे हैं, जिनकी भी जांच आवश्यक है, ताकि पूरे मामले की सच्चाई उजागर हो सके। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि सत्ताधारी पार्टी के नेताओं की भूमिका पर सवाल उठ रहे हैं और इससे आमजन के मन में कई संदेह पैदा हो रहे हैं। मामले में रसूखदार लोगों के शामिल होने के कारण कांग्रेस ने कहा है कि जांच निष्पक्ष और त्वरित होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि लोगों के मन में इस मामले को लेकर संदेह हैं और अगर आरोपियों को समय पर गिरफ्तार नहीं किया गया तो जनता का गुस्सा फूट सकता है। कांग्रेस के जिला अध्यक्ष हेमंत वागद्रे ने बताया कि यह मामला केवल दो मौतों तक सीमित नहीं है, इसमें बीसी सुसाइटी का घोटाला भी जुड़ा हुआ है, जहां अन्य कोल कामगारों के पैसे डूबने की बात सामने आ रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई, तो पार्टी जनता के साथ सडक़ों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन करेगी।

निष्पक्ष कार्रवाई की मांग - ज्ञापन में कांग्रेस ने स्पष्ट रूप से कहा कि मामले की एसआईटी से गहन जांच कराई जाए और आरोपियों को शीघ्र हिरासत में लिया जाए। इसके साथ ही, मृतकों के परिवारों को न्याय दिलाने के लिए सभी कानूनी प्रक्रियाएं पूरी की जानी चाहिए। ज्ञापन सौंपने वालों में जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे, पूर्व अध्यक्ष शांतिलाल तातेड, वरिष्ठ कांग्रेस नेता अरुण गोठी, नवनीत मालवीय, मध्यप्रदेश आदिवासी कांग्रेस अध्यक्ष रामू टेकाम, जिला कांग्रेस प्रवक्ता मोनू वाघ, नगरपालिका नेता प्रतिपक्ष राजकुमार दीवान, राजेश गावंडे, डॉ.नितिन देशमुख, मनोज शर्मा, निलेश धुर्वे आदि कांग्रेस पदाधिकारी उपस्थित रहे।

एटीएम कटिंग का फरार आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। करीब दो साल पहले 29 जनवरी 2022 की रात कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने इटारसी रोड स्थित कैनरा बैंक के एटीएम को गैस कटर से काटकर लगभग 13, 42,500 रुपये की चोरी की थी। इस घटना की सूचना पर थाना कोतवाली बैतूल ने धारा 457, 380 भादवि एवं 4 म.प्र. सार्वजनिक संपत्ति नुकसान निवारण अधिनियम

के तहत मामला दर्ज किया गया था। विवेचना में प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर आरोपी निसार पिता असजुल उर्फ असलुफ (19 वर्ष), निवासी प्रेमाखेड़ा, थाना पुन्हाना, जिला नुह (हरियाणा), घटना के बाद से फरार था। फरार आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया है। जहां से उसे जेल वारंट पर जेल भेज दिया गया। इस कार्रवाही में उनि वहीद खान, नितिन उईके, आरक्षक प्रदीप, महेश, कमलेश, चंदू सरेयाम, अनुज, संदीप की सराहनीय भूमिका रही।

पुलिस ने अड़ीबाजी करने वाले आरोपी को किया गिरफ्तार

बैतूल। गंज पुलिस ने अड़ीबाजी और धमकी देने के मामले में एक युवक को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। पुलिस ने बताया कि 8 अक्टूबर को अनुप उर्फ कुक्की तिवारी निवासी ग्रीनसिटी विवेकानंद वार्ड गंज ने थाना में शिकायत की थी कि आरोपी पंकज अतुलकर ने उसके ट्रैक्टर (क्रमांक एमपी 22 एबी 2171) से संबंधित न्यायालयीन मामले को सुलझाने के नाम पर 80 हजार रूपये की अवैध मांग की और काम ना होने पर पैसे वापस नहीं किए व जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने शिकायत के आधार पर धारा 296, 115(2), 119, 351(2) बीएनएस 2023 के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल झारिया के निर्देशानुसार, आरोपी के खिलाफ लगातार शिकायतों और आपराधिक रिकॉर्ड को ध्यान में रखते हुए थाना प्रभारी गंज को तत्काल कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए थे। आरोपी पंकज पिता भिकारीलाल अतुलकर (34 वर्ष) निवासी भुजालिया घाट टिकारी बैतूल को गिरफ्तार कर विधिवत माननीय न्यायालय में पेश किया गया। पुलिस ने बताया कि आरोपी का अपराध करने का तरीका यह है कि वह भोले-भाले और आम लोगों को प्रशासन में अपने संबंधों का विश्वास दिलाकर उनसे पैसा ऐंठता है।

महिला आईटीआई में मनाया शक्ति अभिनंदन कार्यक्रम

बैतूल। शासकीय एकलव्य महिला आईटीआई में शक्ति अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम एकीकृत बाल विकास परियोजना बैतूल ग्रामीण द्वारा जिला कार्यक्रम अधिकारी गौतम अधिकारी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ क्षेत्रीय जनपद सदस्यों, संस्था के प्राचार्य श्री पंडाग्रे, परियोजना अधिकारी श्रीनिरंजन सिंह डोडवे व अन्य अतिथियों द्वारा मां सरस्वती व भगवान विश्वकर्मा के चित्र पर माला अर्पण कर दीप प्रज्वलन कर किया गया। परियोजना अधिकारी द्वारा 2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक चलाई जाने वाले शक्ति अभिनंदन कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी व इसके आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। वन स्टॉप सेंटर बैतूल की प्रभारी प्रशासक श्रीमती अर्चना तिवारी ने सकारात्मक सोच रखना अपना लक्ष्य निर्धारण करने व मोबाइल

का उपयोग अपने ज्ञान व कौशल को बढ़ाने के लिए सलाह दी गई। वन स्टॉप सेंटर की काउंसलर शिखा भोरसे ने वन स्टॉप सेंटर की जानकारी दी गई। प्राचार्य श्री पंडाग्रे ने बालिकाओं को स्वालंबी बनने व सकारात्मक रहने के लिए समझाया। इस अवसर पर बालिकाओं के लिए पोस्टर प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें बालिकाओं को महिला सुरक्षा सम्मान विषय पर पोस्टर बनाने को कहा गया। प्रतियोगिता में कुल 48 बालिकाओं ने हिस्सा लिया। प्रथम स्थान पर नेहा इवने द्वितीय स्थान पर अर्पिता वरकडे और अंकित काकोडिया व तृतीय स्थान पर बबली व अमृता आहके रही। विजेताओं को अतिथियों द्वारा स्मृति चिन्ह व प्रमाण पत्र दिए गए।

कामथ मोक्षधाम भूमि पर से रोक हटाने सौंपा ज्ञापन

भूमि सीमांकन कर दी निर्माण अनुमति, फिर 2 घंटे बाद लगाई रोक

बैतूल/मुलताई । ग्राम पंचायत कामथ के ग्रामीणों ने आज फिर एसडीम अनीता पटेल को ज्ञापन सौप मोक्ष धाम भूमि पर लगाई गई रोक हटाए जाने की मांग की। कामथ ग्राम पंचायत में मोक्ष धाम भूमि विवाद हल होने का नाम ही नहीं ले रहा है। दो माह की ग्रामीणों के प्रयास के बाद एसडीएम अनीता पटेल ने मोक्ष धाम भूमि के सीमांकन के आदेश दिए थे। किंतु पुलिस के संरक्षण में राजस्व अमले का जैसे ही सीमांकन कार्य पूर्ण हुआ और पंचनामा बनाकर पंचायत को निर्माण कार्य प्रारंभ किए जाने की अनुमति प्रदान की गई कुछ ही घंटो मे एसडीएम ने यह कहकर पंचायत निर्माण कार्य पर रोक लगा दी की कुछ ग्रामीणों की आपत्ती है जब तक दूसरे पक्ष को नहीं सुना जाता कामथ मोक्ष धाम भूमि पर यथा स्थिति बनी रहेगी। एसडीएम को सोपे अपने ज्ञापन में ग्रामीणों ने मांग की है कि ग्राम पंचायत कामथ में कलेक्टर द्वारा आवंटित एवं पंचायत द्वारा प्रस्तावित खसरा नंबर 142 रकबा 0.081 हेक्टेयर। भूमि पर मोक्षधाम का निर्माण कार्य यथाशीघ्र प्रारंभ कराया जाए।

जिला कलेक्टर ने आवंटन की थी मोक्षधाम की भूमि- पंचायत की आबादी 6 से 7 हजार होने पर और यहा मोक्षधाम ना होने से वर्ष 1994-95 में न्यायालय के समक्ष मोक्षधान निर्माण के लिये ग्राम पंचायत कामथ द्वारा भूमि आवंटित करने हेतु प्रस्ताव व प्रकरण पंजीबद्ध कर 0.081 हे. भूमि कलेक्टर बैतूल के आदेश पर 21/10/1994 द्वारा खसरा नम्बर 142 रकबा 2.889 हे. से 0.0081 हे. भूमि को मोक्षधाम के लिए प्रदान किया गया था ।

कब्जेदारों की आपत्ति पर लगाई गई मोक्ष धाम की भूमि पर रोक- ज्ञापन में कहा गया है कि मोक्षधाम निर्माण एवं सीमांकन का प्रस्ताव सर्वसहमति से पारित किया है। तहसीलदार द्वारा हाल ही में सीमांकन कर भूमि मोक्षधाम निर्माण हेतु ग्राम पंचायत कामथ को कहा का पंचायत ने पोल लगा कर मेढ कायम की किंतु सीमांकन के 2 घंटे पश्चात अनुविभागीय अधिकारी द्वारा स्थगन आदेश जारी कर दिया गया जिसमें अन्य को सुना जाना और स्थल जॉच आवश्यक बताया गया है। अन्य से संबधित वहा अवैध रूप से अतिक्रमण कर निवासरत है। जो कि मोक्षधाम निर्माण स्थल से 250 से 300 फीट की दूरी पर है। और उनके पास उक्त स्थान पर रहने के कोई वैध दस्तावेज नहीं है। उन्हे किसी प्रकार का शासन से कोई पट्टा आवंटित नहीं किया है।

महिला एवं बाल विकास विभाग के तत्वाधान में महिला शक्ति अभिनंदन कार्यक्रम संपन्न

बैतूल/मुलताई। महिला एवं बाल विकास विभाग के तत्वाधान में महिलाओं एवं बालिकाओं के सशक्तिकरण जागरूकता के लिए शक्ति अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन अमरावती रोड साई राम लान में किया गया। नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर एवं पार्षद शिल्पा शर्मा की उपस्थिति में आयोजित इस शक्ति अभिनंदन कार्यक्रम में महिलाओं एवं बालिकाओं को साइबर सिक्योरिटी के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही महिला सुरक्षा को लेकर महिला अतिथियों ने अपने विचार रखें। वर्षा खड़ेकर ने अपने उद्बोधन में कहा कि नारी शक्ति को और भी सशक्त बनाने के लिए लिए देश की बेटियों की सुरक्षा को लेकर ठोस कदम उठाने होंगे, कड़े कानून के साथ कानून के परिपालन के लिए सही क्रियान्वयन की आवश्यकता है। शक्ति अभिनंदन अभियान कार्यक्रम में भाग लेने थाना मुलताई से पहुंची एस आइ मोनिका पटेल, पुलिस आरक्षा अरविंद ने साइबर सिक्योरिटी के संबंध में उपस्थित महिलाओं को विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि साइबर फ्रॉड होने पर इसकी जानकारी तत्काल हेल्पलाइन 1930 पर देकर अपनी शिकायत दर्ज कराए।

इंदौर में तेज बारिश, रावण के पुतले भीगे

धार, बड़वानी, हरदा में भी पानी गिरा, दो सिस्टम की एक्टिविटी से बारिश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश से पूरी तरह से विदा होने से पहले मानसून बरस रहा है। गुरुवार को भी इंदौर, धार जिले के मनावर, हरदा और बड़वानी समेत कुछ जगहों पर बारिश हुई है। मौसम विभाग के मुताबिक गुरुवार को दो सिस्टम की एक्टिविटी से 10 जिलों में बारिश और गरज-चमक वाला मौसम बना रहेगा।

इंदौर में बारिश से रावण के पुतले भीग गए। शहर के दशहरा मैदान पर सबसे बड़ा 111 फीट का रावण पुतला भी भीग गया। बारिश से यहां कीचड़ भी फैल गया है।

मौसम विभाग के अनुसार, ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि श्रीलंका और इसके करीबी क्षेत्र में साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम एक्टिव है। दूसरा सिस्टम लक्ष्यद्वीप के आसपास है। इस वजह से एमपी के दक्षिणी और पूर्वी हिस्सों के जिलों में मौसम फिर से बदल गया है।भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन समेत प्रदेश के 34 जिलों से मानसून विदा हो चुका है। जबलपुर, सागर, रीवा और शहडोल संभाग के 21 जिलों से मानसून तीन दिन और 12 अक्टूबर तक बना रहेगा। इंदौर-रायसेन से मानसून जा चुका है, लेकिन यहां भी बुधवार को बारिश हुई।

मंडला में सबसे ज्यादा बारिश- प्रदेश में इस साल 44.1 इंच बारिश हुई है। बारिश के मामले में जबलपुर संभाग सबसे आगे है। मंडला जिले में सबसे ज्यादा बारिश हुई। यहां 60.6 इंच से ज्यादा पानी गिर गया। सिवनी में 56.8 इंच पानी गिरा। श्योपुर, निवाड़ी और राजगढ़ में 52 इंच से अधिक बारिश हुई है। सबसे ज्यादा बारिश वाले टॉप-10 जिलों में भोपाल, सागर, अलीराजपुर, डिंडौरी और छिंदवाड़ा जिले शामिल हैं।

सभी डैम-तालाबों में अच्छा पानी- इस मानसूनी सीजन में प्रदेश के करीब 250 में से 200 डैम फुल हो चुके हैं। बरगी, बाणगंगा, ओंकारेश्वर, इंदिरा सागर, तवा, कलियासोत, केरवा, भदभदा समेत कई डैम ऐसे हैं, जिनके गेट सीजन में 6 से 10 बार या इससे अधिक खुल चुके हैं।

20-21 अक्टूबर से बढ़ेगी ठंडक- मौसम विभाग के अनुसार, 20 अक्टूबर तक प्रदेश में ठंडक बढ़ने का अनुमान है। रात में पारा 20 डिग्री के नीचे पहुंच सकता है। हालांकि, दिन में तापमान 33-34 डिग्री के बीच ही रहेगा। अक्टूबर के आखिरी में दिन के तापमान में भी गिरावट होने लगेगी। मौसम विभाग के मुताबिक, दशहरे से पहले मानसून लौट जाएगा। ऐसे में अबकी बार दशहरे पर बारिश नहीं होगी। बता दें कि पिछले 2 साल से नवरात्रि और दशहरे पर बारिश हो रही है।

जिला शिक्षा विभाग में अधिकारी की भर्राशाही.. नियम विरुद्ध हो रहे कार्य एस एन जी स्कूल भी अतिक्रमण की चपेट में

नर्मदापुरम। जिला शिक्षा अधिकारी नर्मदापुरम ने शासन के नियमों को तोड़कर जिला क्रीड़ा अधिकारी के पद पर शासकीय एस.एन.जी स्कूल नर्मदापुरम के खेल शिक्षक को प्रभार लम्बे समय से दे रखा है। वैसे तो शासकीय एस.एन.जी स्कूल म.प्र.शासन द्वारा एजुकेशन फार ऑल (AFO) का दर्जा प्राप्त स्कूल है। जिसमें साफ निर्देशित है की (AFO) स्कूल से किसी भी शिक्षक को किसी भी कार्यालय में असंजित नहीं किया जा सकता फिर भी DEO नर्मदापुरम ने सुश्री वन्दना रघुवंशी को वर्ष 2021 से आज तक जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में जिला क्रीड़ा अधिकारी के पद पर प्रभार कैसे दे रखा है। सुश्री वंदना रघुवंशी जबकि खेल शिक्षक है न की जिला क्रीड़ा अधिकारी इसके बाद कार्यालय द्वारा समय समय पर संबंधित को खेल गतिविधियां सुचारू रूप से चलाने के लिए क्रीड़ा से संबंधित जो पत्र निकाले जाते है उनमें कहीं भी प्रभारी नहीं लिखा जाता है..? जिसमें साफ तौर पर उन्हें जिला क्रीड़ा अधिकारी लिखा जाता है। इसी प्रकार एसपीएम का पीटीआई भी 12 वर्षों से जेडी आफिस में संलग्न है..? इससे यह साफ समझ आता है कि जिला शिक्षा अधिकारी किसी का भी पद शासन के नियम विरूद्ध बदल सकते है। फिर स्कूल में नियम विरुद्ध कार्य होने के बाद जिला मुख्यालय पर बैठ जिला शिक्षा अधिकारी संबंधित मामले संज्ञान लेकर संबंधित प्राचार्य/ अधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई नहीं कर पाते.. नगर में शासकीय एस एन जी स्कूल का एक अलग ही इतिहास है। अंग्रेजी शासनकाल की ऐतिहासिक धरोहर मानी जाती इस शाला का नाम पहले एवीएम स्कूल हुआ करता था। जो अब शासकीय एस एन जी स्कूल के नाम से जानी जाती हैं नर्मदा शिक्षा समिति द्वारा अतिक्रमण का शिकार हो चली। अरबों की संपत्ति पर निर्मित सरकारी स्कूल से फिलहाल स्टेडियम पहुंच मार्ग को बंद कर उसपर अवैध निर्माण किया जा चुका। पदेन प्राचार्य सहित जिला शिक्षा अधिकारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे। स्कूल का सरकारी रख-रखाव भी नहीं होने से यह कब खंडहर में तब्दील कर पूरी तरह अतिक्रमण कर ली जाए की योजना चलायमान है।

प्राणघातक हमले में घायल व्यक्ति जिला चिकित्सालय में भर्ती

सोहागपुर। समीपवर्ती ग्राम नगतरा में खेत में बार बार जानवर आने की शिकायत करना 50 वर्षीय व्यक्ति को भारी पड़ गया।हुआ यूं कि मेहरबानसिंह पटैल पिता स्वगीर्य सरदारसिंह के खेत में बार बार जानवर आकर फसल चौपट कर देते थे। तब फरियादी ने जानवरों के मालिक रामगोपाल तिवारी को शिकायत करने पहुंचा। इसी बीच फरियादी का रास्ता रोककर रामगोपाल तिवारी सहित 5 , छै लोगों ने मेहरबानसिंह पटैल पर लाठी एवं कुल्हाड़ी से प्राणघातक हमला कर दिया। तत्काल खबर मिलते ही उनके पुत्र नरेश पटैल सोहागपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे। प्राथमिक इलाज के बाद घायल को जिला चिकित्सालय नर्मदापुरम भेजा गया। वहां घायल का इलाज चल रहा है। फरियादी के पुत्र नरेश पटैल ने बताया कि अभी तक प्राणघातक हमले के कारण मेरे पिता के सिर से दो दिन के बाद भी खून बंद नहीं हो रहा है। आरोपियों ने थाने में रिपोर्ट कराने पर जान से मारने की धमकी दी है।सोहागपुर पुलिस ने नर्मदापुरम जिला चिकित्सालय पहुंचकर घायल के बयान लिए हैं। पुलिस ने मामले पंजीबद्ध कर लिया है।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना में इस बार भी देवास का कहीं भी नाम नहीं-कांग्रेस ने उठाया मुद्दा

देवास। प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान जब मुख्यमंत्री थे तो उन्होंने बुजुर्गों को तीर्थ यात्रा कराने के उद्देश्य से निःशुल्क मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना लागू की थी। उक्त योजना को मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने भी सुचारू रूप से शुरू किया हैं इसके अंतर्गत 13 अक्टूबर से फिर से मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना शुरू हो रही है।

नए कार्यक्रम के अनुसार 13 अक्टूबर को उज्जैन से कामाख्या देवी के लिए ट्रेन जाएगी जिसमेंशाजापुर सीहोर के तीर्थ यात्री सम्मिलित होंगे। 21 अक्टूबर को इंदौर से अमृतसर ट्रेन जाएगी जिसमें इंदौर,धार उज्जैन, शिवपुरी के लोग शामिल होंगे। 5 नवंबर को विदिशा से वाराणसी अयोध्या के लिए ट्रेन जाएगी जिसमें विदिशा,सागर, दमोह के तीर्थ यात्री भाग लेंगे। 13 नवंबर को भोपाल से रामेश्वरम के लिए ट्रेन रवाना होगी जिसमें भोपाल,सीहोर,नर्मदा पुरम के तीर्थ यात्री जाएंगे।

21 नवंबर को रीवा से द्वारका के लिए ट्रेन जाएगी।
29 नवंबर को दमोह से वाराणसी।
7 दिसंबर को सतना से रामेश्वरम।
23 दिसंबर को खंडवा से जगन्नाथ पुरी।
31 दिसंबर को बैतूल से कामाख्या देवी।
8 जनवरी को सिवनी से रामेश्वरम ।
24 जनवरी को अनूपपुर से वाराणसी।

1 फरवरी को उमरिया से शिर्दी ।7 फरवरी को मुरैना से द्वारका 15 फरवरी को छतरपुर से द्वारका और 23 फरवरी को भिंड से नागपुर तीर्थयात्री रवाना होंगे। जिला कांग्रेस अध्यक्ष मनोज राजानी व कार्यकारी अध्यक्ष प्रवक्ता सुधीर शर्मा ने बताया कि राज्य सरकार के द्वारा मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना का जो नया कार्यक्रम जारी किया गया है उसमें किसी भी शहर से जा रहे यात्रियों के साथ देवास शहर या देवास जिले की किसी भी विधानसभा का उल्लेख नहीं है। इसके पूर्व भी हमने अपनी बात रखी थी लेकिन किसी भी विधानसभा के विधायको ,सांसदो ने देवास शहर सहित देवास जिले के बुजुर्ग तीर्थ यात्रा के लिए जाए इसके लिए कोई पहल नहीं की ना ही अधिकारियों ने इस और ध्यान दिया। वर्तमान में देवास जिले में पांच विधायक है वही तीन सांसद है जिसमें केंद्रीय मंत्री के रूप में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जिले का नेतृत्व कर रहे हैं। किसी भी जनप्रतिनिधि ने इस और ध्यान नहीं दिया ना ही भारतीय जनता पार्टी से जुड़े किसी भी वरिष्ठ नेता ने यह प्रयास नहीं किया कि मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना का जो कार्यक्रम जारी हुआ है उसमें देवास जिले को भी सम्मिलित किया जाए।कांग्रेस ने मांग की है कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के नए जारी कार्यक्रम में देवास जिले को जोड़ा जाए जिससे देवास शहर सहित जिले के बुजुर्ग तीर्थ दर्शन कर सके।

रामाश्रय परिसर में रावण दहन कल

देवास। धर्म, जनसेवा व सामाजिकता की त्रिवेणी रामाश्रय परिसर मक्सी रोड़, बिलावली में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी विशाल रावण दहन के साथ विजयादशमी पर्व मनाया जाएगा। असत्य पर सत्य की विजय का पर्व विजयादशमी (दशहरा) पर 12 अक्टूबर, शनिवार को रात्रि 8 बजे प्रभु श्री राम जी की महाआरती पश्चात रंगारंग आतिशबाजी की जाकर असत्य के प्रतीक रावण के 51 फिट ऊँचे पुतले का दहन किया जाएगा। सभी धर्मप्रेमी जनता अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील रामाश्रय ट्रस्ट के संस्थापक रमेश कुमार जीतमल अग्रवाल ने की है।

महाराष्ट्र के बिल्डर का शव खरगोन के जंगल में मिला

ड्राइवर को 15 लाख लेकर ओंकारेश्वर बुलाया था, उसी पर हत्या का संदेह

खंडवा/खरगोन (नप्र)। महाराष्ट्र पुलिस एक हफ्ते से औरंगाबाद के एक नामी बिल्डर की तलाश कर रही थी। दो दिन पहले वहां की पुलिस मोबाइल की लोकेशन के आधार पर खंडवा पहुंची और सर्चिंग की। बुधवार सुबह बिल्डर की अधजली लाश खरगोन जिले में सनावद-भीकनगांव रोड पर घोड़वा के जंगल में मिली। पुलिस को आशंका है कि बिल्डर की हत्या कर उसे जलाया गया है। खरगोन पुलिस ने बिल्डर के ड्राइवर को कस्टडी में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

मृतक की शिनाख्त संभाजीनगर के ग्राम कमलापुर निवासी किशोर बाबूराव लोहकरे (45) के रूप में की गई है। जो क्षेत्र के नामी बिल्डर हैं, उनके रिश्तेदार रोहित परोड़कर के मुताबिक, किशोर 26 सितंबर को मुंबई से बस पकड़कर ओंकारेश्वर पहुंचे थे। जहां होटल श्रीनाथ में रुके। उसी दिन उन्होंने घर से अपनी कार लेकर ड्राइवर जावेद को ओंकारेश्वर बुलाया था।

ड्राइवर से कहा था कि 15 लाख रूपए भी साथ लेकर आना। ड्राइवर पैसे लेकर ओंकारेश्वर पहुंचा और अगले दिन 27 सितंबर को बिल्डर ने होटल से चेक आउट कर दिया। वे घर जाने के लिए रवाना हुए लेकिन 28 सितंबर को ड्राइवर अकेला घर पहुंचा। उसने बताया कि सेठ कोलकाता के लिए निकल गए हैं। उन्हें फोन किया तो मोबाइल स्विच ऑफ आया। 2 अक्टूबर को पुलिस से शिकायत की। मोबाइल की आखिरी लोकेशन खंडवा के देशगांव स्थित ज्योति पेट्रोल पंप की मिली।

आत्मरक्षा के गुर सीखने से उद्यमिता तक का सफर

विदिशा (निप्र)। वर्षा मेहर जो कि पर्यटन स्थल हलाली डेम के नजदीक ग्राम भोरिया काजी की निवासी है।अपनी स्नातकोत्तर की शिक्षा हेतु विदिशा में किराये से घर लेकर रह रही थी। वर्षा के पिताजी श्री कमल सिंह मेहर मजदूरी करके अपने घर का पालन पोषण करते है। मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड एवं समर्थ संस्था के द्वारा शासकीय कन्या महाविद्यालय में 300 बालिकाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया था जिसके दौरान आत्मरक्षा प्रशिक्षण बालिकाओं को समर्थ संस्था द्वारा विभिन्न कौशलो के बारे में बताया गया एक दिन परियोजना समन्वय सुमित राय को वर्षा ने फोन करके बताया की अपने घर की आर्थिक स्थिति ठीक ना होने के कारण अपनी कॉलेज की फीस जमा करने में असमर्थ हूं सर में पेट्रोल पंप पर जॉब करने के लिए तैयार हूं जिससे में पेट्रोल पंप पर जॉब

करके अपनी पढ़ाई को आगे रखना चाहती हूं । सुमित राय ने पेट्रोल पंप के साथ बेकरी प्रशिक्षण के बारे में भी बताया वर्षा ने अपनी रुचि बेकरी प्रशिक्षण लेने में रखी 45 दिन का बेकरी प्रशिक्षण लेने के बाद वर्षा ने कुछ दिन अपने घर से ही ऑर्डर पर काम किया और ऑर्डर से आमदनी ना होने से थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा फिर एक दिन परियोजना समन्वय सुमित राय ने शासकीय कन्या महाविद्यालय से आए लेटर में कैटीन के लिए आवेदन की जानकारी वर्षा मेंहर को दी वर्षा अपने सारे दस्तावेज के साथ समर्थ संस्था द्वारा प्रशिक्षण के दौरान मिलने वाले सर्टिफिकेट को भी अपने दस्तावेज में शामिल किया दस्तावेज सत्यापन पूर्ण होने के बाद एक दिन वर्षा मैहर को इंटरव्यू के लिए बुलाया जिसमें कि वर्षा ने अपना अनुभव शेयर करते हुए सारी जानकारी अपनी सजा की बेकरी प्रशिक्षण प्रमाण पत्र एवं संस्था के सहयोग से शासकीय महाविद्यालय परिसर में वर्षा को कैंटीन के लिए चुना गया। जिससे वर्षा महाविद्यालय परिसर में कैंटीन चला रही है वर्षा कैंटीन चला कर बहुत खुश है वर्षा के कहना है की वह रोज का 600 से 800 रूपी प्रतिदिन का कमा लेती है ।महाविद्यालय में परीक्षा के समय 1000 से 1200 प्रतिदिन कमा लेती है वर्षा ने कैंटीन चला कर अपने घर की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है और अपनी पढ़ाई को भी आगे कर पा रही है वर्षा अब महिलाओ और बालिकाओं को परियोजना से जोड़ने में सहयोग प्रधान कर रही है साथ में आने वाली पर्यटक महिलाओं बालिकाओं से सहजता सरलता से बात करती है और आस पास के पर्यटन स्थलो के बारे में भी जानकारी देती है।

डेंगू के आज 94 सेम्पल लिए गए

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में मलेरिया विभाग के द्वारा डेंगू नियंत्रण पर विशेष कार्य किए जा रहे हैं। जिला मलेरिया अधिकारी के नेतृत्व में कार्यालय की काम्बेट टीम द्वारा आज आठ अक्टूबर को डेंगू की प्रतिबंधात्मक कार्यवाही विदिशा शहर के मुगलटोला, आज्ञाराम कालोनी, करैयाखेड़ा, आचार्य कालोनी, पीतलमील, पानबाग, काछीकुआ, बक्सरिया, बरईपुरा एवं ब्लॉक सिरोंज वार्ड क्र0-04, पीपलखेड़ा का ग्राम रूसल्ला, त्योंदा के ग्राम अनबई में 587 घरों में लार्वा सर्वे किया गया। 30 घरों में लार्वा पाया गया। टीम के द्वारा लार्वा विनिष्ठिकरण की कार्यवाही की गई। उपरोक्त गतिविधि के अंतर्गत कीटनाशक दवा का छिड़काव फॉगिंग कार्य किया गया तथा डेंगू से बचाव संबंधी स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से जनसमुदाय को बताया गया कि वह अपने घर एवं घर के आस-पास में पानी एकत्रित न होने दे टायर, गमले, कूलर, पानी टंकी की नित्य सफाई करे तथा मच्छरदानी का उपयोग करे व फुल अस्तीन के कपड़े पहने व मच्छर पनपने न दे।

नगरपालिका विदिशा के कचरा वाहन में आडियो संदेश,पोस्टर के माध्यम से डेंगू की रोकथाम हेतु प्रचार प्रसार किया गया।

आज प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार डेंगू के 94 सेम्पल लिये गये जिसमें 13 मरीज डेंगू पॉजिटिव पाये गये।

शक्ति अभिनंदन अभियान के तहत मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी चर्चा की गई

हरदा (निप्र)। राज्य शासन द्वारा महिला नेतृत्व आधारित विकास, महिला सशक्तिकरण एवं महिला सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर केन्द्रित विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का निरंतर क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस कड़ी में महिला एवं बालिका सशक्तिकरण के प्रति जन-जागरूकता लाने के उद्देश्य से सम्पूर्ण प्रदेश में 2 से 11 अक्टूबर तक 'शक्ति अभिनंदन अभियान' आयोजित किया जा रहा है। इसी क्रम में शक्ति अभिनंदन कार्यक्रम के तहत मंगलवार को आंगनबाड़ी केंद्र सुलतानपुर में महिलाओं व बालिकाओं से मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के संबंध में चर्चा की गई। इस दौरान कृषि विज्ञान अधिकारी ने पोषण व महिला सुरक्षा के संबंध में महिलाओं को जानकारी दी।

मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय कृषि मंत्री ने सलकनपुर के विजयासन देवी धाम पहुंचकर की पूजा-अर्चना

निर्माणाधीन देवी लोक का लिया जायजा एवं मॉडल स्वरूप का किया अवलोकन

सीहोर (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव एवं केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सलकनपुर स्थित विजयासन देवी धाम पहुंचकर पूजा-अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की। मुख्यमंत्री डॉ यादव एवं केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने पूरे विधि विधान से देवी धाम में पूजा-अर्चना के उपरांत माता जी को पुष्प अर्पित कर परिक्रमा की। इस दौरान राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महेश उपाध्याय सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

देवी लोक मॉडल का किया अवलोकन

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव एवं केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सलकनपुर में देवी लोक के निर्माण कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने यहां बन रहे देवी लोक के मॉडल स्वरूप का अवलोकन कर किये जा रहे कार्यों के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। सलकनपुर में देवीलोक का निर्माण कराया जा रहा है। देवी लोक में देवी जी के नौ रूपों को आकर्षक रूप में प्रदर्शित किया जाएगा। यहां आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए अनेक निर्माण एवं विकास के कार्य किए जा रहे हैं। देवीलोक के निर्माण के पश्चात धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। इसके साथ ही इस क्षेत्र में पर्यटन पर आधारित आर्थिक गतिविधियों का भी विस्तार होगा।

जनसुनवाई कार्यक्रम में 148 आवेदन प्राप्त हुए

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह के द्वारा आहूत साप्ताहिक जनसुनवाई कार्यक्रम में अधिकांश आवेदनों का निराकरण हो रहा है। कलेक्टर स्वंय तमाम आवेदनों के निराकरणो की विभागवार पृथक-पृथक समीक्षा कर रहे है। जिसमें विगत जनसुनवाई के लंबित आवेदनों पर निराकरण की अद्यतन स्थिति से अधिकारी अवगत करा रहे हैं। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह के द्वारा आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम में खण्ड स्तरीय अधिकारी भी सीधे वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से जुडे रहते है

और आवेदको के आवेदनों से अवगत होकर निराकरण की पहल कर रहे है। कलेक्टर श्री सिंह के द्वारा एक अक्टूबर को आयोजित की गई जनसुनवाई कार्यक्रम में 148 आवेदकों ने अपने आवेदन प्रस्तुत कर व्यक्तिगत और सार्वजनिक समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित कराया है। कलेक्टर श्री सिंह के द्वारा मौके पर 84 आवेदनों का निराकरण किया गया है। कलेक्ट्रेट के भूतल कक्ष में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम में अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर, संयुक्त कलेक्टर, तहसीलदार समेत विभिन्न विभागों के जिलाधिकारी मौजूद रहे। कलेक्टर श्री सिंह ने जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों में से लंबित आवेदनों पर समय सीमा में निराकरण कर जन आकांक्षा पोर्टल पर जानकारियां दर्ज कराने के निर्देश दिए है।

1400 दिन से अन्न का त्याग कर नर्मदा जल पर जीवित रहने वाले दादा गुरू महाराज पहुंचे माता टेकरी, किए दर्शन

देवास। विगत सात वर्ष से केवल नर्मदा जल पर आश्रित रहने दादा गुरू महाराज शारदीय नवरात्रि महापर्व के दौरान माता टेकरी पर दर्शन करने पहुंचे। राष्ट्रीय हिंदू युवा वाहिनी गौ रक्षा प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि सांगते भैया ने बताया कि दादा गुरू महाराज बुधवार शाम को देवास पहुंचे। जहां उन्होंने माँ तुलजा भवानी-माँ चामुण्डा के दर्शन किए। तत्पश्चात वे ओंकारेश्वर के लिए रवाना हो गए। गुरू महाराज ने उनके शिष्यों को आशीर्वाद भी दिया। श्री सांगते ने बताया कि जीवनदायिनी कहे जाने वाली नर्मदा नदी के संरक्षण संवर्धन के लिए एक तपस्वी दादा गुरु पिछले चार सालों से केवल नर्मदा जल पर आश्रित है। 1400 दिन से उन्होंने अन्न का एक दाना भी ग्रहण नहीं किया है। दिन भर में केवल 1 गिलास नर्मदा जल ही पीते हैं। इसके बाद भी ना तो उन्हें कमजोरी आई है ना थकावट होती है। बल्कि दिन पर दिन और ऊर्जावान होते जा रहे हैं। वाणी में ओज चेहरे पर तेज भी बढ़ता जा रहा है। नदियों के संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करने के लिए निरंतर यात्राएं कर रहे हैं।

मां नर्मदा केवल नदी नहीं है वे भगवती हैं- दादा गुरू महाराज- नर्मदा की जल पर जीवित रहने वाले दादा गुरु पिछले 18 वर्षों से नर्मदा उत्थान के लिए काम कर रहे हैं। वनों को बचाने के लिए काम कर रहे हैं। गायों कि संवर्धन के लिए काम कर रहे हैं। गुरू महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि मिट्टी को बचाने के लिए काम करना होगा, लोग अगर मिट्टी से जुड़े रहेंगे, प्रकृति से जुड़े रहेंगे तो हमारी पीढियां सुरक्षित होगी। नहीं तो गांव में नर्मदा का जल टैंकर से और गंगा का जल ट्रेन से मंगवाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मां नर्मदा केवल नदी नहीं है वे भगवती हैं, शक्ति हैं, उनके पथ पर चलने से लोग साधक हो जाते हैं। उनके किनारे पर बैठने से उपासक हो जाती है। मां नर्मदा की उन पर ऐसी कृपा हुई है कि उन्होंने अन्न का त्याग कर दिया है। जिस तरह लोग अन्न को खाकर ऊर्जा लेते हैं इस तरह वह प्रकृति और मिट्टी से जुडक़र ऊर्जा प्राप्त करते हैं। इस दौरान गुरु महाराज की सेवा में पार्षद रुपेश वर्मा, अभिषेक बच्चन, सतीश जी भाई साहब, लक्की सांगते आदि भक्तजन उपस्थित थे।

एक प्रकरण में नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री दीपक कुमार शुक्ला के द्वारा फरार आरोपियों के एक प्रकरण में सूचना देने वालो को एक-एक हजार रूपए की नगद राशि देने की उद्घोषणा की है। सूचनाकर्ता चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा। पुलिस अधीक्षक श्री शुक्ला के द्वारा जारी इनाम उदघोषणा आदेश में उल्लेख है कि थाना कोतवाली में दर्ज अपराध क्रमांक 613/24 के फरार आरोपी शोहेल, अब्दुल्ला, अली नायक, सद्दू, बिट्टू एवं अन्य साथी सर्व निवासीगण विदिशा की सूचना देने वाले को एक-एक हजार रूपए की नगद राशि इनाम देने की घोषणा की है।

मां दुर्गा विसर्जन चल समारोह पर नेशनल यूनिटी ग्रुप का भंडारा 13 को

देवास। मां नव दुर्गा ऐतिहासिक विसर्जन चल समारोह के शुभ अवसर पर सामाजिक संस्था नेशनल यूनिटी ग्रुप द्वारा विशाल भंडारा आयोजित किया जाएगा। संस्था संस्थापक अनिल सिंह ठाकुर ने बताया कि मां चामुण्डा देवी पावन नगरी में निकलने वाले ऐतिहासिक मां दुर्गा विसर्जन चल समारोह पर 13 अक्टूबर, रविवार को दोपहर 2 बजे सामाजिक संस्था नेशनल यूनिटी ग्रुप द्वारा नेशनल चौराहा तुकोगंज रोड पर मां चामुण्डा देवी की महाआरती के पश्चात मां की महाप्रसादी देशी घी हलवा, नमकीन पूड़ी का विशाल भंडारा आयोजित किया जाएगा। ग्रुप सयोजक सुनील सिंह ठाकुर, हटे सिंह दरबार, पूर्व पार्षद राजेश राठौर, रामेश्वर कारपेंटर,अनिल सिंह बैंस,जितेंद्र मारू, अभिषेक सोनी, जय सिंह, सत्यराज सिंह ठाकुर, अखिलेश सिंह तवर ,शुभम शास्त्री, लक्ष्मण सिंह ठाकुर, बब्बी ठाकुर, रफीक पठान, सीताराम योगी,सुभाष वर्मा, जगदीश माली, सुनील वर्मा, रवि ठाकुर, मनोहर पटेल, अनूप दुबे आदि ने अधिक से अधिक संख्या में श्रद्धालुजनों से महाप्रसादि का लाभ लेने की अपील की है।

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

कांग्रेस के लिए बड़ा सबक है हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के नतीजे

हरियाणा के चुनाव नतीजों में भारतीय जनता पार्टी की बढ़त के बाद सोशल मीडिया पर जलेबी वाली कई पोस्ट तेजी से वायरल होने लगी। जलेबी की इन पोस्ट के जरिए भाजपा समर्थक लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी का उपहास उड़ा रहे थे। जलेबी के कारखाने को लेकर राहुल गांधी द्वारा दिए गए बयान के बाद भी उन्हें काफी ट्रोल किया गया था। लेकिन, एग्जिट पोल आने के बाद जलेबी की पोस्ट नेपथ्य में चली गई थी और एक विचित्र से खामोशी भाजपा के भीतर महसूस की जा रही थी। इस खामोशी के बीच हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा था कि भाजपा चुनाव जीत रही है। डाक मतपत्रों में भाजपा के पिछड़ने के बाद उनका आत्म विश्वास कुछ कमजोर दिखा था और उन्होंने कह दिया कि भाजपा हारी तो उसकी नैतिक जिम्मेदारी मेरी बनती है। लेकिन,जब इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन खुली तो लोगों की आंखें खुली की खुली रह गईं। हरियाणा में 52 साल के बाद कोई राजनीतिक दल लगातार तीसरी बार सरकार बनाने जा रहा है।

हरियाणा में ऐसा क्या हुआ कि कांग्रेस मैदान में नतीजों को अपने पक्ष में नहीं कर पाई? क्या उसका जीत को लेकर अति विश्वास ले डूबा? या फिर जिन जाट-दलित वोटों के समीकरण को वो अपने पक्ष में मान रही थी, उसमें भाजपा ने सेंध लगा दी? कांग्रेस के मौजूदा नेतृत्व खासकर राहुल गांधी को यह समझना होगा कि भारतीय जनता पार्टी पूरे पांच साल चुनाव की तैयारी करती है। उसकी तैयारी पोलिंग स्टेशन लेवल की होती है। कांग्रेस के नेता चुनाव के समय अपनों को टिकट दिलाते समय ही सक्रिय दिखाई देते हैं। कांग्रेस के पास ऐसा तंत्र और नेतृत्व नहीं है,जिसके जरिए वह सत्ता विरोधी वोटों को मजबूती के साथ अपनी झोली में डाल सके। राहुल गांधी के लिए यह नतीजे आत्म चिंतन करने वाले नतीजे हैं। उन्हें अपने भाषणों में जमीनी सोच को लाना होगा। अन्यथा कांग्रेस अपनी बची खुची जमीन भी गंवा देगी। राहुल गांधी के लिए आत्म चिंतन करना आसान काम नहीं है। वे जम्मू-कश्मीर में भारतीय जनता पार्टी की सरकार न बनने पर खुश होकर चिंतन का एक और मौका गंवा देंगे। जम्मू-कश्मीर के नतीजों में कांग्रेस तीसरे नंबर की पार्टी है। नंबर दो पर वहां भारतीय जनता पार्टी है। फारूख अब्दुल्ला की नेशनल कॉन्फ्रेंस को सबसे ज्यादा सीटें मिली है। इस जीत की बड़ी वजह उमर अब्दुल्ला का चेहरा माना जा रहा है। घाटी के वोटर ने उमर अब्दुल्ला को मुख्यमंत्री बनाने के लिए वोट किया है। नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस दोनों मिलकर यहां सरकार बनाएंगे? कुछ दिनों बाद यहां वही स्थिति देखने को मिलेगी जो दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार के साथ देखी जा रही है। दिल्ली राज्य की सरकार को अस्थिर करने के लगातार प्रयास पूरे देश ने देखे हैं। इस तरह के प्रयास घाटी में भी होंगे। लेकिन,घाटी की सरकार के लिए अवाम की अपेक्षाओं और अपने चुनावी वादों को पूरा करना चुनौती भरा होगा। जम्मू-कश्मीर में दस साल बाद चुनी हुई सरकार बनेगी। इन दस सालों में घाटी में काफी कुछ बदल गया है। संविधान के अनुच्छेद 370 के जरिए मिला विशेष दर्जा समाप्त हो चुका है। अन्य कई कानूनी बदलाव भी हुए हैं।

हरियाणा में भाजपा के लगातार तीसरी बार सरकार बनाने के बाद कांग्रेस के लिए खुद को बचाना बड़ी चुनौती होगा। हरियाणा विधानसभा चुनाव के परिणामों को लेकर दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की प्रतिक्रिया में ही कांग्रेस की हार का कारण छुपा हुआ है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि -हरियाणा चुनाव का बड़ा सबक यह है कि चुनावों में ओवर कॉन्फिडेंट न हों। उन्होंने कहा कि किसी चुनाव को हल्के में नहीं लेना चाहिए। हर चुनाव और हर सीट मुश्किल होती है। कांग्रेस को केजरीवाल के इस अनुभव से भी सीखने की जरूरत है। उनकी पार्टी कांग्रेस जैसी पुरानी पार्टी नहीं है। नई पार्टी होने के बाद भी उन्होंने राष्ट्रीय राजनीति में अपनी महत्वपूर्ण जगह बना ली है। केजरीवाल की प्राथमिकता दिल्ली की सरकार बचाने की है। इसके लिए उन्हें भी वही करना होगा जो भाजपा करती है। अपने कार्यकर्ता के मनोबल को बनाए रखने का काम।

हरियाणा की जीत से भाजपा कार्यकर्ता का उत्साह बढ़ना स्वाभाविक है। लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को अपने नारे के अनुसार चारी सौ सीटें हासिल नहीं हुई थीं। इसके कारण विपक्ष यह माहौल बना रहा था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे का जादू अब खत्म हो रहा है। कांग्रेस और विपक्ष मोदी के तिलिस्म और भाजपा की रणनीति का ठीक से आकलन नहीं कर पाया। नतीजों के बाद यह भी स्थापित हुआ है कि राहुल गांधी के ईद गिर्द जो कोटरी जमा हो गई है,उसे मैदानी रणनीति का ककहरा भी नहीं आता। नेतृत्व भी जमीनी सच्चाई को देख नहीं पाता। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के बाद महाराष्ट्र और झारखंड में विधानसभा के चुनाव होना है। इन दोनों राज्यों के चुनाव में कांग्रेस अपने गठबंधन के साथियों से मोल-भाव की स्थिति में नहीं रहेगी। महाराष्ट्र में उसे शरद पवार और उधव ठाकरे को आगे रखकर चुनाव लड़ना होगा। उनके लिए ज्यादा सीटें छोड़ना होगीं।

हालांकि यह निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी कि इन नतीजों ने राजनीतिक धारा को पलट दिया है। लेकिन इन्हीं नतीजों में हरियाणा के परिणाम का राष्ट्रीय महत्व निहित है, जहां भाजपा लगातार तीसरी बार सत्ता में लौट रही है। जम्मू और कश्मीर के परिणाम भाजपा की चुनावी विफलता को दर्शाते हैं। चंडीगढ़ में सत्ता की कुर्सी पर काबिज होने में भाजपा की सफलता महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे पार्टी को देश के एक प्रमुख व्यापारिक और कृषि क्षेत्र की बागडोर मिल गई है। हरियाणा में जीत भाजपा के लिए इसलिए भी अहम है क्योंकि यह एक ऐसा प्रमुख कृषि और व्यावसायिक राज्य है, जो राजधानी दिल्ली के करीब स्थित है। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि इस जीत ने पार्टी को अपनी आंतरिक एकता और वैचारिक मजबूती को बनाए रखने में मदद की है। इस चुनावी सफलता ने यह साबित किया कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा अब भी देश की सबसे मजबूत चुनावी मशीनरी बनी हुई है। इससे पार्टी को संघ परिवार की वैचारिक एकता को मजबूत करने में मदद मिलेगी, जिसमें लोकसभा चुनाव के दौरान दरारें दिखी थीं। इससे भाजपा के प्रबंधकों को यह भरोसा दिलाने में मदद मिलेगी कि राज्य में गैर-प्रमुख समुदायों को एकजुट करने का उसका राजनीतिक फॉर्मूला अभी भी काम कर रहा है। क्योंकि हरियाणा में गैर-जाट समुदायों का समर्थन भाजपा के पक्ष में गया, जो राज्य के राजनीतिक समीकरणों में अहम साबित हुआ। इस जीत ने पार्टी को यह विश्वास दिलाया कि वह राज्य स्तर पर भी सुधार करके सत्ता में वापसी कर सकती है, भले ही उसे राष्ट्रीय चुनावों में कुछ झटके लगे हों। यह मोदी और अमित शाह दोनों को पार्टी पर अपना सिक्का जमाए रखने की क्षमता देता है, जिसमें अगला पार्टी प्रमुख चुनना और अपनी मर्जी के मुताबिक राजनीतिक निर्णय लेना शामिल है, जैसा कि उन्होंने इस साल की शुरुआत में मनोहर लाल खट्टर को हटाते समय किया था। यकीनन, हरियाणा में हार होती तो एक झटके से भी मोदी और शाह का दबदबा कम नहीं होता, लेकिन इससे पार्टी के भीतर उन आवाजों को बढ़ावा मिल जाता जो नेतृत्व के प्रति विरोधात्मक माहौल बनाने के लिए और अधिक झटकों का इंतजार कर रहे हैं। नतीजों से भाजपा को यह भरोसा मिलता है कि महाराष्ट्र में लोकसभा चुनावों में एक बड़े झटके के बावजूद, पार्टी में अभी भी सुधार करने, राज्य में एक मजबूत उपस्थिति दर्ज करने और शायद सरकार बनाने की क्षमता है।

भूपिंदर सिंह हुड्डा जैसे अनुभवी नेताओं के बावजूद, कांग्रेस हरियाणा में अपने पारंपरिक जाट-दलित आधार को बनाए रखने में असफल रही। यह एक ऐसा राज्य था जहाँ मौजूदा सरकार दस साल से सत्ता में थी और बेहद अलोकप्रिय दिख रही थी। यहां एक ऐसा सामाजिक परिदृश्य था जहां किसानों ने सड़कों पर सत्ताधारी दल के प्रति अपनी नाराजगी व्यक्त की थी। पहलवानों ने विरोध की सबसे शक्तिशाली अभिव्यक्तियों में से एक के माध्यम से अपना गुस्सा व्यक्त किया था। राष्ट्रीय खेल नायकों ने अपनी राजनीतिक प्राथमिकताएं स्पष्ट की थीं। सशस्त्र बलों में शामिल होने की आकांक्षा रखने वाले युवाओं में यहां गुस्सा देखने को मिला था। इन सब के बावजूद हुड्डा की कुमारी शैलजा के साथ प्रतिद्वंद्विता ने पार्टी की एकता को कमजोर कर दिया, कार्यकर्ताओं में फूट डाल दी और जाट-दलित आधार को जमीन पर विभाजित कर दिया। पार्टी चुनिंदा समुदायों से आगे अपनी अपील का विस्तार करने में सक्षम नहीं थी, और न ही उच्च जातियों या छोटे पिछड़े समुदायों के विषम समूह तक पहुंच पाई। आरक्षण पर उसी भय फैलाने वाली रणनीति का उपयोग करने में सक्षम नहीं हो पाई जो राष्ट्रीय चुनावों के दौरान कर पाई थी।

कश्मीर में लोकतांत्रिक निर्णय लेने की हर कवायद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के मामले को मजबूत करती है। एक, तथ्य यह भी है कि अनुच्छेद 370 के हटाए जाने के बाद हुए इन चुनावों में, कश्मीर में भाजपा को एक भी सीट नहीं मिली, जो यह दर्शाता है कि घाटी में पार्टी की स्वीकार्यता अभी भी सीमित है। फिर भी, जम्मू क्षेत्र में पार्टी को अधिक समर्थन मिला, जो जम्मू और कश्मीर के बीच राजनीतिक विभाजन को और अधिक स्पष्ट करता है। तथ्य यह भी है कि नेशनल कॉन्फ्रेंस जिसने संवैधानिक परिवर्तनों का विरोध किया और राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग की, वह तुरंत सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी को 2015 में भाजपा के साथ गठबंधन के कारण पूरी तरह से खारिज कर दिया गया। यह दर्शाता है कि केंद्र को इस चुनाव के राजनीतिक जनादेश को अधिक नहीं समझना चाहिए। चुनाव एक बार फिर दिखाता है कि जम्मू और कश्मीर के बीच एक राजनीतिक विभाजन बना हुआ है।

उज्जैन में भूगर्भीय हलचल से दहशत

जमीन के अंदर से लगातार निकल रहा धुंआ

उज्जैन (नप्र)। महाकाल की नगरी में एक अजीब घटना से दहशत है। शहर के हिस्से में भूगर्भीय हलचल हो रही है। इसकी वजह से जमीन के अंदर से धुआं निकल रहा है। पिछले चार-पांच दिनों से ऐसा हो रहा है। इसके बाद लोगों में डर है। अपने स्तर पर लोगों ने पड़ताल की लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया है। यह पूरा मामला अंकपात मार्ग स्थित विष्णु वाटिका का है।

विष्णु सागर स्थित पेड़ों से निकल रहा धुआं

यह धुआं विष्णु वाटिका क्षेत्र में विष्णु सागर के पास साफ देखा जा सकता है। करीब 3 से 4 जगह पर धुआं निकल रहा है, जिसकी वजह से करीब 4 पेड़ भी मुरझा गए हैं। इस घटना के कारण जमीन भी गरम हो जा रही है। इसे वहां मौजूद लोग महसूस कर रहे हैं। धुआं निकलने वाली जगह पर पानी भी डाला गया फिर भी धुआं निकलना बंद नहीं हुआ।

न बिजली के तार और न गैस पाइपलाइन

प्रत्यक्षदर्शी का कहना है कि इस क्षेत्र में न तो बिजली के तार हैं, न ही गैस पाइपलाइन हैं। बावजूद इसके धुआं का निकलना आश्चर्य की बात है। वहीं, जिस जगह से धुआं निकल रहा है, वहां पानी से भरा हुआ तालाब भी है, जिसकी वजह से जमीन नम है। वहीं, जानकार बता रहे हैं कि यह एक प्रकार की भूगर्भीय घटना हो सकती है। जिसका मुख्य कारण चट्टानों की रगड़ से अभ्रक नामक खनिज के कारण धुंआ निकल रहा है। हालांकि जब तक जांच नहीं हो जाती, तब तक स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकेगी।

पुलिस की टीम भी पहुंची

वहीं, लोगों में डर को देखते हुए पुलिस की टीम भी मौके पर पहुंची। साथ ही लोगों को घटना स्थल से दूर रहने की हिदायत दी है।

गौरतलब है कि उज्जैन में पहले भी ऐसी घटना घट चुकी है। शिप्रा नदी में तेज आवाज की साथ पानी ऊपर की ओर जाती थी। हालांकि कुछ दिन बाद खुद ही बंद हो गया था।

रायसेन में बस ने बाइक सवार पिता-दो बेटों को उड़ाया,तीनों की मौत

दमोह में ट्रक ने ऑटो सवार भजन मंडली को रौंदा, 2 की गई जान

रायसेन/दमोह (नप्र)। मध्यप्रदेश में बुधवार रात को दो अलग-अलग सड़क हादसों में 5 लोगों की मौत हो गई। रायसेन में बस ने बाइक सवार परिवार को टक्कर मार दी। इसमें 3 लोगों की मौत हो गई। जबकि दमोह में ट्रक और ऑटो की भिड़ंत में 2 लोगों की जान चली गई। जबकि 7 लोग घायल हो गए। ऑटो में सवार लोग देवी पंडाल में भजन कार्यक्रम की प्रस्तुति देने जा रहे थे।

रायसेन में उदयपुरा रोड पर बुधवार रात करीब 8 बजे शक्ति ट्रैवल्स की बस ने बाइक को टक्कर मार दी। इस हादसे में बाइक सवार पिता और दो बेटों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि बेटी गंभीर रूप से घायल हो गई। जिसे इलाज के लिए भोपाल रेफर किया गया है।

जानकारी के मुताबिक विजनहाई गांव के रहने वाले संतोष शर्मा (45) अपने दो बेटे ओम शर्मा (7), अंश शर्मा (5) और बेटी प्रियांशी शर्मा (9) के साथ बाजार से घर लौट रहे थे। तभी राजमार्ग के पास हादसा हो गया। टक्कर इतनी जोरदार थी कि तीनों उछल कर रोड पर दूर-दूर जा गिरे। बस विदिशा से उदयपुरा की ओर जा रही थी। उदयपुरा थाना प्रभारी वीएस सेंगर ने बताया कि बस को जब्त कर लिया गया है। ड्राइवर और कंडक्टर मौके से फरार हो गए। दमोह में ट्रक ने ऑटो को टक्कर मार दी। हादसे में 2 लोगों की मौत हो गई, जबकि 7 लोग घायल हो गए। इनमें से गंभीर रूप से घायल 2 लोगों को जबलपुर रेफर किया गया है। वहीं, 5 लोग जिला अस्पताल में भर्ती हैं। हादसा बुधवार रात करीब 8:30 बजे बटियागढ़ मार्ग पर चैनपुरा गांव के पास हुआ। हादसे के बाद ट्रक चालक फरार हो गया। घटना की सूचना पर कलेक्टर सुधीर कोचर और एसपी श्रुत कीर्ति सोमवंशी मौके पर पहुंच गए। दमोह एसडीएम आरएल बागरी ने बताया कि घायलों के बेहतर इलाज की व्यवस्था के निर्देश दिए गए हैं।

भजन मंडली में प्रस्तुति देने जा रहे थे ऑटो सवार- हादसे में घायल बछिया खिरिया गांव के रहने वाले वीरेंद्र सिंह ने बताया कि सभी 9 लोग ऑटो से राय चौराहे पर देवी पंडाल में भजन कार्यक्रम की प्रस्तुति देने जा रहे थे। रास्ते में चैनपुरा के पास दमोह की ओर से जा रहे ट्रक ने ऑटो को टक्कर मार दी।

उज्जैन में दो दिन मनाया जाएगा अष्टमी पर्व

शुक्रवार दोपहर 12.22 तक रहेगी अष्टमी तिथि, कल होगी नगर पूजा

उज्जैन (नप्र)। शारदीय नवरात्रि पर्व के अंतिम दो दिन देवी भगवती और कुल देवी का पूजन घरों में किया जाता है। इस बार की नवरात्रि पूरे नौ दिन की है, लेकिन अष्टमी और नवमी तिथि का पूजन एक ही दिन होगा। अष्टमी तिथि गुरुवार को दोपहर 12:30 से प्रारंभ होकर अगले दिन शुक्रवार को दोपहर 12:22 बजे तक रहेगी। इसके बाद नवमी तिथि लगेगी। महा-अष्टमी पूजन के लिए सभी घरों में अपनी कुल परंपरा अनुसार सुबह या संध्या के समय पूजन का महत्व है। वहीं देवी मंदिरों में भी महा-अष्टमी और नवमी पर पूजन अनुष्ठान किए जाएंगे।

पं.अमर डिब्बावाला ने बताया कि सनातन की शक्ति का पर्व अश्विन शुक्ल प्रतिपदा से अश्विन शुक्ल नवमी तक माना जाता है। आदि शक्ति माता जगदंबा का जिनके कई नाम है, इनकी साधना का उत्सव पर्व काल अश्विन नवरात्रि माना जाता है। इस बार नवरात्र पूरे 9 दिन के हैं। हालांकि अष्टमी और नवमी तिथि का पूजन एक दिन रहेगा। ऐसे में जिन परिवारों में कुल परंपरा के अनुसार सुबह या शाम को पूजन किया जाता है, वे तिथि अनुसार पूजन करते हैं।

जबलपुर में गोवंश से भरे ट्रक को मारी टक्कर,40 मवेशियों की मौत

पुलिस पर तस्करी के आरोप ; विहिप ने किया हंगामा

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर से करीब 45 किलोमीटर दूर खितौला-कटनी हाईवे में सड़क किनारे खड़े ट्रक को पीछे से आ रहे ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में ट्रक में बैठे 40 से अधिक गोवंश की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कुछ गोवंश ने तड़पने के बाद दम तोड़ दिया। घटना की जानकारी मिलते ही खितौला पुलिस मौके पर पहुंची और मृत गोवंश को खितौला से बाहर दफनाने के इंतजाम में लग गई। सड़क दुर्घटना में कई गौवंशों की मौत हो गई है, यह जानकारी जब विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं को लगी तो उन्होंने जमकर हंगामा किया, इस दौरान मृत गोवंशों का अंतिम संस्कार भी करीब दो घंटे तक रुका रहा। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि पुलिस की मिलीभगत से गोवंश की तस्करी हो रही है, जिसका खुलासा सड़क दुर्घटना के बाद सामने आई है।

जानकारी के मुताबिक खितौला-कटनी हाईवे पर एक ट्रक खड़ा था जिससे कि करीब 40 से अधिक गोवंश थे। यह ट्रक कटनी से जबलपुर तरफ जा रहा था। चालक खितौला के पास ट्रक खड़ा करके कहीं चला गया। इसी बीच दोपहर को लगभग 12 बजे कटनी की ओर से ही आ रहा ट्रक गोवंश से भरे ट्रक से टकरा गया। टक्कर इतनी तेज थी कि ट्रक में सवार मवेशी जहां बैठे हुए थे, वहीं पर उनकी मौत हो गई, कुछ मवेशी घायल भी हुए थे, जो कि तड़प-तड़प कर मर गए। टक्कर मारने वाले ट्रक का ड्राइवर भी फंस गया। हादसे की जानकारी मिलते ही खितौला थाना पुलिस मौके पर पहुंची और ट्रक में फंसे चालक को निकाला।

घटना के बाद पुलिस ने दोनों ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया और पशु चिकित्सक को मौके पर बुलाया, जिसके बाद डॉक्टर ने बताया कि सभी गोवंश की मौत हो चुकी है, इसके बाद खितौला से बाहर एक मैदान में डॉक्टर की टीम ने पीएम किया और मृत गोवंश के अंतिम संस्कार के लिए जेसीबी से बड़ा गड्ढा खोदा और दफनाना शुरू कर रहे थे कि विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं को जानकारी लगी तो बड़ी संख्या में वो लोग मौके पर पहुंच गए और हंगामा करना शुरू कर दिया। करीब दो घंटे तक चले प्रदर्शन के दौरान विहिप के कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि पुलिस की मदद से ही गोवंश की तस्करी हो रही है। इतना सुनते ही थाना प्रभारी भड़क गई, जिसके बाद उनकी विहिप के कार्यकर्ताओं से तीखी बहस हुई। जानकारी लगते ही विहिप के कार्यकर्ता मौके पर पहुंचे और जमकर हंगामा किया।

विश्व हिंदू परिषद के जिला मंत्री अर्जुन कुशवाहा ने आरोप लगाया कि पुलिस की मिलीभगत से मवेशियों की तस्करी हो रही है। खितौला-सिहोरा पुलिस तस्करों से पैसा लेकर हाईवे में मवेशियों से भरे वाहनों को निकलवा रही है। भाजपा सिहोरा नगर मंडल अध्यक्ष अंकित तिवारी ने आरोप लगाया है खितौला पुलिस मामले में प्रकरण दर्ज करने की बजाय मामले को दबाने का प्रयास कर रही थी। प्रदर्शनकारियों ने मामले में जांच और दोषी पुलिस अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग की। यह भी चेतावनी दी कि यदि कार्रवाई नहीं होती है, तो उग्र आंदोलन किया जाएगा। मृत गौवंशों के अंतिम संस्कार के लिए मैदान में खोदा गया विशाल गड्ढा। इधर गौवंशों की तस्करी से जुड़े आरोप को लेकर वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने राजपत्रित अधिकारी से जांच करवाने की बात कही है। एएसपी सूर्यकांत शर्मा का कहना है कि जबलपुर-कटनी रोड पर खितौला के पास दो ट्रक की भिड़ंत हुई थी जिसके बाद एक ट्रक के ड्राइवर और कंडक्टर मौके से फरार हो गए है, जबकि एक ट्रक चालक को चोट आई है, जिसे कि इलाज के लिए सिहोरा अस्पताल में भर्ती किया गया है।

मंत्री कृष्णा गौर के बंगले पर पहुंचे किसान, बाहर बैठे

भोपाल के खजूरीकलां में सड़क निर्माण पर सवाल ; अब सीएम से मिलेंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के खजूरीकलां के कई किसान गुरुवार को राज्यमंत्री कृष्णा गौर के लिंक रोड नंबर-1 स्थित बंगले पर पहुंचे। वे गांव में निर्माणाधीन सड़क की चौड़ाई के संबंध में शिकायत करने पहुंचे थे। करीब दो घंटे तक वे बंगले के बाहर बैठे रहे। हालांकि, मंत्री गौर के नहीं मिलने पर वे लौट गए।

किसान कुबैर सिंह राजपूत ने बताया, गांव में इंडियन बैंक से न्यू बायपास तक 80 फीट रोड बन रही है। यह राहगीरों और ग्रामीणों के लिए अच्छी बात है, लेकिन सरकार ने किसानों की जमीन अधिग्रहित की है। उसका मुआवजा नहीं दिया गया है। न ही निर्माण गुणवत्ता वाला है।

8 किसानों के खेत से सड़क डायवर्ट कर दी- कृषक राजपूत ने बताया, खजूरीकलां गांव में 8 किसानों के खेत में सड़क डायवर्ट की गई है। हमने कहा है कि यदि कोई धार्मिक स्थल सड़क निर्माण में आ रहा है तो उसे विस्थापित किया जाए। कुछ धार्मिक हटाए भी गए हैं। अन्य 50 से अधिक किसानों को मुआवजा भी नहीं मिला है।

दो घंटे तक इंतजार किया- किसानों ने मंत्री गौर से मिलने के लिए करीब दो घंटे तक इंतजार किया। मंत्री के नहीं मिलने के बाद वे लौट गए। राजपूत ने बताया, इस मामले को लेकर अब तक कई बार अधिकारी और जनप्रतिनिधियों से शिकायत कर चुके हैं। अब मुख्यमंत्री से मिलकर अपनी बात रखेंगे।